जब तक आप आध्यात्मिक बदलाव नहीं लाते, तब तक शारीरिक परिवर्तन संभव नहीं। – कोरी बुकर

आनंद महिंद्रा की बात एक सीमा तक काम के घंटों बनाम उत्पादकता की बहस को संतुलित दिशा में लाने की कोशिश है, क्योंकि कोई 90 घंटे काम पर जाए, लेकिन गुणवत्तापूर्ण काम न करे, तो उसका क्या मतलब? पर जब बात प्रतिस्पर्धा की हो, या कार्य महत्वपूर्ण हो, तो खुद को झोंकना गलत भी नहीं है।

सही दिशा में हो बहस

ऐसे वक्त में, जब भारत बदलते वैश्विक परिदृश्य में अपनी जगह बनाने की कोशिश कर रहा है, तब देश में काम के घंटों व उत्पादकता पर छिड़ी बहस एक नए मोड़ पर पहुंच गई है। इसकी शुरुआत तब हुई, जब इंफोसिस के सह-संस्थापक नारायण मूर्ति ने कहा था कि देश की उत्पादकता बढ़ाने के लिए युवाओं को हर सप्ताह 70 घंटे काम करना चाहिए, जिस पर एलएंडटी के चेयरमैन एसएन सुब्रमण्यम ने हर हफ्ते नब्बे घंटे काम करने की बात की। लेकिन अब उद्योगपति आनंद महिंद्रा ने यह कहते हुए इस बहस को यू-टर्न दिया है कि काम के घंटे नहीं, बल्कि गुणवत्ता मायने रखती है। यह ध्यान देने योग्य है कि मीडिया, पुलिस और आईटी जैसे कुछ क्षेत्रों में कई बार घंटों को अविरत बगैर अवकाश लिए काम करना पड़ता है। लिहाजा पेशे के साथ काम के घंटों का संबंध तो जाहिर ही है, लेकिन इसका दूसरा संबंध उत्पादकता से भी होता है, जैसा आनंद महिंद्रा कहते हैं। काम और जिंदगी का संतुलन अपनी जगह है, लेकिन कई लोग अगर 90 घंटे भी काम पर जाएं, लेकिन गुणवत्तापूर्ण काम न करें, तो उसका भी कोई मतलब नहीं है। ऐसे में जरूरी है कि इस बहस को सही दिशा में देखा जाए। लेकिन जो नारायण मूर्ति या एसएन सुब्रमण्यम कह रहे हैं, उसके पीछे संकेत यह है कि आपको अपनी प्राथमिकताओं को कैसे केंद्र में लाना चाहिए। जब आपको प्रतिस्पर्धा करनी हो, या कोई बेहद महत्वपूर्ण कार्य करना हो, तब काम के घंटे देखे बगैर अपनी प्रतिभा व श्रम का भरपूर इस्तेमाल करना ही चाहिए। काम और जिंदगी में संतुलन की बहस दरअसल आईटी के काम के बाद उठी है, जिसमें अधिकतर काम प्रोजेक्ट-आधारित होते हैं, जिनमें मेहनत होती है, लेकिन एक बार प्रोजेक्ट पूरा हो जाने पर लंबा अवकाश लेने की सुविधा भी मिलती है। लेकिन यह बात रेखांकित होनी चाहिए कि वैज्ञानिक अपनी खोजों और लेखक अपनी रचनाओं के पूरा होने तक उनमें ही डूबे रहते हैं। संतोष तो कार्य की पूर्णता से होता है। काम को श्रम-घंटों में बांटना तो एक सामान्य बात है। इस हिसाब से नारायण मूर्ति या सुब्रमण्यम जो ज्यादा समय देने की बात कर रहे हैं, उसका मतलब अपना सर्वश्रेष्ठ देने से है। आनंद महिंद्रा की बात एक सीमा तक इस बहस को संतुलित दिशा में लाने की कोशिश लगती है कि मूर्ति ने जो कहा, वह भी सही है और जो सुब्रमण्यम ने कहा, वह भी अपेक्षा के अनुरूप ही है। सवाल तो बस इतना है कि आप अपनी उत्पादकता और क्षमता को सही दिशा में किस तरह से ले जा सकते हैं।

शाश्वत परंपराओं का संगम

कुंभ केवल मेला नहीं, बल्कि मानव कल्याण के लिए धर्म का उदात्त प्रयोग है, जिसमें ज्ञान-विज्ञान के माध्यम से अमृत की खोज करनी है। यह अमृत मानव को देवता बना सकता है। इसी अमृत की लालसा लिए असंख्य श्रद्धालु कुंभ में तीर्थस्नान कर स्वात्म-धन्यता का बोध करते हैं।

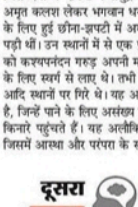

शास्त्री कोसलेन्द्रदास
दर्शनशास्त्र के प्राध्यापक

वैदिक सनातन धर्म के सर्वाधिक प्रतिष्ठित कुंभ पर्व का आरंभ प्रयाग में हो रहा है। जिस प्रकार सनातन धर्म के आरंभ को कोई नहीं जानता, वैसे ही कुंभ के उद्गम और उसके विकास को भी कोई नहीं जानता। यह एक पारंपरिक धार्मिक व सांस्कृतिक प्रक्रिया है, जो निश्चित कालावधि में संपन्न होती है। कुछ विद्वान इसकी उत्पत्ति वेदों से मानते हैं। धर्मशास्त्रकारों का कहना है कि यह सुर-असुरों द्वारा किए गए समुद्र मंथन से शुरू हुआ। वहीं, संत साहित्य के विद्वानों के अनुसार, शांकर संप्रदाय के संन्यासियों और रामानंद संप्रदाय के बैरागी साधुओं ने आध्यात्मिक ऊर्जा देकर इसके बृहत स्वरूप को विकसित किया। पर आम लोग इसे धार्मिक मेले से अधिक नहीं मानते।

आचार्यों, साधु-संतों और विद्वानों को समझाना होगा कि कुंभ केवल मेला नहीं, बल्कि मानव कल्याण के लिए धर्म का उदात्त प्रयोग है, जिसमें ज्ञान-विज्ञान के माध्यम से अमृत की खोज करनी है।

यह अमृत समाज को अमरता दे सकता है। मानव को देवता बना सकता है। इसी अमृत की लालसा लिए असंख्य श्रद्धालु कुंभ में तीर्थस्नान कर स्वात्म-धन्यता का बोध करते हैं।

कुंभ शब्द पुराना है, जिसका अर्थ है कलश या घट। स्पष्ट है कि कुंभ का संबंध अमृत कलश से है, जिसे देवों व दानवों ने समुद्र को मथकर निकाला था। पुराणों में यही अमृत कलश लेकर भगवान धन्वंतरि प्रकट हुए थे। इस कलश को पाने के लिए हुई छीना-झपटी में अमृत की कुछ बूंदें चार स्थानों पर छलक पड़ी थीं। उन स्थानों में से एक प्रयाग है। *महाभारत* में इसी अमृत कलश को कश्यपनंदन गरुड़ अपनी माता विनता को दासत्व से मुक्त करवाने के लिए स्वर्ग से लाए थे। तभी अमृत कुंभ से निःसृत अमृत कण प्रयाग आदि स्थानों पर गिरे थे। यह अमृत गंगा और यमुना के उन जलकणों में है, जिन्हें पाने के लिए असंख्य लोग अपनी सुख-सुविधा छोड़कर संगम किनारे पहुंचते हैं। यह अलौकिक हो जाने का ऐसा शास्त्रीय भाव है, जिसमें आस्था और परंपरा के साथ जातिमुक्त सामाजिक संगम होता है।

कुंभ के आयोजन की पुण्यभूमि प्रयाग की महिमा अकथनीय है। गंगा-यमुना के संगम का पुरातनतम निर्देश *ऋग्वेद* (10/75) में है - *सितासिते सरिते यत्र संगते यत्राप्लुतासो दिवमुत्पतन्ति। ये वै विसृजन्ति धीरासो जनासो अमृतत्वं भजन्ते।।* - जो लोग श्वेत यानी गंगा और कृष्ण यानी यमुना, इन दो नदियों के मिलन-स्थल संगम पर स्नान करते हैं, वे अमृत (मोक्ष) प्राप्त कर लेते हैं। जगलकर्ता ब्रह्मा ने यहां यज्ञ किया था, इसी से यह क्षेत्र 'प्रयाग' कहलाया। संगम का पुरातन वर्णन *वाल्मीकि-रामायण* में है। भगवान श्रीराम ने माता सीता और अनुज लक्ष्मण को प्रयाग की महिमा बताई थी। पुरुषोत्तम श्रीराम द्वारा प्रशंसित होने पर पुण्यभूमि प्रयाग को 'तीर्थराज' की उपाधि मिली। प्रयाग में गंगा, यमुना एवं सरस्वती नदियों के मिलन से यह 'त्रिवेणी' हो गया। ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश्वर प्रयाग में सदा विराजते हैं। गोस्वामी तुलसीदास ने *श्रीरामचरितमानस* में लिखा है - *को कहि सकइ प्रयाग प्रभाऊ*, यानी प्रयाग का प्रभाव (महत्ता) कौन कह सकता है!

कुंभ ज्ञान और उपासना का केंद्र है। इसमें केवल अगाध जलराशि का ही संगम नहीं होता, बल्कि बहुविध विचारों का संगम भी होता है। इसमें ज्ञान, वैराग्य व भक्ति के वाहक साधु-संतों की अद्भुत त्रिवेणी सृजित होती है। शैवों और वैष्णवों के साथ ही विभिन्न सगुणी और निर्गुणी संतों द्वारा किए जाने वाले स्नान और अनुष्ठान लोगों को सहज ही सम्मोहित और प्रभावित करते हैं।

भारत रत्न डॉ. पांडुरंग वामन काणे ने *धर्मशास्त्र के इतिहास* में लिखा है कि हिंदू समाज बहुत-सी जातियों में विभक्त होने से जाति-संकीर्णता में फंसा रहा है, पर तीर्थयात्राओं ने सभी को पवित्र नदियों व स्थलों में एक स्थान पर साथ-साथ बैठा दिया है। तीर्थों से संबंधित परंपराओं, तीर्थयात्रियों की संयमशीलता, पवित्र व दार्शनिक लोगों के समागम व तीर्थों के वातावरण ने तीर्थयात्रियों को उच्च आध्यात्मिक स्तर पर अवस्थित किया है। इससे उनके मन में ऐसी श्रद्धा-भक्ति की भावना भर उठती थी, जो तीर्थयात्रा से लौटने के उपरांत भी दीर्घकाल तक उन्हें अनुप्राणित किए रहती थी।

प्रयाग में तीन नदियों का प्राकृतिक संयोग है, जिससे इसे तीर्थों के राजा होने का शास्त्रीय गौरव प्राप्त है। *ऋग्वेद* (5/53/9) में जिन 20 नदियों के नाम हैं, उनमें सरस्वती, सरयू और सिंधु को माता के रूप में उल्लिखित किया गया है। *ऋग्वेद* काल में सरस्वती विशाल जलपूर्ण नदी थी और यह यमुना एवं शुतुद्रि के बीच बहती थी, पर ब्राह्मण-ग्रंथों के काल में ही यह रेतीले स्थलों में अंतर्हित हो गई थी। प्रयाग में यह आज भी अंतर्हित है।

भारत की धार्मिक और सामाजिक एकता में तीर्थ स्थानों ने अति महत्वपूर्ण योगदान किया है। रवींद्रनाथ ठाकुर ने 'साधना' में लिखा था - 'भारतवर्ष ने तीर्थयात्रा के स्थलों को वहां चुना, जहां प्रकृति में कुछ विशिष्ट रमणीयता और सुंदरता थी, जिससे व्यक्ति का मन संकोर्ण आवश्यकताओं से ऊपर उठकर अनंत ईश्वर में अपनी स्थिति का परिज्ञान कर सके।' भारतीयों का विश्वास रहा है कि तीर्थों में जाकर पवित्र नदियों में स्नान करने से मनुष्य के पाप कटते हैं। *महाभारत* और *कूर्मपुराण* ने माघ मास में गंगा-यमुना के संगम में स्नान की महत्ता का बखान किया है। नारायण भट्ट के *त्रिस्थलीसेतु* के अनुसार, प्रयाग में स्नान के विशिष्ट दिवस मकर-संक्रांति, रथसप्तमी और माघी अमावस्या हैं। कुंभ पर्व में इनके साथ पौष पूर्णिमा, वसंत पंचमी, माघी पूर्णिमा और महाशिवरात्रि भी जुड़ गए हैं।

काशी के महामहोपाध्याय पंडित हरप्रसाद शास्त्री ने 1939 ईस्वी में प्रकाशित *कपट्टिचंद्रोदय* में शाहजहां द्वारा दी गई प्रयाग की यात्रा के लिए कर की छूट का उल्लेख किया है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था-'अखोध भारतीय, दरिद्र भारतीय, ब्राह्मण या किसी भी जाति का भारतीय, सभी आपस में भाई हैं। कुंभ पर्व सबसे मिलकर बनता है। यह सभी का है। यह *सर्वे भवन्तु सुखिनः* का सनातन प्रयोग है, जो लोगों को बुलाकर अमृत बांटता है और उन्हें अमरता देता है। वास्तव में कुंभ पर्व आने-जाने वाला कालमात्र नहीं है, बल्कि यह तो हमारे जीवन और साहित्य में पूरी तरह से रचा-बसा है।

edit@amarujala.com

जीवन धारा

महादेवी वर्मा

बिना प्रयोग के ज्ञान प्रमाणहीन है और बिना ज्ञान के प्रयोग आधारहीन। ये दोनों इतने सापेक्ष हैं कि एक को जानने के लिए दूसरे को जानना ही पड़ता है।

ज्ञान और उसके उपयोग से ही जीवन में आनंद

प्रत्येक कार्य के प्रतिपादन और प्रत्येक वस्तु के निर्माण में दो आवश्यक अंग हैं- तदविषयक विज्ञान और उस विज्ञान का क्रियात्मक प्रयोग। बिना एक के दूसरा अपूर्ण ही रहेगा, क्योंकि बिना प्रयोग के ज्ञान प्रमाणहीन है और बिना ज्ञान के प्रयोग आधारहीन। अतः प्रत्येक विज्ञान में क्रियात्मक कला का कुछ अंश अवश्य रहता है और प्रत्येक क्रियात्मक कला भी अपने विज्ञान विशेष की अनुगामिनी बनकर ही सफल होती है। ये दोनों इतने सापेक्ष हैं कि एक को जानने के लिए दूसरे को जानना ही पड़ता है। यदि हम रंग और उनके मिश्रण के विषय में जान लें, तूलिका आदि के विषय में सब कुछ समझ लें, परंतु कभी इस ज्ञान को प्रयोग की कसौटी पर न कसें, तो हमारा चित्रकला-विषयक ज्ञान परीक्षा के बिना अपूर्ण ही रह जाएगा। इसी प्रकार यदि हम इस ज्ञान के बिना ही एकाएक रंग भरने का प्रयत्न करने लगें, तो हमारा यह प्रयास भी विफल ही कहा जाएगा। सफल चित्रकार बनने के लिए हमें तत्संबंधी ज्ञातव्य को जानकार प्रयोग में लाना ही होगा। यही अन्य कलाओं के लिए भी सत्य सिद्ध होगा। यदि हम ध्यान से देखें, तो संसार में जीना भी एक कला है, जिसमें उपर्युक्त दोनों साधनों का ज्ञान जितना आवश्यक है, उतना ही या उससे भी कुछ अधिक आवश्यक उन सिद्धांतों का उचित अवसर पर उपयुक्त प्रयोग भी किया जाना चाहिए। यदि हम ऐसे सिद्धांतों का भार जन्म-भर ढोते रहें, जिनका उपयुक्त प्रयोग हमें ज्ञात न हो, तो हमारी दशा उस पशु से भिन्न न होगी, जिसको बिना जाने ही धर्मग्रंथों का भार वहन करना पड़ता हो। हमारे संस्कारों में, जीवन के लिए आवश्यक सिद्धांत ऐसे सूत्र रूप में समझे जाते हैं, जो प्रयोग रूपी टीका के बिना न स्पष्ट हो पाते हैं और न उपयोगी। 'सत्यं ब्रूयात' को हम सिद्धांत रूप में जानकर भी न अपना विकास कर सकते हैं और न समाज का उपकार, जब तक अनेक परिस्थितियों, विभिन्न स्थानों और विशेष कालों में उसका प्रयोग कर उसके वास्तविक अर्थ को न समझ लें – उनके यथार्थ रूप को हृदयंगम न कर लें। एक निर्दोष को बचाने वाला असत्य उसकी हिंसा का कारण बनने वाले सत्य से श्रेष्ठ ही रहेगा। अन्य सिद्धांतों के लिए भी यही सत्य है और रहेगा। जीवन को विकृत न बनाकर उसे सुंदर और उपयोगी रूप देने के इच्छुक को अपने सिद्धांतों से संबंध रखने वाली अंतर्मुखी तथा उन सिद्धांतों के सक्रिय रूप से संबंध रखने वाली बहिर्मुखी शक्तियों को पूर्ण विकास की सुविधाएं देनी ही पड़ेंगी। जब बहिर्मुखी शक्तियां भी अंतर्मुखी हो जाती हैं, तब बाह्य सक्रियता नष्ट हुए बिना नहीं रहती। आज चाहे हमारी आध्यात्मिकता भीतर-ही-भीतर पाताल तक फैल गई हो, परंतु जीवन का व्यावहारिक रूप विकृत-सा होता जा रहा है। जीवन का चित्रण केवल काल्पनिक स्वर्ग में विचरण नहीं है, बल्कि संसार के कंटकाकीर्ण पथ को प्रशस्त बनाना भी है। जब तक बाह्य तथा आंतरिक विकास सापेक्ष नहीं बनते, हम जीना नहीं जान सकते।

हर पल ज्ञान अर्जित करें

आज सोमवार है, कल मंगलवार होगा, ये दिन नहीं देखें, बस हर पल ज्ञान अर्जित करें और उससे भी जरूरी है कि उस ज्ञान का प्रयोग जमीनी स्तर पर नजर भी आए। ईमानदारी की किताब सिर्फ पढ़ें नहीं, बल्कि उसे जीवन में उतारें और दुनिया को रोशन करें। एक बार में एक व्यक्ति को मदद करें, और हमेशा अपने सबसे नजदीकी व्यक्ति से शुरुआत करें।

सूत्र

दूसरा पहलू

शोध में पाया गया है कि खर्च करने की इच्छा नकद भुगतान की तुलना में डिजिटल माध्यम से बढ़ जाती है।

हरे-हरे नोटों के दूर जाने की पीड़ा

लंबे समय से मेहनत से कमाए गए हरे-हरे नोटों यानी नकदी को खर्च करना तकलीफदेह रहा है। शोध में भी पाया गया है कि उपभोक्ता डिजिटल के बजाय नकद भुगतान से कम खर्च करते हैं। 2000 के दशक की शुरुआत में ग्राहकों पर किए गए एक अध्ययन में, जब लोग कार्ड या नकदी का इस्तेमाल करते थे, देखा गया कि नकद भुगतान करने वालों ने कम खर्च किए। कई प्रमाण इसकी पुष्टि करते हैं कि खर्च करने की इच्छा नकदी की तुलना में कार्ड से बढ़ जाती है।

जब हम भुगतान कर रहे होते हैं, तो मानसिक रूप से पैसों को दूर जाते देख हमें पीड़ा होती है। कार्ड की तुलना में नकद भुगतान करने पर अधिक पीड़ा का अनुभव होता है। ऐसा कहा जाता है कि जब किसी चीज का भुगतान और उपयोग एक ही समय पर हो, तो नकदी भुगतान उस उपभोग के आनंद को कमतर कर देता है। हालांकि, कुछ शोधकर्ता मानते हैं कि नकद भुगतान में कोई कैशबैक नहीं मिलता, इसलिए पीड़ा ज्यादा होती है।

उपभोग का आनंद नकदी की तुलना में क्रेडिट कार्ड द्वारा किए जाने वाले भुगतानों में कहीं अधिक होता है। मोबाइल भुगतान भी क्रेडिट या डेबिट कार्ड की तरह ही खर्च को प्रभावित करता है। मोबाइल द्वारा भुगतान से भी नकद की तुलना में खर्च की प्रवृत्ति बढ़ जाती है। हालांकि, बाद के अध्ययनों में पाया गया है कि कार्ड या मोबाइल भुगतान और नकदी के बीच यह प्रभाव समय के साथ कमजोर होता जा रहा है, जिससे पता चलता है कि ऐसा इसलिए हो सकता है, क्योंकि लोग डिजिटल भुगतान विधियों के ज्यादा आदी हो गए हैं। एक अध्ययन में पाया गया कि नोटिफिकेशन भुगतान के दर्द को उसी तरह से जगा सकता है, जैसे नकदी के मामले में देखा गया है। यानी नोटिफिकेशन देखकर अब उपभोक्ताओं के खर्च करने की प्रवृत्ति प्रभावित होती है स्वीडन में किए गया मेरा अपना शोध भी इस निष्कर्ष की पुष्टि करता है कि डिजिटल तरीकों की तुलना में नकद भुगतान करने की परेशानी पिछले कुछ वर्षों में कम हुई है। कई देशों में नकदी का उपयोग कम हो रहा है, और स्वीडन विशेष रूप से एक कैशलेस समाज है, जहां अब कम से कम दुकानें नोट और सिक्के स्वीकार करती हैं। युवाओं ने बताया कि जब वे नकद से भुगतान करते हैं, तो वे भुगतान का विवरण नहीं देख सकते हैं। लेकिन जब वे मोबाइल के माध्यम से भुगतान करते हैं, तो बैंक खाते की गतिविधि को देख सकते हैं। इससे पता चलता है कि भुगतान का दर्द आदतों और तकनीक के आधार पर पीढ़ियों को अलग-अलग तरीके से प्रभावित करता है। –द कन्वर्सेशन से

कैरिन रेहनक्रोना

जब किसी चीज का भुगतान और उपयोग एक ही समय पर हो, तो नकद भुगतान उस उपभोग के आनंद को कमतर कर देता है।

कई देशों में नकदी का उपयोग कम हो रहा है, और स्वीडन विशेष रूप से एक कैशलेस समाज है, जहां कम दुकानें नकदी स्वीकार करती हैं। मोबाइल के माध्यम से भुगतान करते हैं, तो बैंक खाते की गतिविधि को देख सकते हैं।

आंकड़े

जिम की सदस्यता

व्यायाम सबसे लोकप्रिय संकल्पों में से एक है। पिछले 12 महीनों में जिम की सदस्यता पर पैसा खर्च करने वाले देशों में भारत पहले स्थान पर है।

भारत	27%
ब्राजील	24%
चीन	18%
अमेरिका	14%
इटली	13%

आंकड़े जिम सदस्यता पर खर्च करने वाले देशों के, प्रतिशत में

स्रोत : statista

नरहरि भगवान विट्ठल का दर्शन नहीं करना चाहते थे। भगवान ने ऐसी लीला रची कि अंत में उन्हें थोथ हुआ कि भगवान शंकर ही विट्ठल हैं।

दोनों एक हैं

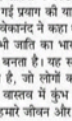

अंतर्यात्रा
संकलित

नरहरि पंढरपुर के रहने वाले थे। लोग इस बात से हैरान थे कि पंढरपुर में रहकर कोई भगवान विट्ठल के दर्शन से कैसे वंचित रह सकता है। नरहरि केवल शिव जी की ही पूजा करते थे। उन्होंने कभी भगवान विट्ठल का दर्शन तक नहीं किया था और न ही वह भगवान विट्ठल का दर्शन करना चाहते थे। एक बार ऐसा संयोग हुआ कि एक सज्जन ने उन्हें भगवान विट्ठल की कमरबंद बनाने के लिए सोना और कमर का नाप लाकर दिया। नरहरि ने कमरबंद तैयार की, पर वह कमर से चार अंगुल बड़ी हो गई। उसे छोटी करने को कहा गया, तो वह चार अंगुल छोटी हो गई। ऐसा चार बार हुआ।

लाचार होकर नरहरि ने स्वयं जाकर नाप लेने का निश्चय किया, पर कहीं विट्ठल जी का दर्शन न हो जाए, इसलिए उन्होंने अपनी आंखों पर पट्टी बांध ली और जब नाप लेने के लिए हाथ बढ़ाए, तो मस्तिष्क पर जटा और जटा में गंगा, जैसी शंकर की मूर्ति का स्पर्श हुआ। उन्हें निश्चय हो गया कि यह शंकर भगवान ही हैं। इसलिए उन्होंने आंखों की पट्टी खोल ली और देखा तो भगवान विट्ठल के दर्शन हो गए। उन्होंने फिर आंखें बंद करके देखा, तो फिर शंकर जी ही नजर आए। इस प्रकार उन्होंने तीन बार किया। तब उनको बोध हुआ कि जो शंकर हैं, वही विट्ठल हैं और जो विट्ठल हैं, वही शंकर हैं। एक अभंग में नरहरि कहते हैं-'भगवन! मैं आपका सुनार हूं, आपके नाम का व्यवहार करता हूं। यह गले का हार देह है, इसकी अंतरात्मा सोना है।

अमर उजाला

पुराने पन्नों से — 18 मई, 1963

अंतरिक्ष यात्री गॉर्डन कूपर की अंतरिक्ष यात्रा सफल

अंतरिक्ष यात्री गोर्डन कूपर की अंतरिक्ष यात्रा सफल

अमेरिका के अंतरिक्ष यात्री गॉर्डन कूपर अंतरिक्ष की पूरी परिक्रमा करके सकुशल पृथ्वी पर उतर आए। कूपर ने स्वयं ही अंतरिक्ष यान का निर्देशन किया, क्योंकि उसकी मशीन में कुछ गड़बड़ी हो गई थी।

व्यवस्थाएं भी तो खुद का विकास करें

तिरुपति बालाजी मंदिर में मची भगदड़ बढ़ते धार्मिक पर्यटन के अनुपात में व्यवस्थाओं के विकास की चुनौती को रेखांकित करती है।

पत्रलेखा चटर्जी, वरिष्ठ पत्रकार — **मुद्दा**

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2025 की शुरुआत उथल-पुथल भरी हुई है। तमाम दुखद घटनाओं के बीच में आंध्र प्रदेश में हिंदुओं के सबसे प्रतिष्ठित मंदिरों में से एक तिरुपति मंदिर के पास हुई भगदड़ का समाचार भी शामिल है। भगवान श्री वेंकटेश्वर को समर्पित यह मंदिर तिरुपति बालाजी मंदिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। देश-विदेश के लाखों श्रद्धालु प्रतिवर्ष भगवान वेंकटेश्वर के दर्शन करने के लिए पहुंचते हैं। वर्ष में दस दिन के लिए खुलने वाले मंदिर के वैकुंठ द्वार के दर्शन को श्रद्धालु काफी शुभ मानते हैं और उनका विश्वास है कि इससे उन्हें स्वर्ग के दैवीय द्वार की झलक मिलेगी।

लेकिन हाल में यहां भक्तों की भीड़ में मची भगदड़ में छह श्रद्धालुओं की मौत हो गई और कई घायल भी हुए। यह हादसा तिरुमाला श्रीवारी वैकुंठ द्वार के टिकट काउंटर के नजदीक विष्णु निवासम के पास 'दर्शन' टोकन के वितरण के दौरान हुआ। बीते साल हाथरस में एक धार्मिक आयोजन में मची भगदड़ में करीब सत्ता सौ लोगों की मौत हुई थी और अनेक लोग घायल हुए थे। भारत में धार्मिक आयोजनों में खराब भीड़ प्रबंधन और सुरक्षा चूक के कारण होने वाली घातक घटनाओं का एक गंभीर ट्रैक रिकॉर्ड है। अगस्त 2024 की वैश्विक कंसल्टिंग फर्म केपीएमजी और पंजाब हरियाणा दिल्ली चैंबर ऑफ कॉमर्स की एक रिपोर्ट में बताया गया, 'भारत में 60 फीसदी से अधिक धरेलू यात्राएं धार्मिक उत्साह के कारण होती हैं। खासकर, कोरोना महामारी के बाद यात्रियों की संख्या में हुई उल्लेखनीय वृद्धि के साथ आध्यात्मिक पर्यटन केंद्र में आ गया है।' भारत साढ़े चार लाख से ज्यादा धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत स्थलों का घर है। जम्मू-कश्मीर स्थित वैष्णो देवी मंदिर में 32 से 40 हजार श्रद्धालु प्रतिदिन दर्शन करने के लिए आते हैं, जबकि कोविड से पहले प्रतिदिन दस से पंद्रह हजार यात्री प्रतिदिन आते थे। अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में मत्था टेकने के लिए प्रतिदिन करीब एक लाख लोग आते हैं, जो महामारी के पहले की तुलना में काफी अधिक है। ठीक ऐसी ही स्थिति दक्षिण में केरल के गुरुवायूर मंदिर की है, जहां छह से सात हजार श्रद्धालु रोजाना पहुंचते हैं, जबकि महामारी से पहले यह संख्या चार हजार के करीब थी। उत्तर प्रदेश के मंदिर वाले शहरों की बढ़ती लोकप्रियता उनकी क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को भी मजबूत बना रही है।

काशी विश्वनाथ कॉरिडोर के पुनर्निर्माण और अयोध्या में राम मंदिर बनने के बाद से इन स्थलों पर, खासकर कोविड के बाद कहीं ज्यादा संख्या में लोग पहुंच रहे हैं। वर्ष 2023 में अकेले काशी में दस करोड़ से ज्यादा यात्री आए। अयोध्या के राम मंदिर में प्रतिदिन एक से डेढ़ लाख भक्त दर्शन करने के लिए आ रहे हैं। आप भले ही धार्मिक न हों, फिर भी आपको यह बात तो स्वीकार करनी होगी कि धार्मिक और आध्यात्मिक पर्यटन आर्थिक उन्नति और सांस्कृतिक आदान-प्रदान में अहम योगदान देते हैं। भारत सरकार ने धार्मिक और पर्यटन स्थलों पर बुनियादी ढांचे को बेहतर बनाने में मदद करने के लिए कई बेहतरीन योजनाएं लागू की हैं। लेकिन मुख्य चुनौती किसी तीर्थ स्थल की भक्तों को धारण करने की क्षमता से जुड़ी है। सड़क, सार्वजनिक परिवहन, स्वच्छता सेवाओं समेत स्थानीय बुनियादी ढांचा श्रद्धालुओं की बढ़ती संख्या के बोझ तले पहले ही दबा हुआ है, जिससे वहां के स्थानीय लोगों के जीवन की गुणवत्ता प्रभावित होती है और इससे कालांतर में तीर्थयात्रा कर रहे लोगों के लिए जरूरी सुविधाओं पर असर पड़ना भी तय है। अति पर्यटन के दबाव की वजह से न केवल पारिस्थितिकी संतुलन गड़बड़ाता है, बल्कि तीर्थस्थलों का सौंदर्य और आध्यात्मिक माहौल भी प्रभावित होता है। केपीएमजी-पीएचडीसीसी रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत के प्रसिद्ध आध्यात्मिक स्थलों पर भीड़भाड़ की चुनौतियों से निपटने के लिए स्तरीय उपायों, रणनीतियों और विशिष्ट कार्यों को शामिल करते हुए एक व्यापक दृष्टिकोण जरूरी है। इन उपायों का उद्देश्य स्थानीय संसाधनों पर दबाव को कम करना, तीर्थ स्थलों की पवित्रता को बनाए रखना और सभी आगंतुकों के लिए आध्यात्मिक अनुभव को बढ़ाना होना चाहिए। वैश्विक धार्मिक पर्यटन बाजार के वर्ष 2032 तक 2.22 अरब डॉलर के आसपास पहुंचने का अनुमान है। इस बाजार में भारत की स्थिति काफी अच्छी है, लेकिन तीर्थयात्रियों की बढ़ती संख्या के लिए जरूरी सुविधाओं के इंतजाम करने के लिए अपनी क्षमता को बढ़ाने के मुद्दे को ज्यादा समय तक अनदेखी नहीं की जा सकती। सिर्फ सतत और समग्र विकास मॉडल को अपनाकर ही हम अपनी सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत को भावी पीढ़ियों के लिए संरक्षित कर सकते हैं।

बिज़नेस स्टैंडर्ड
वर्ष 17 अंक 282

नए प्रतिबंधों का असर

अमेरिका में जो बाइडन के नेतृत्व वाले प्रशासन ने जाते-जाते उठाए गए एक अहम कदम में रूसी ऊर्जा क्षेत्र पर प्रतिबंधों का दायरा बढ़ा दिया है। गत सप्ताह घोषित ये उपाय मौजूदा प्रतिबंधों में इजाफा करने वाले हैं और बहुत संभव है कि ये पहले ही दबाव से जूझ रहे ऊर्जा क्षेत्र में और अधिक अस्थिरता लाने वाले साबित हों। इनमें से कुछ कदम जहां यूरोपीय देशों तथा यूरोपीय संघ के द्वारा पहले ही उठाए जा चुके हैं, वहीं वैश्विक निजी क्षेत्र इन अमेरिकी कदमों को लेकर यूरोप के कदमों की तुलना में कहीं अधिक सावधानी से प्रतिक्रिया देगा। नए आक्रामक प्रतिबंध कई क्षेत्रों में विस्तारित हैं। दो बड़े उत्पादकों और निर्यातकों को प्रतिबंधों के दायरे में लाया गया है: सरगुटनेफ्ट गैस और गैजप्रोम नेफ्ट। इन दोनों कंपनियों ने गत वर्ष मिलकर जो लाखों बैरल तेल निर्यात किया वह रूस के मौजूदा समुद्री निर्यात का एक तिहाई है। यह भारत समेत दुनिया के बाजार में वर्तमान तेल आपूर्ति का बहुत बड़ा हिस्सा है। इसके अलावा कुछ विशिष्ट तेल टैंकर पोतों पर भी प्रतिबंध लगाया गया है, जिनमें ऐसे पोत भी शामिल हैं जो आर्कटिक सागर के पार रूस के मरमांस्क जैसे क्षेत्रीय इलाकों तक तेल एवं गैस की आपूर्ति करते हैं। मध्यम अवधि में इन प्रतिबंधों का क्या असर होगा यह अभी स्पष्ट नहीं है। यकीनन, इससे लागत बढ़ेगी क्योंकि कई अलग-अलग तरह से आपूर्ति की जरूरत होगी।

अमेरिका के तरकश में एक और तीर है- रूस में समुद्री बीमा प्रदाताओं पर प्रतिबंध, खासतौर पर इन्गोस्ट्राख इंश्योरेंस कंपनी और अल्फास्ट्राख्रोवनी समूह पर प्रतिबंध। इनमें से पहली कंपनी खासतौर पर भारत आने वाले कार्गो का बीमा करती है और उसे बाजार से हटाने का अर्थ होगा भारत आने वाले शिपमेंट में ज्यादा देरी होना। भारत को इन नए प्रतिबंधों के असर से बचने के लिए उपयुक्त प्रतिक्रिया देनी होगी जो ज्यादा उथल पुथल लाने वाली न हो। यह तत्काल करने की जरूरत है ताकि रूसी तेल लाने वाले शैडो फ्लीट (चोरी से प्रतिबंधित सामग्री ले जाने वाले पोत) को सुरक्षा पहले ही एक समस्या बन चुकी है। कुछ खास पोतों के विरुद्ध प्रतिबंध उनकी मरम्मत को मुश्किल बनाता है। उनके दुर्घटना के शिकार होने की आशंका बढ़ जाती है। और बीमा न होने के कारण दुर्घटना के बाद भारी नुकसान होता है। इसका समूची पारिस्थितिकी पर बुरा असर होता है। इस समय काला सागर में दो क्षतिग्रस्त रूसी तेल टैंकरों से तेल लीक होने की आशंका हैं। इस सप्ताहांत जर्मनी को एक परित्यक्त टैंकर से निपटना होगा जो बाल्टिक सागर में शैडो फ्लीट का हिस्सा था।

एक हद तक ये अतिरिक्त उपाय अनुमानित थे हालांकि उनकी आक्रामकता जरूर चौंकाने वाली थी। चीन के साथ-साथ भारत की जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता के कारण हाल के दिनों में खाड़ी और अटलांटिक क्षेत्र से आने वाले तेल पर निर्भरता बढ़ी है। भारत के सरकारी तेलशोधक कारखानों के बारे में खबर है कि फरवरी में 60 लाख बैरल कच्चे तेल के अनुबंध किए हैं। आंशिक रूप से ऐसा हाजिर बाजार में रूसी तेल की उपलब्धता न होने के कारण किया गया। खबरों में मुताबिक पश्चिमी टेक्सस इंटरमीडिएट ग्रेड का 20 लाख बैरल तेल सुरक्षित कर लिया गया है। यह संभव है कि नए प्रतिबंधों के बाद रूस के कच्चे तेल की आपूर्ति का मॉडल तय करने में कुछ सप्ताह या महीनों का समय लग जाए। तब तक भारत आपूर्ति और कीमतों के मामले में अस्थिरता का शिकार रहेगा। यह भी संभव है कि रूसी तेल के लिए ऊंची लागत, कम विश्वसनीयता तथा मौजूदा की तुलना में खतरनाक आदि नया चलन हो जाए। भारतीय रिफाइनरियों की प्रतिबंध सक्षम व्यापार पर निर्भरता बहुत लंबे समय तक संभव नहीं रह सकती।

प्रोफेसर मोहम्मद यूनुस के नाम खुला पत्र

शेख हसीना ने आपका बैंक छीना और अब आप उनकी सत्ता छीनकर अपना बदला ले चुके हैं। यही परीक्षा है। अब आप सार्वजनिक पद पर हैं तो इसका मतलब है जनता ने आप पर यकीन किया है।

आदरणीय और प्रिय प्रोफेसर यूनुस,

मैं इस उलझन में हूं कि आपको बधाई दूं या आपके साथ सहानुभूति प्रकट करूं। आम तौर पर इस प्रकार सत्ता के शिखर पर पहुंचने वाले किसी भी व्यक्ति को सावधान रहने की जरूरत नहीं होती मगर भारतीय उपमहाद्वीप के एक बड़े, घनी आबादी वाले और कुल मिलाकर गरीब देश के नेतृत्व की अपनी चुनौतियां हैं जिन्हें हल्का नहीं माना जा सकता।

बहरहाल सबसे पहले आपको बधाई। 2016 के आरंभ में जब हुबली-धारवाड़ में एक सम्मेलन में मुझे आपके साथ कुछ दिन बिताने का मौका मिला था तब मैं आपकी गंभीरता, सौजन्य और विपरीत परिस्थितियों से निपटने की क्षमता पर आपका भरोसा देखकर दंग रह गया था।

तब हमने एक वीडियो साक्षात्कार रिकॉर्ड किया था, जिसमें आपने बताया था कि किस तरह शेख हसीना ने आपका बैंक छीन लिया और जवाब में आप अपने बैंक को विदेश ले गए। मैंने यह कहकर आपको घुमाने की कोशिश की थी कि हसीना की सरकार ने आपका बैंक छीना और आपने विदेश में बैंक बनाकर बदला ले लिया। मेरी बातों में फंसे बगैर आपने मुझसे कहा था कि आप बदला नहीं लिया बल्कि वही किया, जो सही था। मैं देख सकता था कि आप नाराज थे, परेशान थे और खुद को रोक रहे थे।

पिछले वर्ष अगस्त में हसीना सरकार के बेहद नाटकीय पतन के साथ आपको मौका मिल ही गया। आपको विदेश से वापस लाया गया ताकि आप नए प्रशासन का नेतृत्व संभाल सकें हालांकि आपने कोई कार्यकारी या राजनीतिक पद नहीं संभाला। आप 'मुख्य सलाहकार' बने रहे और शायद इस माह के अंत में आप इसी पद के साथ दावोस जाएंगे।

क्या मैं अपने पत्र के इस हिस्से को यह कहते हुए समाप्त कर सकता हूं कि हसीना ने आपको बैंक छीना और आपने उनकी सरकार छीनकर बदला ले लिया है?

राष्ट्र की बात

शेखर गुप्ता

मैं ऐसा कहते हुए कोई नतीजा नहीं निकाल रहा हूं। वह जाहिर तौर पर अत्यधिक अलोकप्रिय थीं। हालिया चुनाव में तो पिछले चुनाव से भी अधिक फर्जीवाड़ा हुआ था, बिल्कुल वैसे ही, जैसे पाकिस्तानियों ने साजिश रचकर अपने यहां के एक प्रमुख दल और उसके नेता इमरान खान को चुनाव लड़ने से ही रोक दिया था।

क्या मैं कह सकता हूं कि अपने जख्मों का इलाज करते समय आप इस नाटकीय बदलाव के लिए बिल्कुल तैयार नहीं थे? आप इस बदलाव के लिए तभी तैयार हो सकते थे जब आप राजनेताओं की तरह ज्योतिष में यकीन करते हों और किसी विद्वान ज्योतिषी से मशविरा लेते हों। यकीनन लाल कृष्ण आडवाणी के ज्योतिषी से तो बेहतर ही होना चाहिए, जिसका उन्हें प्रधानमंत्री बनवाने का वादा झूठा साबित हुआ। परमाणु सौदे पर चर्चा के दौरान डॉ. मनमोहन सिंह ने संसद में इसी पर आडवाणी के ऊपर तंज भी कसा था।

सिंह ने एक और महत्वपूर्ण बात कही थी। उन्होंने बताया कि परवेज मुशर्रफ के साथ अपनी पहली मुलाकात में उन्होंने कहा था, 'हम दोनों अपने-अपने देश के अचानक बने नेता हैं। सार्वजनिक पद का संबंध जनता के विश्वास से है। ऐसा नहीं हो सकता कि हम इस पद पर रहें और कुछ न करें।' वह मुशर्रफ से कहना चाहते थे कि 'हमें' गंभीरता से बात करके भारत-पाकिस्तान के पुराने मुद्दों को सुलझाना चाहिए। यह सारी बातचीत उनके जीवित रहते प्रकाशित हो चुकी थी।

क्या मैं आपसे भी खुद को इसी कसौटी पर कसने का अनुरोध कर सकता हूं? आपका नाटकीय उभार मुशर्रफ के बजाय सिंह से ज्यादा मिलता-जुलता है। मुशर्रफ का उभार उतना नाटकीय या आकस्मिक नहीं था। पाकिस्तान में हर सौन्य अधिकारी सेना में आने के साथ ही सोचने लगता है कि वह राष्ट्रपति बन सकता है। आप तो भारत के अर्थशास्त्री प्रधानमंत्री सिंह से खुशकिस्मत रहे हैं। आपके लिए कसौटी यह है कि अब जबकि आप सार्वजनिक पद पर हैं, तो इसका अर्थ जनता का भरोसा है। क्या आप इस पद पर बने रहेंगे और कुछ नहीं करेंगे? और अगर करेंगे तो क्या करेंगे?

आप कह सकते हैं कि लोकतंत्र की बहाली, संस्थानों के पुनर्निर्माण और उन्हें दोबारा वैधता प्रदान करने के बाद आप एक कृतज्ञ देश को छोड़कर आगे बढ़ जाना चाहते हैं। सवाल यह उठता है कि आप यह सब हासिल करने के लिए आप खुद को कितना समय देते हैं? क्या आपने कोई मियाद तय की है?

आपने सुधारों के लिए अलग-अलग आयोग गठित करने की बात कही है। अच्छी बात है। मगर हमारे देश में तो ऐसे आयोग अनिश्चित काल तक बने रहते हैं। अल जजीरा के साथ आपके हालिया साक्षात्कार में मैंने देखा कि आप इसकी कोई आखिरी तारीख यानी मियाद नहीं बता रहे हैं। बल्कि आपने तो कहा कि इसमें चार साल लग सकते हैं।

क्या वाकई आपके पास इतना समय है? यकीनन आपका स्वास्थ्य बेहतर है और आप दीर्घायु हों तथा परिपूर्ण जीवन जिएं। लेकिन इस तरह की अस्थायी व्यवस्था में शीर्ष पद पर ज्यादा समय तक बना नहीं रहा जा सकता है। आपके बड़े विरोधी, दबदबे वाले राजनीतिक दल पहले ही बेसब्र हो रहे हैं। मैं यह भी नहीं मानता कि आप उपमहाद्वीप के बिशप मुगाबे या महातीर मुहम्मद बनना चाहते हैं। आप जैसा शिक्षित और समझदार व्यक्ति ऐसे मुगालतों से दूर ही रहेगा। आप इस्लामिक चरमपंथियों को तुष्टीकरण के जरिये चुप रखे हुए हैं मगर समय के साथ उनका भी धैर्य चुक जाएगा। अब तो उनके पास उनके सपनों के गणतंत्र का खाका भी है।

आपने बांग्लादेश में एक नया गणतंत्र बनाने का जो वादा किया है वह आपकी सबसे बड़ी मुसीबत है। सन 1972 के बाद से पाकिस्तान की तरह बांग्लादेश के संविधान में कई दोहराव हो चुके हैं। अब आप पूरी तरह नया संविधान रचने जा रहे हैं। इस बीच आपको लोकतंत्रवादियों और इस्लाम कि हिमायतियों से भी निपटना है और अपने दार्शनिक विचारों को भी ध्यान में रखना है। ऐसे चमत्कार आसानी से नहीं होते। खास तौर पर संविधान सभा, संसद और पारंपरिक राजनेताओं के बगैर तो बिल्कुल नहीं। क्या आपको लगता है कि ऊपर से थोपे गए संविधान को वैधता मिलेगी? बांग्लादेश और पाकिस्तान के अनुभव बताते हैं कि आपके बाद आने वाला हर व्यक्ति अपना संविधान लाएगा।

मैं चिंता के साथ कहना चाहता हूं कि आपका प्रशासन देश की आबादी को शांत रखने के लिए पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान की पुरानी तरकीब अपना रहा है - भारत विरोध। आप भारत को हसीना का मित्र मानते हैं लेकिन क्या इस वजह से भारत का विरोद करने पर आपको खुशी के अलावा कुछ और हासिल होगा? मैं तो इसे बचकानी हरकत ही कहता मगर आपकी उम्र और मेधा को देखते हुए ऐसा नहीं कहूंगा। जहां तक पाकिस्तान की बात है तो वह राजनीतिक, दार्शनिक और पंथवाद के बोझ के अलावा बांग्लादेश को शायद ही कुछ दे पाएगा। भारत इकलौता पड़ोसी है जो आपके लिए मायने रखता है और बांग्लादेश पूर्व दिशा में हमारा सबसे कीमती पड़ोसी है। आप इस रिश्ते को क्यों खराब करना चाहेंगे? दशकों से इन मसलों पर निगाह बनाए रखने के कारण मैं कह सकता हूं कि बांग्लादेश के लिए भारत कोई खतरा नहीं है। अतीत की बात छोड़ दें तो बांग्लादेश ने भी बीते दो दशकों में भारत के लिए कोई मुश्किल खड़ी नहीं की है। हसीना ने दोनों के बीच के अतीत को बदल दिया और भारत यह न माने या इसकी सराहना न करे तो गलत होगा। यह बांग्लादेश के लिए भी कारगर रहा क्योंकि इस दौरान उसने बेहद तेज वृद्धि की और सामाजिक संकेतकों में भी सुधार किया।

अब हमारे बीच कोई विवाद नहीं बचा। हमारे बीच केवल साझा हित और साझा लाभ के मसले हैं। अगर भारत से आपको यही दिक्कत है कि हसीना यहां हैं तो आप यह न सोच लें कि भारत हसीना को आपके हाथ सौंप देगा। आपसे गुजारिश है कि इसे हमारे रिश्तों का आखिरी दांव बनाने से बचें।

आखिर में आपके बारे में जरूरी बात। आपने सेवानिवृत्त होने के बाद के लिए क्या सोचा है? उपमहाद्वीप के अनिर्वाचित शासकों को पद छोड़ने में दिक्कत हुई है। उनमें से कोई भी सेवानिवृत्ति के बाद गोल्फ खेलने, किताब लिखने या पुराना काम करने में कामयाब नहीं रहा है। इस बारे में आपने क्या सोचा है? कहीं आप यह तो नहीं मान बैठे हैं कि सेवानिवृत्त होने के बाद आप नए 'बंगबंधु' बनेंगे जबकि मूल बंगबंधु इतिहास के पन्नों और लोगों की यादों से गायब हो चुके हैं।

भविष्य की ओर बढ़ने से पहले पीछे मुड़कर देखें

वर्ष 2024 को ऐसे साल के रूप में याद किया जाएगा, जिसमें दुनिया कई मायनों में बदल गई। ऐसा कोई दिन नहीं गुजरा, जब दुनिया का कोई न कोई हिस्सा मौसम की अति का शिकार नहीं हुआ। इन विकट परिस्थितियों में गर्मी और ठंड के नए रिकॉर्ड बने और कुछ दिन के भीतर फिर टूट गए। पहले ही अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे समुदायों के लिए बार-बार आने वाली ऐसी प्राकृतिक आपदाओं से उबर पाना लगभग असंभव हो जाता है। वैज्ञानिक इसे 'एंथ्रोपोसीन युग' कहते हैं। 'एंथ्रोपोसीन युग' भूविज्ञान के शब्दों में वह समय है, जब मानवीय गतिविधियों का जलवायु और पारिस्थितिकी-तंत्र पर गंभीर असर पड़ता है। हमने मानवीय प्रगति (अच्छे रहन-सहन एवं धन सृजन के लिए) के लिए जो उपाय किए हैं उनके प्रभाव सभी देशों और दुनिया की सीमा से परे दिखने लगे हैं।

यह अभूतपूर्व परिवर्तनों का दौर भी है - मनुष्यों के एक दूसरे के प्रति आचरण में बदलाव का, सही और गलत के वैश्विक नजरिये में बदलाव का और आर्टिफिशल इंटिलिजेंस (एआई) तकनीक की ताकत में बदलाव का। अगले कुछ साल में दुनिया की दशा और दिशा एआई की ताकत से ही तय होगी।

हमने सार्वजनिक विमर्श का तरीका भी बदल दिया है। अब हम जो महसूस करते हैं, उसे कहने में बिल्कुल भी नहीं हिचकते भले ही वे अप्रिय, घृणा फैलाने वाली या विनाशकारी ही क्यों न हों। हम इसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता लोकतंत्र की रक्षा का माध्यम समझने लगे हैं। मगर ऐसा करते-करते हम पूरी तरह नए युग की तकनीक पर आश्रित हो गए हैं। आज की बड़ी तकनीकी कंपनियों का लगभग सभी चीजों पर नियंत्रण हो गया है। इन कंपनियों का बढ़ता प्रभाव देशों की सीमाएं लांघकर दुनिया में सभी लोगों को अपनी जद में ले चुका है। इन कंपनियों ने अतीत की बहुराष्ट्रीय कंपनियों की बौना बना दिया है। तनिक विचार करें कि जिस तरह हम समाचार सुनते, देखते या पढ़ते हैं, जिस तरह हम खरीदारी करते हैं और जहां भी रहते हैं वहां हमारे जीवन का हरेक पहलू किस तरह इन कारोबारों का हिस्सा बन चुका है। अब इन भारी भरकम तकनीकी कंपनियों के मालिक न केवल तकनीक एवं मीडिया को मनमाने ढंग से बदल रहे हैं बल्कि राजनीति की दिशा भी तय करने लगे हैं। ये अपना प्रभाव बढ़ाना चाहते हैं और सरकारों के कमजोर होते ही वे और मजबूत हो जाते हैं। ज्यादातर सरकारें इस भ्रम में हैं कि वे ही नीतियां तय कर रही हैं और उनकी नीतियां लोकहित में हैं। सच्चाई यह है कि सरकारों ने अपना यह उत्तरदायित्व बड़ी कंपनियों, निवेश बैंकों और निजी कारोबारों को दे रखा है। सार्वजनिक गतिविधियों की गुंजाइश कम होती जा रही है और निजी इकाइयों का दबदबा बढ़ता जा रहा है। ऐसा नहीं है कि लोकतंत्र खत्म हो चुका है मगर यह जरूर है कि कारोबारों और उपभोक्ता वर्गों (आप और हम) की सांठगांठ के कारण यह बुनियादी तौर पर बदल चुका है।

जमीनी हकीकत

सुनीता नारायण

अब दुनिया अधिक असुरक्षित एवं बेचैन हो रही है क्योंकि हरेक संकट आने वाले दूसरे संकट की जमीन तैयार कर रहा है। हम तेजी से असमानता की शिकार हो रही ऐसी दुनिया में रहते हैं, जहां अमीर-गरीब की खाई बढ़ती जा रही है। इसके कारण और खराब व्यवस्था, जलवायु परिवर्तन के खतरों तथा संसाधनों की कमी के कारण लोगों का पलायन तेजी से बढ़ रहा है क्योंकि वे परेशान हैं और नए अवसर तलाशने की जद्दोजहद में लगे हुए हैं। इन सबके कारण लोगों में क्रोध और असुरक्षा की भावना भड़क रही है, जिससे नए कारोबारियों एवं महाशक्तियों के नियंत्रण वाली तकनीक के इस युग में लोकतंत्र तेजी से घृणा एवं ध्रुवीकरण का शिकार हो रहा है। यह गुस्सा गरीबों तक सीमित नहीं है। अमीर भी ठगा महसूस कर रहे हैं या कम से कम आज के हालात को इसी रूप में देख रहे हैं। 1990 के दशक में जब दुनिया भर की अर्थव्यवस्थाओं को एक दूसरे से जोड़ने की पहल हो रही थी तब सबसे अधिक डर गरीबों को सता रहा था। उन्हें लग रहा था कि उनका रोजगार छिन जाएगा। अब स्थिति उलटी हो गई है। पहले से अधिक संपन्न दुनिया में अब काम करने वाला तबका ही नई अर्थव्यवस्थाओं के लाभ से वंचित रह गया है। वे उनके खिलाफ खड़े हो रहे हैं, जिन्हें वे 'शिक्षित अभिजात्य वर्ग और विशेषज्ञ' कहते हैं और उनके हिसाब से जिन्हें सेवा और वित्तीय अर्थव्यवस्था के उदय का फायदा मिला है। इस वर्ग संघर्ष का सबसे खतरनाक परिणाम विचारों का तिरस्कार है। लोग ज्ञान को दोषयुक्त, पूर्वाग्रह से भरा और निजी हितों को बढ़ावा देने का जरिया समझ रहे हैं। हमने दुनिया में सूचना और कारोबारी तंत्र का ताना-बाना जिस तरह खड़ा किया है यह सोच उसी का नतीजा है। हालत यह हो गई है कि जलवायु परिवर्तन से निपटने के उपायों जैसा जो कुछ जनहित में है, उसे भी संदेह की दृष्टि से देखा जाने लगा है। डॉनल्ड ट्रंप के दोबारा आने के बाद तो लोक कल्याण के विषय का भी मजाक उड़ाया जा रहा है। यह ऐसी स्थिति है जहां अर्थव्यवस्था, जलवायु परिवर्तन और राजनीति एक दूसरे के आमने-सामने खड़े हैं। जब दुनिया एक दूसरे से जुड़ी अर्थव्यवस्थाओं का ढांचा तैयार करने चली तो माना गया कि इससे संपन्न एवं सुरक्षित वैश्विक व्यवस्था का मार्ग प्रशस्त होगा। उम्मीद यह थी कि नई व्यवस्था में कोई देश दूसरे देश पर आक्रमण नहीं करेगा क्योंकि एक-दूसरे के साथ सहयोग उनके ही हित में होगा। मगर उद्योग दूसरे देशों में स्थानांतरित करने का असल कारण उद्देश्य श्रम और पर्यावरण सुरक्षा पर आ रही लागत कम करना था। ये लागत चुकाने पर विनिर्माण करना काफी महंगा साबित होता। इसका मतलब था कि उत्पादन जहां गया कार्बन उत्सर्जन भी वहीं पहुंच गया। कार्बन डाई ऑक्साइड उत्सर्जन से जुड़े आंकड़ों के आधार पर हम कह सकते हैं कि चीन दुनिया में विनिर्माण का प्रमुख केंद्र बन गया है और दूसरे देश भी इसके साथ जुड़ने लगे हैं। दुनिया ऐसे पड़ाव पर खड़ी है जहां प्रदूषण रहित ऊर्जा तंत्र बढ़ाने की जरूरत महसूस हो रही है मगर नई वास्तविकताएं भी सामने खड़ी हैं। 'दूसरी' दुनिया खासकर चीन में पर्यावरण को अधिक नुकसान पहुंचाए बिना उत्पादन करना अब भी सस्ता है। ट्रंप ने उद्योग-धंधे अमेरिका में वापस लाने के लिए व्यापार युद्ध शुरू करने की धमकी दे दी है। मगर इससे वित्त एवं पर्यावरण सुरक्षा से जुड़े खर्च बढ़ जाएंगे क्योंकि दुनिया आपस में इस कदर जुड़ी और परस्पर निर्भर है कि देश आसानी से अलग नहीं हो सकते। व्यापार युद्ध कार्बन उत्सर्जन घटाने की मुहिम को भी नुकसान पहुंचाएगा क्योंकि यह सोच गहरा रही है कि पर्यावरण के अनुकूल वस्तु विदेश में बनी है तो उसे नकार देना चाहिए।

जलवायु परिवर्तन के खतरे के बीच दुनिया एक अलग यथार्थ में पहुंच चुकी है। इसे ध्यान में रखते हुए हमें एक अलग भविष्य के लिए योजना तैयार करनी चाहिए। हम अतीत को पकड़क नहीं बैठ सकते। अपने युग की गलतियों को ध्यान में रखते हुए हमें नए सवेरे का पुरोधा और नए निश्चय का प्रतीक बनना होगा। ऐसा नहीं किया तो आने वाले दशकों में दुनिया बिखर जाएगी और जलवायु परिवर्तन से जुड़ी समस्याओं की आग में झुलस जाएगी। हमें हालात बदलने ही होंगे।

(लेखिका सेंटर फॉर साइंस ऐंड एन्वॉयरन्मेंट से जुड़ी हैं)

आपका पक्ष

अमेरिका में आग की घटना और नुकसान का आकलन

अमेरिका के लॉस एंजलिस के कुछ हिस्सों में जंगल में लगी विनाशकारी आग समूचे विश्व के लिए खतरनाक संकेत है। उस इलाके की बहुमूल्य वन संपदा के साथ अरबों डॉलर की संपत्ति आग की भेंट चढ़ चुकी है। इस दावानल से हुआ नुकसान इतना व्यापक है कि अमेरिकी बीमा कंपनियों को आशंका है कि यह आग अमेरिका के इतिहास में सबसे मांगी आग साबित होगी जिसमें बीमा कराई गई करीब आठ अरब डॉलर की संपत्ति के नुकसान की आशंका है। अचल संपतियों के अतिरिक्त बहुमूल्य वन संपदा तथा दुर्लभ वन्यजीवों का विनाश आकलन से परे है। साथ ही इससे पर्यावरण को भारी भरकम नुकसान हुआ है। अमेजन के जंगल धरती की 20 प्रतिशत ऑक्सीजन की आपूर्ति करते हैं वे भी आग की चपेट में आते रहते हैं। जंगल अमूल्य वैश्विक धरोहर है जिस पर संपूर्ण धरती का अस्तित्व टिका हुआ है। इसलिए इसे आग से बचाने के लिए विश्व के सभी देशों को साझा पहल की जरूरत है। ऐसे उपाय किए जाने चाहिए जिससे आग लगने की घटना पर नियंत्रण हो। क्षेत्र विशेष में जिस मौसम में आग लगने की आशंका अधिक हो वहां अतिरिक्त सतर्कता बरतनी चाहिए। जंगल के बीच गड्ढे खोदे जाने चाहिए। पानी के साथ-साथ अन्य अग्निरोधी साधनों की पर्याप्त व्यवस्था की जानी चाहिए।

विमलेश पगारिया, बदनावर

अमेरिका के लॉस एंजलिस में लगे भीषण आग को बुझाने का प्रयास रविवार को भी जारी रहा

देश की सुरक्षा हो बजट की प्राथमिकता

पिछले दिनों इस समाचार पत्र में प्रकाशित लेख में देश की सुरक्षा को बजट में प्राथमिकता देने की आवश्यकता पर बहुत स्पष्टतः संदेश दिया गया तथा कल्याणकारी योजनाओं के व्यय को कम करके रक्षा व्यय बढ़ाने पर जोर दिया गया। पिछले बजट में 6.21 लाख करोड़ रुपये का आवंटन पर्याप्त नहीं है। देश की रक्षा के लिए इंजनों की आपूर्ति के लिए अमेरिका, फ्रांस और रूस पर अत्यधिक निर्भरता अच्छा संकेत नहीं है। आज भारत के लिए चुनौती पाकिस्तान, चीन, बंगलादेश की सीमाओं से बहुत अधिक है और देश के दुश्मन देश के भीतर भी बैठे हैं जो अपने आकाओं के इशारे पर देश में अराजकता फैला सकते हैं। विकसित देश नहीं चाहते कि भारत की अर्थव्यवस्था आगे बढ़े और उन्हें भारत अब एक चुनौती के रूप में दिखाई देता है। जब भारत अंतरिक्ष में स्वदेशी अति आधुनिक उपग्रह भेज सकता है और क्रायोजेनिक इंजन का स्वदेशी निर्माण कर सकता है तो वायुसेना के लिए स्वदेशी इंजन बनाने पर अविलंब शोध करके उनका अपने ही देश में निर्माण किया जा सकता है। असुरक्षित देश में कल्याणकारी योजनाओं का कोई मतलब नहीं है। कल्याणकारी योजनाओं पर व्यय को तर्कसंगत व्यवस्था से बहुत आवश्यक और जरूरतमंद वर्ग तक सीमित करने की जरूरत है। सरकार को लोगों तक यह संदेश देने की जरूरत है कि देश की बाह्य और आंतरिक सुरक्षा सर्वोपरि है और वित्तीय बजट बनाने वाले नीति निर्धारकों को यह प्रयास करने की जरूरत है कि रक्षा के लिए पिछले वर्ष की तुलना में दोगुना आवंटन किया जाए। नई विकास योजनाओं के बजाय चल रही योजनाओं को ही कार्यान्वित किया जाए।

विनोद जौहरी, दिल्ली

पाठक अपनी राय हमें इस पते पर भेज सकते हैं : संपादक, बिज़नेस स्टैंडर्ड, 4, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली 110002. आप हमें ईमेल भी कर सकते हैं : lettershindi@bsmail.in
पत्र/ईमेल में अपना डाक पता और टेलीफोन नंबर अवश्य लिखें।

देश-दुनिया

फोटो - पीटीआई

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नई दिल्ली में रविवार को युवा दिवस के अवसर पर आयोजित 'विकसित भारत युवा नेता संवाद 2025' कार्यक्रम के दौरान प्रदर्शनी का दौरा किया। स्वामी विवेकानंद के जन्मदिन 12 जनवरी को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

रक्षा क्षेत्र

परिवर्तनकारी वर्ष

रक्षा क्षेत्र में 'परिवर्तन का वर्ष' रक्षा विनिर्माण तथा खोज को आवश्यक गति दे सकता है। भारत के रक्षा क्षेत्र में 2025 में परिवर्तनात्मक बदलाव हो सकता है। रक्षा मंत्रालय ने इस वर्ष महत्वाकांक्षी लक्ष्य बनाया है जिसमें खरीद प्रक्रियाओं का आधुनिकीकरण, स्वदेशी विनिर्माण क्षमताओं का विस्तार तथा शोध एवं विकास-आरएंडडी को बढ़ावा देना शामिल हैं। इस वर्ष को 'परिवर्तन का वर्ष' घोषित करते हुए रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह तथा अन्य सर्वोच्च अधिकारियों ने दीर्घकालीन चुनौतियों को संबोधित करने का एक दृष्टिकोण सामने रखा है तथा रक्षा क्षेत्र में देश को ज्यादा आत्मनिर्भर व प्रतियोगी बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। सरकार के प्रमुख लक्ष्यों में से एक रक्षा अधिग्रहर प्रक्रियाओं-डीएपी का पुनर्गठन करना है। जटिलता और अक्षमता के कारण इन प्रक्रियाओं की आलोचना होती रही है। अब इनको ज्यादा सहज, हल्की तथा ज्यादा तेज प्रक्रिया में बदला जाएगा। इसका उद्देश्य सरकारी समयसीमाओं में कमी करना तथा लंबे समय से रक्षा आधुनिकीकरण में बाधा बनी नौकरशाही बाधाओं को हटाना है। नए ढांचे से न केवल व्यवस्था ज्यादा सक्षम बनेगी, बल्कि इससे स्थापित पक्षों तथा रक्षा क्षेत्र में आने वाले नए उद्यमों के लिए समान कार्य आधार भी बनेगा। खरीद में सुधार के साथ ही सरकार ने स्वदेशी विनिर्माण व आरएंडडी को बढ़ावा देने पर जोर दिया है।

भारत जहां दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी विनिर्माण अर्थव्यवस्था है, वहीं इसकी रक्षा विनिर्माण क्षमता समग्र आर्थिक स्थिति की तुलना में काफी छोटी है। यह कमी दूर करने के लिए सरकार ने रक्षा आरएंडडी के लिए ज्यादा संसाधन आबंटन की योजना बनाई है। रक्षा शोध एवं विकास संगठन-डीआरडीओ ने आरएंडडी खर्च को आने वाले वर्षों में रक्षा बजट के 5 प्रतिशत से बढ़ा कर 15 प्रतिशत करने का निर्णय लिया है। एयरो इंजनों के विकास जैसे क्षेत्र पर खासतौर से ध्यान दिया गया है। भारत को इन महत्वपूर्ण तकनीकों के देश में विकास पर चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इससे निपटने के लिए सरकार ने विदेशी मूल उपकरण निर्माताओं-ओईएम के साथ संयुक्त उद्यम स्थापित करने के संकेत दिए हैं जो इस क्षेत्र में प्रगति के लिए जरूरी होगा। हालांकि, इसके लिए भारी निवेश आवश्यक होगा जो 50,000 करोड़ रुपये तक जा सकता है। सरकार ने ढांचागत संरचनायें बनाने के लिए आवश्यक प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। इसके साथ ही एयरो इंजनों तथा संबंधित तकनीकों के सफल सह-विकास के लिए व्यापक स्तर पर विशेषज्ञता की जरूरत होगी। सरकार की एक और महत्वपूर्ण पहल ज्यादा प्रतियोगी रक्षा उद्योग इकोसिस्टम स्थापित करना है। वर्तमान समय में भारत का रक्षा क्षेत्र अधिकांशतः सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों द्वारा संचालित है। सरकार का उद्देश्य इस क्षेत्र में स्टार्टअप तथा सूक्ष्म, लघु एवं मझोले उद्यमों की सहभागिता को बढ़ावा देना है। इसके लिए आवश्यक नीतिगत परिवर्तन किए जाएंगे। हालांकि, इन महत्वाकांक्षी योजनाओं के बावजूद भारत के रक्षा इकोसिस्टम को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इनमें से एक बड़ी बाधा तुलनात्मक रूप से एयरोस्पेस जैसे क्षेत्रों में छोटा विनिर्माण आधार है। यहां भारत को अपनी उत्पादन क्षमता बढ़ाने तथा अद्यतन तकनीकों का विकास करने की असीम संभावना है, पर अब तक इसका प्रयोग नहीं किया गया है। इसके साथ ही भारत में रक्षा क्षेत्र के समक्ष पुरानी पड़ चुकी नीतियों तथा प्रस्ताव तैयार करने में विलंब की बाधायें भी हैं जिनके कारण अक्सर प्रक्रियायें जटिल होती हैं और समयसीमा लंबी खिंचती जाती है। यदि भारतीय रक्षा क्षेत्र को वैश्विक स्तर पर प्रतियोगी तथा खोजी बनाना है तो इन स्थितियों में बदलाव बहुत जरूरी हो गया है। वैसे भारतीय रक्षा क्षेत्र विनिर्माण में विकास का प्रमाण रक्षा निर्यात के रूप में सामने आया है जिसमें भारत तेजी से प्रगति कर रहा है। पिछले दशक में डीआरडीओ का योगदान भी अधिकतम रहा है।

पर्यावरण मौसम विज्ञान में आईएमडी का योगदान

आईएमडी मौसम पूर्वानुमान पर ध्यान केंद्रित करने से विकसित होकर जलवायु अनुसंधान, आपदा प्रबंधन और वायु गुणवत्ता निगरानी में एक प्रमुख खिलाड़ी बन गया है

राजेश वर्मा
(लेखक, वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग के अध्यक्ष हैं)

भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) की स्थापना के 150 वर्ष पूर्ण होना प्रत्येक भारतीय के लिए अत्यंत गौरव की बात है। 1875 में स्थापित भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने भारत में मौसम विज्ञान और वायुमंडलीय अध्ययनों में अग्रणी भूमिका निभाई है। शुरुआत में मौसम पूर्वानुमान और भूकंप विज्ञान पर केंद्रित विभाग ने धीरे-धीरे जलवायु अनुसंधान, आपदा प्रबंधन और पर्यावरण निगरानी को शामिल करने के लिए अपने दायरे का विस्तार किया। आईएमडी संभवतः भारत का पहला संस्थान है जिसने सौर विकिरण, वर्षा रसायन विज्ञान, ओजोन, एरोसोल ऑप्टिकल और भौतिक गुणों के माध्यम से दीर्घकालिक मापन का शुभारंभ किया। वायुमंडलीय संरचना के महत्व को पहचानते हुए, आईएमडी वैश्विक वायुमंडलीय पर्यावरण निगरानी और अनुसंधान कार्यक्रमों में एक सक्रिय भागीदार बन गया और ओजोन छिद्र, वायु गुणवत्ता, वर्षा रसायन विज्ञान, जलवायु परिवर्तन, सौर मंदता एवं प्रभासन अनुसंधान में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

पूर्व-औद्योगिक युग से पृथ्वी की जलवायु प्रणाली में स्पष्ट रूप से बदलाव आया है। जलवायु परिवर्तन और परिवर्तनशीलता के विज्ञान के साथ-साथ अनुकूलन और शमन रणनीतियों को समझने के मामलों में आईएमडी की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। यह जलवायु सूचना, परिणामों और सेवाओं के व्यापक उपयोग को सुविधाजनक बनाने में प्रमुख भूमिका निभाता है। आईएमडी को राष्ट्रीय मौसम संबंधी अवलोकन प्रणालियों को संचालित करने; डेटा अभिलेखागार विकसित और बनाए रखने; जलवायु निगरानी करने; जलवायु निदान, जलवायु विश्लेषण और जलवायु आकलन करने का दायित्व सौंपा गया है।

150 वर्षों की अवधि में एकत्र किए गए इन सभी विश्वसनीय और प्रामाणिक आंकड़ों और सूचनाओं ने भारत में जलवायु परिवर्तन का उचित आकलन प्रदान किया है और अनुकूलन एवं शमन उपायों के लिए नीति निर्माण में भी सहायता प्रदान की है। वायु गुणवत्ता पूर्वानुमान और मूल्यांकन प्रणाली देश में सीएक्यूएम और अन्य प्रदूषण नियंत्रण प्राधिकरणों को जीआरएपी के कार्यान्वयन सहित वायु गुणवत्ता प्रबंधन के लिए निर्णय लेने में सहायता प्रदान करती है।

संगणनात्मक संसाधनों में प्रगति ने उन्नत नियतात्मक रासायनिक परिवहन मॉडल के उपयोग की अनुमति दी, जिससे पहले के अनुभवजन्य और सांख्यिकीय दृष्टिकोण की जगह अधिक सटीक वायु गुणवत्ता पूर्वानुमान मिले है, जिसमें पहले कुछ सीमाएं थीं। भारत मौसम विज्ञान विभाग और भारतीय उष्णकटिबंधीय मौसम विज्ञान संस्थान (आईआईटीएम), पुणे, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के वैज्ञानिकों ने संयुक्त रूप से उन्नत वायु गुणवत्ता प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली (एक्यूईडब्ल्यूएस) विकसित की है।

उन्नत मॉडलिंग प्रारूप में एक उच्च-रिज़ॉल्यूशन पूरी तरह से युग्मित अत्याधुनिक मौसम अनुसंधान और पूर्वानुमान मॉडल शामिल है जो रसायन विज्ञान (आमतौर पर डब्ल्यूआरएफ-चैम के रूप में जाना जाता है) के साथ जुड़ा हुआ है और पूर्वानुमानों को बेहतर बनाने के उद्देश्य से अत्याधुनिक डेटा आत्मसात तकनीकों का उपयोग करके अधिक सटीक प्रारंभिक स्थितियां बनाने के लिए एयरोसोल ऑप्टिकल गहराई पर उपग्रहों से डेटा, भारत भर में वायु गुणवत्ता निगरानी स्टेशनों से सतह डेटा और धूल एवं पराली जलाने सहित विभिन्न नए और प्राकृतिक स्रोतों से उ'च-रिज़ॉल्यूशन उत्सर्जन को शामिल करता है।

सिस्टम के पूर्वानुमान भाग में दो मॉडलिंग कार्यक्षेत्र शामिल हैं, एक एनसीएआर वायुमंडलीय रसायन परिवहन मॉडल (डब्ल्यूआरएफ-चैम) पर आधारित है और दूसरा फिनिश मौसम विज्ञान संस्थान मॉडल एसआईएलएएम (वायुमंडलीय संरचना के एकीकृत मॉडलिंग के सिस्टम) पर आधारित है। यह मॉडल दिल्ली में नवीनतम भूमि उपयोग भूमि कवर (एलयूएलसी) परिवर्तन की जानकारी, पृष्ठभूमि एरोसोल और प्रदूषक, धूल भरी आंधी से उत्पन्न होने वाली धूल, लंबी दूरी के परिवहन और पराली जलाने से उत्पन्न प्रदूषित अवयवों को ध्यान में रखते हैं।

दिल्ली क्षेत्र के लिए 400 मीटर रिज़ॉल्यूशन पर 72 घंटे की लीड टाइम तक और 10 किमी रिज़ॉल्यूशन पर 10 दिन पहले पूर्वानुमान उपलब्ध हैं। इनमें चेतावनी प्रणाली (ए) दिल्ली/एनसीआर क्षेत्र के लिए 400 मीटर पर वायु गुणवत्ता पूर्वानुमान, (बी) 400 मीटर रिज़ॉल्यूशन पर दिल्ली/एनसीआर के प्राथमिक और माध्यमिक दबाव पर वायु गुणवत्ता पूर्वानुमान, (सी) पूरे दक्षिण एशियाई क्षेत्र के लिए 10 किमी रिज़ॉल्यूशन पर वायु गुणवत्ता पूर्वानुमान, (डी) दिल्ली/एनसीआर क्षेत्र में वायु गुणवत्ता के वास्तविक समय के अवलोकन, (ई) विभिन्न उपग्रह डेटासेट का उपयोग करके धूल (धूल भरी आंधी) और प्रदूषक अवयवों जैसे प्राकृतिक एरोसोल के बारे में विवरण, (एफ) भारत भर में वास्तविक समय की अग्नि से जुड़ी जानकारी, (जी) गैर-स्थानीय अग्नि उत्सर्जन के योगदान का पूर्वानुमान शामिल है। मॉडल के प्रदर्शन की और बेहतर बनाने के लिए लगातार प्रयासों की आवश्यकता है। पर्यावरण मौसम विज्ञान के क्षेत्र में परिवर्तनकारी नवाचार देखे गए हैं, जिसमें अत्याधुनिक तकनीकों ने वायुमंडलीय गतिशीलता और वायु गुणवत्ता में सटीक, वास्तविक समय का उल्लेख करने की अंतर्दृष्टि प्रदान की है

पर्यावरण मौसम विज्ञान के क्षेत्र में परिवर्तनकारी नवाचार हुए हैं, जिसमें अत्याधुनिक तकनीकों ने वायुमंडलीय गतिशीलता और वायु गुणवत्ता के बारे में सटीक, वास्तविक समय की जानकारी प्राप्त करना संभव बनाया है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और मशीन लर्निंग (एमएल) वायु गुणवत्ता और मौसम से जुड़ी घटनाओं का सटीक और तेज़ पूर्वानुमान देने के लिए उपग्रह इमेजरी, ग्राउंड-आधारित अवलोकन और वायुमंडलीय मॉडल से विशाल डेटासेट को संसाधित करके पर्यावरण मौसम विज्ञान को फिर से परिभाषित कर रहे हैं। वायु प्रदूषण के स्वास्थ्य प्रभावों और आर्थिक लागतों को कम करने के लिए वायु गुणवत्ता पूर्वानुमान की सटीकता आवश्यक है। आईएमडी और संबद्ध संस्थान पर्यावरण निगरानी और वायु गुणवत्ता पूर्वानुमान में सुधार के लिए निरंतर प्रयास कर रहे हैं।

आईएमडी के ऐतिहासिक योगदान ने न केवल भारत की विशिष्ट वायुमंडलीय स्थितियों की वैज्ञानिक समझ में सुधार किया है, बल्कि वायु प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन से निपटने के वैश्विक प्रयासों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मौसम और जलवायु के क्षेत्र में आईएमडी को वैश्विक रुप से प्रमुख बनाने में उनके अथक परिश्रम के लिए मौसम विज्ञान समुदाय को बहुत-बहुत बधाई।

म्यांमार में सैन्य शासकों पर संकट

हिरण्यमय कालेंकर
(लेखक, दि पायनियर के सलाहकार संपादक हैं)

इस बात के सभी संकेत हैं कि वर्ष 2025 सैनिक रूप से म्यांमार में सत्तारूढ़ सैनिक शासन के लिए निराशाजनक होगा। वह स्पष्ट रूप से विपक्षी नेशनल यूनिटी गवर्नमेंट-एनयूजी तथा उसकी सशस्त्र शाखा-पीपुल्स डिफेंस फोर्स-पीडीएफ नस्ली सशस्त्र संगठनों-ईआरओ तथा थ्री ब्रदरहुड एलायंस से लड़ाई में हार रहा है जिसमें म्यांमार नेशनल डेमोक्रेटिक एलायंस आर्मी-एमएनडीएए शामिल है। यह उत्तरी शान राज्य के कोकांग विशेष क्षेत्र में सक्रिय है। इसके साथ ही तलांग नेशनल लिबरेशन आर्मी-टीएनएलए भी शान राज्य में तथा देश के पश्चिमी हिस्से के राखीन राज्य में सक्रिय अराकान आर्मी-एए भी पीडीएफके गठबंधन में अन्य सेनाओं के साथ शामिल हैं। हालांकि, भविष्य का अनुमान लगाना जोखिक का विषय हो सकता है, पर इस युद्धग्रस्त देश में बदलती घटनाओं से यह अनुमान लगाया जा सकता है। खबरिया वेबसाइट 'इरावडी' में 6 जनवरी, 2025 को एक खबर छपी है-'केवल एक तिहाई म्यांमार में ही सैनिक शासन प्रभावी: एनयूजी'। इसमें एनयूजी के हवाले से बताया गया है कि सैनिक शासन का देश के 330 कस्बों में से केवल 107 पर नियंत्रण रह गया है। पीडीएफ और ईआरओ ने 144 कस्बों या देश के 44 प्रतिशत हिस्से पर पूर्ण या आंशिक नियंत्रण स्थापित कर लिया है। अत्यधिक विश्वसनीय मानी जाने वाली इस वेबसाइट ने 8 जनवरी, 2025 को मौंग कावी का एक लेख-'म्यांमार जुंटा द्वारा जमीनी स्तर पर राष्ट्रव्यापी विरोध को देखते हुए सरकार समाप्त होने की चेतावनी' प्रकाशित किया। इसमें एनयूजी का यह दावा पेश किया गया है कि सैनिक शासक के लगभग 1,500 सैनिक और पुलिस कर्मचारी नागरिक नाफ्समानी आंदोलन के साथ आ गए हैं और उनमें से 480 ने 'क्रांतिकारी ड्यूटी' देनी शुरू कर दी है।

'केवल एक तिहाई म्यांमार में ही सैनिक शासन प्रभावी: एनयूजी' शीर्षक वाली रिपोर्ट में बताया गया है कि पिछले साल 315 अधिकारी युद्ध के दौरान मारे गए तथा 127 घायल हुए। इसी समय कर्नल से मेजर जनरल स्तर तक के 53 वरिष्ठ अधिकारी भी मारे गए, घायल हुए या बंदी बनाए गए। इसके साथ ही 14,093 सैनिक और सीमा सुरक्षा पुलिसकर्मी भी मारे गए तथा 7,363 घायल हुए। सरकार-विरोधी समूहों ने सैनिक शासन के 741 ठिकानों पर कब्जा कर लिया। इनमें से अधिकांश पर नस्ली सेनाओं ने कब्जा किया, पर सैगांग, मागवे, मांडले, बागो और टनथियारी क्षेत्रों में 162 पर पीडीएफ व पीपुल्स डिफेंस टीमों ने कब्जे किए।

सेना को 2024 में 140 बटालियनों और दो क्षेत्रीय कमांडों से हाथ धोने पड़े। राखीन प्रांत में वेस्टर्न कमांड तथा शान प्रांत में नार्थईस्टर्न कमांड के साथ ही एक क्षेत्रीय आपरेशन कमांड, पांच सैनिक आपरेशन कमांडों, 6 आपरेशनल अड्डों, दो हवाईअड्डों, 17 सीमा सुरक्षा पुलिस अड्डों तथा अनेक तोपखाना, लाइट इन्फैंट्री बटालियनों तथा आर्टिलरी, लाजिस्टिक, सिग्नल व सैनिक इंजीनियरिंग इकाइयों से भी सेना को हाथ धोने पड़े हैं।

हालांकि, एनयूजी के दावों को पूर्ण सत्य नहीं कहा जा सकता है, पर जमीन से मिलने वाली रिपोर्टों से संकेत मिलता है कि सैनिक शासक की सेना-'सिटटैट' को पिछले साल भयानक धक्का लगा है। 27 अक्टूबर, 2023 को 'आपरेशन 1027' शुरू करने के बाद से थ्री ब्रदरहुड एलायंस को काफी सफलतायें मिली हैं। एए ने लगभग पूरे राखीन प्रांत पर अप्रैल, 2024 में नियंत्रण स्थापित कर लिया था। एक बड़े घटनाक्रम में एमएनडीएए ने 31 जुलाई, 2024 को दावा किया था कि उसने लाशियो में सिटटैट के सैनिक अड्डे पर कब्जा कर लिया है। यह चीन से लगी सीमा के शान राज्य में एक शहर है। इसके हवाईअड्डे पर भी विद्रोहियों द्वारा कब्जा सैनिक शासक के लिए बड़ा धक्का है। विवेक शंकर ने 'द न्यूयार्क टाइम्स' में 5 अगस्त, 2024 को लिखा, 'लाशियो शहर और उसका हवाईअड्डा चीन के यूनान प्रांत के साथ महत्वपूर्ण व्यापार कारीडोर पर स्थित है। चीन ने सीमा के दोनों ओर रेल व अन्य ढांचागत परियोजनाओं पर करोड़ों मिलियन डालर खर्च किए हैं।' उत्तर में सफलताओं के साथ ही जुंटा-विरोधी बलों ने उत्तरी मांडले में चार कस्बों पर कब्जा किया। 'अल जजीरा' में 23 सितंबर, 2024 को प्रकाशित एंड्रयू नाकोयेस्की की एक रिपोर्ट के अनुसार, इस कब्जे से मांडले शहर मार के दायरे में आ गया है जो म्यांमार का दूसरा सबसे बड़ा शहरी केन्द्र है और जहां लगभग 2 मिलियन लोग रहते हैं।

8 अक्टूबर, 2024 को सिटटैट को क चीन इंडिपेंडेंस आर्मी-किया द्वारा पिनलेबू कस्बे पर कब्जे से भारी नुकसान उठाना पड़ा जो सैनिक शासन से लड़ने वाली गठबंधन सेनाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। सैगांग क्षेत्र और कांचिन राज्य की सीमा पर स्थित कावलिन कस्बे और निकटवर्ती क्षेत्रों पर भी विपक्षी बलों ने कब्जा कर लिया है। अपनी भू-रणनीतिक स्थिति के साथ ही इस कस्बे के पतन से सिटटैट की स्थिति स्पष्ट होती है। खबरिया वेबसाइट 'द इरावडी' में 14 अक्टूबर, 2024 को प्रकाशित सा लिन की एक रिपोर्ट के अनुसार, एनयूजी का दावा है कि 670 हवाई हमलों तथा 5,000 से ज्यादा बम गिराने के बावजूद जुंटा के 800 सैनिकों को पराजित किया गया। इस युद्ध में जुंटा के 70 सैनिक मारे गए, 275 गायब हैं, 225 घायल हैं, 48 ने आत्मसमर्पण कर दिया तथा 102 पकड़े गए। इसके साथ ही लगभग 400 हथियार व अन्य सैनिक उपकरण जब्त किए गए।

नस्ली अराकान सेना द्वारा पश्चिमी राज्य के 17 कस्बों में से 14 पर कब्जे के बाद दिसंबर, 2024 में राखीन राज्य में जुंटा के पश्चिमी कमांड मुख्यालय के तीन कस्बे छीन लिए गए। 1 जनवरी, 2025 को सिटटैट को सैगांग में एक मजबूत पुलिस स्टेशन से पीछे हटना पड़ा जिसे क्षेत्रीय प्रतिरोधी बलों ने लगभग एक साल से अपने घेरे में ले रखा था। इससे उनको क्षेत्र में कार्रवाई में सहायता मिली। मांगंग कावी की उपरोक्त रिपोर्ट के अनुसार, जुंटा को राखीन, चिन, कांचिन और करेन राज्यों में कस्बों और अड्डों से हाथ धोना पड़ा है और वह 2024 में उत्तरी शान राज्य में खोए हुए स्थानों पर पुनः कब्जे के लिए कोई अभियान चलाने में अक्षम है। इससे पता चलता है कि सिटटैट की हालत बहुत खराब है। इससे उसमें आंतरिक असंतोष पैदा हो गया है। अनेक तीन-सितारा जनरलों को हटा दिया गया है। अनेक युवा अधिकारी इस बात से दुःखी हैं कि लगभग पूरा देश उनके खिलाफ हो गया है। 'ये मायो हेन' में 4 मई, 2023 को प्रकाशित फीचर युनाइटेड इंस्टीट्यूट आफ पीस में पेश किया गया था। इसके अनुसार सिटटैट की संख्या जो विद्रोह के पहले कुल 300,000-400,000 थी अब घट कर केवल 150,000 रह गई है।

इस घटी हुई शक्ति के कारण सिटटैट एक लड़ाकू शक्ति नहीं बना रह सकता है और उसकी सरकार बने रहना और भी कठिन है। हालांकि, सैनिक शासक के पास अभी टैंक, बख्तरबंद वाहन, तोपखाना और वायुसेना है, पर टैंकों व बख्तरबंद वाहनों से नस्ली बलों के प्रभुत्व वाले क्षेत्रों में कार्रवाई करना बहुत कठिन है।

अत्यधिक घने जंगलों, पहाड़ी क्षेत्र, गहरी खाइयों तथा खड़ी चढ़ाइयों वाले क्षेत्र छापामार युद्ध के सर्वाधिक उपयुक्त हैं। इसके साथ ही हवाईहमलों और तोपखानों से युद्ध नहीं जीते जाते हैं, भले ही उनको हथियारबंद और प्रशिक्षित इन्फैंट्री का समर्थन प्राप्त हो। यदि ऐसा न होता तो अमेरिका वियतनाम में विजय प्राप्त कर लेता।

आप की बात

बढ़ता पारिवारिक असमंजस

विवाह को सात जन्मों का बंधन कहा जाता है दंपति एक-दूसरे के साथ अपनी जिम्मेदारियों और वचनों को स्वीकार करते हैं, एक शाश्वत संबंध का निर्माण करते हैं। लेकिन विडम्बना है कि वर्तमान में लगातार बढ़ते तलाक और पारिवारिक कलह के मामले निश्चित तौर पर एक प्रमुख सामाजिक समस्या बन चुके हैं बदलते दौर में जहाँ एक ओर आत्मनिर्भरता और व्यक्तिगत पसंद को अधिक महत्व दिया जा रहा है, रिश्तों में अक्सर उम्मीदें और आवश्यकताएँ बदल रहीं हैं इसके दुष्परिणाम रिश्तों में कड़वाहट के रूप में सामने आ रहे हैं। व्यक्तिगत स्वतंत्रता , करियर की प्राथमिकताएँ ,बदलती सामाजिक मान्यताएँ इत्यादि वो प्रमुख कारण हैं जो इन दिनों सामने आ रहे हैं जिन पर अक्सर दम्पत्ति अलग अलग राय रखते हैं। आज आवश्यकता है कि विवाह जैसे पवित्र बंधन को इस प्रकार अपमानित न किया जाए। एक दूसरे को ठीक प्रकार से समझकर और खुद से आगे अपने जीवनसाथी की खुशियों को रखकर सोचना चाहिए। संवाद की कमी जैसी समस्या को संवाद द्वारा ही सुलझाया जा सकता है। विवाह केवल दो व्यक्तियों का नहीं अपितु दो परिवारों का मिलन होता है । अलगाव होने पर दो परिवार टूटते हैं इस बात को समझना चाहिए। दाम्पत्य जीवन में गलतफहमियां हमारे रिश्ते की डोर को कमजोर न हो ये समझना होगा।

– **नितिन रावत**, फ़िरोज़ाबाद

उपराष्ट्रपति का कथन

उच्च स्तरीय परीक्षाओं के बार-बार लीक होते पेपरों पर उप राष्ट्रपति के बेबाक विचार पठनीय है। पेपर लीक को गंभीर राष्ट्रीय चिंता बताते हुए जगदीप धनखड़ ने इसे एक व्यापार की संज्ञा दी है। उनका मानना है कि पेपर लीक होने से चयन प्रक्रिया की निष्पक्ष नहीं रह जाती है। दिन रात एक कर छात्र तैयारी करते हैं, लेकिन पेपर लीक होते ही उनकी मेहनत पर पानी फिरना एक बड़ा झटका होता है। आए दिन लीक होते पेपरों से त्रस्त विद्यार्थी इन मामलों को लेकर सुप्रीम कोर्ट तक पहुंचने लगे हैं। धनखड़ की यह चिंता भी जायज ही है कि छात्रों को अब परीक्षा के साथ-साथ पेपर लीक का भी डर सता रहा है। आज हर बड़ी परीक्षा किसी न किसी मिलीभगत का शिकार होती ही है। कड़ी मेहनत के बावजूद विद्यार्थियों को सफलता न मिलना उन्हें गहरे अवसाद में ले जाता है। समय और पैसा खर्च करने के बावजूद अगर योग्य विद्यार्थी वंचित रहते हैं तो यह अन्याय ही है। हालांकि केंद्र सरकार सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) विधेयक, 2024 लाई है जिससे विद्यार्थियों को थोड़ा संबल मिला है इससे निष्पक्षता और पारदर्शिता की उम्मीद जगी है। इन हालातों में अगर विषय परीक्षा प्रणाली पर उंगली उठाता है तो यह जायज है। सरकार पेपर लीक की समस्या पर कड़ी कार्रवाई और सख्त कानून बनाकर विद्यार्थियों के साथ हो रहे अन्याय को रोके।

– **अमृतलाल मारू**, इंदौर

पीएम मोदी की सादगी

एक खबर के अनुसार पॉस्टकॉस्ट पर दिए एक इंटरव्यू में नरेंद्र मोदी ने प्रधानमंत्री होते हुए भी अपनी सादगियों को बनाये रखा और कहा कि मैं जैसा सामान्य नागरिक था आज भी वैसा ही हूँ फैसले लेने में गलतियां हुई है क्योंकि मैं इंसान हूँ भगवान् नहीं पर उसके प्रति नीयत हमेशा साफ़ रही. हमेशा मेरे मन में ग़रीबों के प्रति उनके लिए बेहतर काम करने की इच्छा रही। उन्होंने सभी राजनीतिक दलों में प्रतिभावान युवाओं के प्रवेश का आह्वान किया और कहा कि वे राजनीति में आएं और देश की उन्नति के लिए काम करें. जरूरी नहीं कि वे पदों पर रहकर ही कार्य करने की इच्छा रखें बल्कि जनभागीदार बनकर भी समाज सेवा के कामों में हाथ बंटाएं, उनकी बात सही है. किन्तु आजकल राजनीति में लोग जाते ही इसीलिए हैं कि पद, पैसा और ख्याति मिले. स्वार्थी राजनीतिक दलों ने राजनीति को भी गंदा कर दिया है. इस वजह से उसमें अपराधबोध भी बढ़ गया है. राजनीति को स्वच्छ और स्वस्थ बनाने के लिए वोटों की राजनीति का त्याग करना जरूरी है. बढ़ते राजनीतिक भ्रष्टाचार पर भी कैसे अंकुश लगाया जा सके व वाणी संयम कैसे रुके उसके लिए भी उचित कदम उठाने की आवश्यकता है। हमारे प्रधानमंत्री देश व देशवासियों के उत्थान के लिए रातदिन खूब मेहनत कर रहे हैं और दुनिया में भारत को हर तरह से सशक्त बनाने में लगे हुए हैं।

– **शकुंतला महेश नेनावा**, इंदौर

सद्भावना संदेश

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा अजमेर शरीफ दरगाह के 813वे उर्स के अवसर पर पवित्र चादर दरगाह पर चढ़ाई गई. केंद्र में अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री किरण रिजुजी ने सूफी संत शेख मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर पवित्र चादर चढ़ाई और बुलंद दरवाजे पर प्रधानमंत्री के संदेश भी बुलंद दरवाजे पर जायरीनों के लिए पढ़ा गया. दिल्ली के उपराज्यपाल एवं कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे द्वारा भी चादर अजमेर शरीफ दरगाह पर सम्मान चढ़ाई गई है राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा एवं दिल्ली के मुख्यमंत्री आतिशी सिंह की तरफ से भी अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री इमरान हुसैन के माध्यम से अजमेर शरीफ पर चादर चढ़ाई गई. देश के सभी राष्ट्रीय नेताओं के द्वारा देश में अमन चैन की दुआ की गई. हम सभी देश के प्रधानमंत्री अन्य राष्ट्रीय नेताओं के द्वारा अजमेर शरीफ दरगाह पर चादर चढ़ाना सद्भावना बढ़ाने वाला कार्य है जिसके लिए देश के लिए सभी राष्ट्रीय नेताओं को मुबारकबाद देनी चाहिए, हम उम्मीद करते हैं कि देश में अमन चैन एवं शांतिपूर्ण माहौल कायम रहे है, ताकि देश प्रगति करें और विश्व में भारत की साख और मजबूत हो।

– **वीरेंद्र जाटव**, नई दिल्ली

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से **responsemail.hindipioneer@gmail.com** पर भी भेज सकते है।

4.6 के देश में नौकरियां सृजित हुईं हैं देश में वित्त वर्ष 2023-24 के दौरान। जबकि वर्ष 2014 से वर्ष 2023 के बीच सेवा क्षेत्र में रोजगार वृद्धि की दर 36 प्रतिशत के आसपास रही है।

महाकुंभ

भारतीयता के बोध का महान प्रतीक

आज से महाकुंभ का आरंभ हो रहा है। समूचे विश्व से सनातन धर्मावलंबी यहां पहुंचने के लिए लालायित हैं। आज मानव समाज के सामने जो समस्याएं चुनौती बनकर खड़ी हैं, उनमें से अधिकांश का निराकरण कुंभ द्वारा किया जा सकता है। ज्ञान, भक्ति, आस्था, श्रद्धा के साथ-साथ जनमानस में सामाजिक एवं नैतिक चेतना जागृत करने वाले सांस्कृतिक अनुष्ठान कुंभ में एक संपूर्ण विमर्श दृष्टिगत होता है, जहां असंख्य नर-नारी आकुल भाव से धर्मामृत का रसपान करने आते हैं

प्रयागराज में आयोजित महाकुंभ का रात्रि के समय का विहंगम दृश्य। फाइल

डा. मुकेश कुमार शुक्ल
अध्येता, भारतीय संस्कृति

ऋग्वेद में प्रयाग को सित श्वेत धारा 'यमुना' का संधि स्थल माना जाता है जिसमें सरस्वती अंतःस्रोला रूप में विद्यमान रहती है। इस त्रिवेणी में सभी विरोधाभाषी रूप, रंग, विचार, भाव, पद और प्रतिष्ठा का संगम होता है। यहां विवाद-संवाद में, अलग-अलग अखाड़े-अखंड सनातन में, ब्रह्म का प्राण में, प्रकृति का पुरुष में, भक्ति का भाव में, जीवन का जन्म में, अभिमान का त्याग में, शोर का शांति में, समाजिकता का नैतिकता में, स्थूल का सूक्ष्म में, समरसता का समावेश में, धर्म का व्यक्तित्व में, जीवन का मोक्ष में, पेशाबई का जनमानस में, वैभव का कल्याणस में, संस्कृति का लोक में, अर्वाचीन का प्राचीन में, आधुनिकता का परंपरा में, आत्मबोध का मेले में सहजता से समन्वय होता है।

वैविध्यपूर्ण भारतवर्ष जो कि ज्ञान-विज्ञान की भूमि है, जो मुक्ति और मोक्ष की भूमि है, जो सभ्यता और संस्कृति की भूमि है जो आध्यात्म और धर्म की भी भूमि है, जो संस्कृतियों का मधुर संगीत है। जिसका निर्माण ही त्याग, तप, ज्ञान, योग, ध्यान, साधना, सत्संग, यज्ञ, भजन, तीर्थ, देवालय, लीला-मेला और कुंभ से हुआ हो, जो वसुधैव कुटुंबकम की मूर्तमान सत्ता संपूर्ण विश्व में एकमात्र है। ऐसे देश में ही 'महाकुंभ' का आयोजन संस्कार हो सकता है। यह किसी अन्य देश के सामर्थ्य के बाहर की बात है। वैश्विक स्तर पर अन्यन्य वृहद आयोजन होते हैं, किंतु धर्म, आस्था और संस्कृति का समन्वय केवल भारत में ही संभव होता है। क्योंकि भारतीय चिंतन का आधार, हमारी युगों पुरानी संस्कृति है। कुंभ की कल्पना मात्र मेले की नहीं है, अपितु यह एक बहुक्षेत्रीय सांस्कृतिक-संवाद-समन्वय की परियोजना है जिसका मूल उद्देश्य ज्ञान का महासंवाद स्थापित करना है। विद्वतजन परस्पर विचार-विमर्श से सर्वश्रेष्ठ 'ज्ञान' की स्थापना का प्रयास करते हैं और वहीं सामान्य जन इस सैद्धांतिक ज्ञान की स्थापना में व्यावहारिक रूप से सन्नद्ध हो जाते हैं परिणामस्वरूप एक कुंभ से (कुंभ-अर्धकुंभ) दूसरे कुंभ तक समाज में पर्याप्त परिवर्तन दिखाई देने लगता है। आयु की परिपक्वता के साथ विचार भी परिपक्व होने लगता है। इसीलिए वर्तमान महाकुंभ में समाज मन के संस्कार हेतु विचार कुंभ, युवा कुंभ, समरसता कुंभ, संस्कृति कुंभ, सद्भावना कुंभ, पर्यावरण-हरित कुंभ, नेत्र कुंभ, सर्वसमावेशी कुंभ के साथ ज्ञान महाकुंभ का आयोजन किया जा रहा है।

राष्ट्रीय एकता की भावना : सागर मंथन से अमृत और विष दोनों ही निकले थे। हर मंथन का यही परिणाम होता है जिसमें विष सदैव त्याज्य होता है। यदि समाज से विष का प्रक्षालन हो जाए तो एक स्वस्थ समाज का निर्माण होता है। इसीलिए समय सापेक्ष मंथन अति आवश्यक है जिससे शुद्ध, प्रफुल्ल एवं ऊर्जावान समाज की प्राप्ति होती है। साथ ही मंथन से प्राप्त 'अमृत' को भी समाज में पहुंचाना आवश्यक होता है, तभी संपूर्ण समाज का शुद्धिकरण संभव है। इसीलिए भारतीय इतिहास में देवों और दानवों के सागर मंथन की यह घटना निरंतर समय-समय पर होनी चाहिए। इसी निरंतरता के फलस्वरूप भारत में हिमालय से रामेश्वरम तक, बदरीनाथ से बालाजी तक, पुरी से द्वारिका तक, केरल से कच्छ तक, कश्मीर से कन्याकुमारी तक अखंडता, एकता और राष्ट्रीयता की अंतःस्रोला सरस्वती की तरह सदैव बहती रहती है। इस हेतुक तीर्थों का चयन और उनकी यात्राओं तथा सबके सामागम का केंद्र कुंभ सनातन धर्म का प्राणवायु है, क्योंकि आज भी सांस्कृतिक आक्रमण और घात-प्रतिघातों के बीच भी उन स्थलों के लगाव से जन्मी राष्ट्रीय एकता की भावना यथावत विद्यमान है।

भारत एक नाम मात्र नहीं वरन एक समाज, परंपरा, संस्कृति, विश्वास और कभी न क्षरित होने वाली आस्था की धरा है। आज विश्व भारत की और केवल कच्चा माल और श्रम के लिए नहीं उन्मुख है, वरन यह जान चुका है कि आज अप्रासंगिक होते वैश्विक संगठनों, राष्ट्रों को भारत का योग, धर्म, परिवारिक संरचना, आयुर्वेद, औषधि और जीवनशैली ही बचा सकती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा के रहस्य और हमारी विरासतें आज दुनिया के सामने एक वैकल्पिक दर्शन के रूप में खड़ी है। क्योंकि विकास और वैभव के साथ भारत त्याग, सुख, शांति और आनंद का वैश्विक केंद्र है, क्योंकि भारत में देने में सुख, दान में संतुष्टि, सहजता में आनंद और प्रकृति से संवाद का सुख आज भी विद्यमान है।

त्रिवेणी की रेती का मेला (कुंभ) सबको अपने प्रच्छालन का अवसर प्रदान करता है। यहां दान, प्रवचन, साधना, संवाद, धर्म, ध्यान, कल्पवास हेतु अगले 12 वर्षों तक जीवन जीने की कला सिखाता रहेगा जो भारत और भारतीयता का बोध को छह बरस में अर्द्धकुंभ, 12 बरस में लगने वाले महाकुंभ से सनातन संस्कृति के स्थापना का उत्स सतत बना रहेगा।

प्रणव विक्रम सिंह
अध्येता, भारतीय संस्कृति

पुण्य फलें, महाकुंभ चलें...

सनातन का सौंदर्य, आस्था का आह्वान, मानवता का महोत्सव, भारतीयता का स्पंदन और संस्कृतियों का समागम महाकुंभ आज से प्रारंभ हो रहा है। महाकुंभ, सनातन की सात्विक मर्यादाओं, उत्कृष्ट लोकतांत्रिक जीवन मूल्यों और संस्कृतिक एकत्व बोध की दिव्य अनुभूतियों की उत्सवधर्मी अभिव्यक्ति है। यह भारत की एकता का अमृत-कलश है, 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की झांकी है, हमारी सांस्कृतिक अस्मिता का प्रागणन स्मारक है।

'वसुधैव कुटुंबकम्' और 'नर सेवा ही नारायण सेवा' जैसे अनुपम दर्शन की सुगंध से सुवासित भारत की आध्यात्मिक चेतना का आह्वान महाकुंभ पूरे देश और मानवता के लिए एकता का संदेश है। यह स्वयं से संवाद का सौभाग्यशाली अवसर है। महाकुंभ एक स्नान पर्व मात्र नहीं है, यह हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जीवन के लिए 'मंथन महोत्सव' भी है। अपने जीवन व सांस्कृतिक मूल्यों और आधुनिक समय की आकांक्षताओं-अपेक्षाओं के मध्य सौहृदय स्थापित करने के मार्ग निर्धारण का माध्यम है। जीवन मूल्यों का अवमूल्यन किए बगैर अमृत्व जीवन जीने की कला सिखाने वाली एक पाठशाला है। यही 'मंथन' सनातन के अविराम प्रवाह का कारक भी है। मंथन है तो चिंतन है। चिंतन से दर्शन है। दर्शन है तो तर्क है। और जो तर्कसंगत है, वो स्वीकार्य है, यही भारतीय संस्कृति है।

महाकुंभ 'तर्क और तृप्ति' के मध्य की एक आनंदमयी यात्रा है। वस्तुतः इस जन-सामागम में एक 'लघु भारत' के दर्शन होते हैं। यहां से जो भी संदेश निकलेगा वह भारत के कोने-कोने में पहुंचेगा, समूचे विश्व को प्रभावित करेगा। श्रद्धालुओं की सुविधा व सुगमता हेतु पूरा महाकुंभ परिसर अत्याधुनिक और विश्वस्तरीय सुविधाओं से युक्त हो गया है। इस बार के आयोजन को दिव्य-भव्य-डिजिटल महाकुंभ कहना कहीं अधिक समीचीन होगा।

प्रयागराज महाकुंभ 2025 अद्भुत संयोगों और महान संदेशों का वाहक भी है। ध्यातव्य है, आजादी के अमृत-काल में आयोजित यह प्रथम दिव्य-भव्य महाकुंभ हमारी राष्ट्रीय चेतना के आत्दिय से दीप्त है। यह प्रथम महाकुंभ है, जब कोटि-कोटि जनों की आस्था के केंद्र प्रभु श्री रामलला अपने जन्मस्थान पर निर्मित भव्य-दिव्य-नव्य मंदिर में विराजमान हैं। इस सुखद संयोग से कई शताब्दियों की साध पूर्ण हुई है, व्रत फलित हुए हैं, संकल्प सिद्ध हुए हैं। यह महाकुंभ साक्षी है कि भारत का मुकुट मणि, कश्यप ऋषि की पावन धरा, शिव-शरदा की तपोभूमि कश्मीर हमारी एकता-अखंडता, संप्रभुता और शक्ति की दिव्य रश्मियों से जगमगा रहा है। अलगाववाद की अभावस्या सदैव के लिए समाप्त हो चुकी है। अनुच्छेद 370 निष्प्रभावी हो गया है। महाकुंभ की विशेषता इसकी विविधता में निहित है। यहां करोड़ों लोग, बिना किसी निमंत्रण के, स्वस्फूर्त भाव से एक साथ एकत्रित होते हैं। एक साथ, एक त्रिवेणी में आस्था की डुबकी लगाते हैं। किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं। भाषा, जाति, क्षेत्र, रंग और परिवेश आदि का भेद यहां अस्तित्वहीन हो जाता है। समरसता के तटबंधों के मध्य प्रवाहित आत्मीयता के जल में आस्था की डुबकी लगाकर सभी श्रद्धालु अटूट एकता के भाव-भाव में सराबोर हो जाते हैं। 'राष्ट्र प्रथम' की चेतना स्वतः मुखरित हो जाती है। इसलिए इसे 'एकता का महाकुंभ' भी कहा जाता है। प्राणि मात्र से प्रेम का संदेश देने वाली महान सनातन संस्कृति में किसी भी प्रकार के विभेद के लिए कोई स्थान नहीं है, महाकुंभ इस सर्वसमावेशी, समतामूलक विचार का 'जागृत महोत्सव' है।

लाखों संत, सहस्रों परंपराएं, सैकड़ों संप्रदाय, अनेक अखाड़े इस युगंतरकारी अमृत आयोजन में एक कलश के अंदर विशालता के साथ-साथ इसकी विविधता में निहित है। यहां करोड़ों लोग, बिना किसी निमंत्रण के, स्वस्फूर्त भाव से एक साथ एकत्रित होते हैं। एक साथ, एक त्रिवेणी में आस्था की डुबकी लगते हैं। किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं। भाषा, जाति, क्षेत्र, रंग और परिवेश आदि का भेद यहां अस्तित्वहीन हो जाता है। समरसता के तटबंधों के मध्य प्रवाहित आत्मीयता के जल में आस्था की डुबकी लगाकर सभी श्रद्धालु अटूट एकता के भाव-भाव में सराबोर हो जाते हैं। 'राष्ट्र प्रथम' की चेतना स्वतः मुखरित हो जाती है। इसलिए इसे 'एकता का महाकुंभ' भी कहा जाता है। प्राणि मात्र से प्रेम का संदेश देने वाली महान सनातन संस्कृति में किसी भी प्रकार के विभेद के लिए कोई स्थान नहीं है, महाकुंभ इस सर्वसमावेशी, समतामूलक विचार का 'जागृत महोत्सव' है।

लाखों संत, सहस्रों परंपराएं, सैकड़ों संप्रदाय, अनेक अखाड़े इस युगंतरकारी अमृत आयोजन में एक कलश के अंदर समाए जल की भांति सहभागी होते हैं। विविधता में समता और अनेकता में एकता का ऐसा दुर्लभ दृश्य विश्व में अन्यत्र कहीं भी, किसी भी आयोजन में नहीं दिखाई पड़ता है। यही अतुल्य दुर्लभता हमारी संस्कृति को विश्व में वरेण्य बनाती है। सारी दुनिया के जिज्ञासु, पर्यटक, आस्तिक-नास्तिक, विभिन्न उपासना पद्धति वाले लोग महाकुंभ में आने लगे हैं। 'अतिथि देवो भवः' भाव के साथ बाहें फैला कर तीर्थराज प्रयाग उनका स्वागत कर रहा है। पौधों, नस्लों और रंगभेद में डूबी दुनिया के लिए यह व्यवहार महान कौतुक है। अर्थ केंद्रित विश्व के लिए मोक्ष प्राप्ति हेतु दुनिया का सबसे बड़ा मानव सामागम एक अंतरराष्ट्रीय आश्चर्य है, जो हर क्षण उन्हें विस्मित कर रहा है। वास्तविक रूप में महाकुंभ 'सब भारतीय एक हैं' के जयघोष के साथ ही 'सभी मानव एक हैं' का उद्घोष भी है। समूचे विश्व के लिए 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' भाव से जुड़ने का आमंत्रण आह्वान भी है। यह अवसर है 'स्व से समष्टि' की और 'अहम् से वयम्' की अमृत यात्रा का पथिक बनने का। तभी तो मानवता पुकार रही है कि पुण्य फलें, महाकुंभ चलें...

कुंभ की ऋषि-मुनियों ने बाह्य ऊर्जा को आध्यात्मिक शक्तियों में रूपांतरित करने के स्थान के रूप में स्थापित किया, जहां ऊर्जा का केंद्रीकरण होता है। इस केंद्रीकरण के आध्यात्मिक ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय और सामाजिक महत्व भी हैं। न कोई निमंत्रण पत्र छपता-बंटता है, न कोई बुलावा भेजा जाता है, न कोई आग्रह-अनुरोध किया जाता है। इसके बावजूद जब भी कुंभ का आयोजन होता है, तब वहां भीड़-भक्ति-भावना का सैलाब कुंभ की उपादेयता स्वयं सिद्ध करती है।

संस्कृयते इति संस्कृतिः : 70 प्रतिशत गांवों में बसने वाले भारत का 'कुंभ' सनातन संस्कृति के उन्नयन का भी केंद्र है। बिरव जहां 'खाओ, पिओ और मौज करो' की संस्कृति का द्योतक है, वहीं सनातन संस्कृति 'सर्वे भवंतु सुखिनः' की प्रार्थना में वसुधैव कुटुंबकम् की अवधारणा का प्रतिस्थापन करती हुई अपने हर पूजा-प्रार्थन में 'विश्व का कल्याण हो, प्राणियों में सद्भावना हो, गोहत्या बंद हो,' इसके साथ 'भारतमाता की जय' का उद्घोष करता है। वास्तव में एक समाज विशेष के संपूर्ण व्यवहार, प्रतिमानों तथा समग्र जीवन जीने की पद्धति ही मिलकर संस्कृति का निर्माण करते हैं। व्यक्तियों के सामूहिक-सहचर्य से जीवन जीने की कला ही समानता-संस्कृति का विकास-निर्माण करती है। समाज संस्कृति की मूल उद्भावना ही यह है- 'संस्कृयते इति संस्कृतिः' अर्थात जो सुसंस्कृत कर दे, परिष्कृत कर दे, जो शोधन करे, वही संस्कृति है। तात्पर्य यह है कि जो जीवन मूल्य, जीवन शैली, आचार-विचार और संस्कार जीवन को सही दिशा उचित विकास और परिपूर्णता का आयाम प्रदान करें, वही संस्कृति है।

पूर्व आचार्यों ने देश की संस्कृति को एकसूत्र में पिरोने हेतु पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण के मध्य समन्वय बोध हेतु कुंभ महापर्व का आयोजन करते रहते हैं जिसमें विभिन्न भौगोलिकता, सामाजिकता, ऐतिहासिकता और भाव-व्यवहार के समन्वय हेतु नियम-परंपरा का निर्माण-नियमन करने से यह सनातन संस्कृति अक्षुण्ण बनी हुई है। नवशक्ति के जागरण से राष्ट्र शक्ति की प्रत्येक धमनी में विशेष धर्म-धारा प्रवाहित होने का संगम कुंभ है, जो वैश्विक संकट का निराकरण अमृत बांटता है।

राष्ट्रीय एकता की भावना : सागर मंथन से अमृत और विष दोनों ही निकले थे। हर मंथन का यही परिणाम होता है जिसमें विष सदैव त्याज्य होता है। यदि समाज से विष का प्रक्षालन हो जाए तो एक स्वस्थ समाज का निर्माण होता है। इसीलिए समय सापेक्ष मंथन अति आवश्यक है जिससे शुद्ध, प्रफुल्ल एवं ऊर्जावान समाज की प्राप्ति होती है। साथ ही मंथन से प्राप्त 'अमृत' को भी समाज में पहुंचाना आवश्यक होता है, तभी संपूर्ण समाज का शुद्धिकरण संभव है। इसीलिए भारतीय इतिहास में देवों और दानवों के सागर मंथन की यह घटना निरंतर समय-समय पर होनी चाहिए। इसी निरंतरता के फलस्वरूप भारत में हिमालय से रामेश्वरम तक, बदरीनाथ से बालाजी तक, पुरी से द्वारिका तक, केरल से कच्छ तक, कश्मीर से कन्याकुमारी तक अखंडता, एकता और राष्ट्रीयता की अंतःस्रोला सरस्वती की तरह सदैव बहती रहती है। इस हेतुक तीर्थों का चयन और उनकी यात्राओं तथा सबके सामागम का केंद्र कुंभ सनातन धर्म का प्राणवायु है, क्योंकि आज भी सांस्कृतिक आक्रमण और घात-प्रतिघातों के बीच भी उन स्थलों के लगाव से जन्मी राष्ट्रीय एकता की भावना यथावत विद्यमान है।

भारत एक नाम मात्र नहीं वरन एक समाज, परंपरा, संस्कृति, विश्वास और कभी न क्षरित होने वाली आस्था की धरा है। आज विश्व भारत की और केवल कच्चा माल और श्रम के लिए नहीं उन्मुख है, वरन यह जान चुका है कि आज अप्रासंगिक होते वैश्विक संगठनों, राष्ट्रों को भारत का योग, धर्म, परिवारिक संरचना, आयुर्वेद, औषधि और जीवनशैली ही बचा सकती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा के रहस्य और हमारी विरासतें आज दुनिया के सामने एक वैकल्पिक दर्शन के रूप में खड़ी है। क्योंकि विकास और वैभव के साथ भारत त्याग, सुख, शांति और आनंद का वैश्विक केंद्र है, क्योंकि भारत में देने में सुख, दान में संतुष्टि, सहजता में आनंद और प्रकृति से संवाद का सुख आज भी विद्यमान है।

त्रिवेणी की रेती का मेला (कुंभ) सबको अपने प्रच्छालन का अवसर प्रदान करता है। यहां दान, प्रवचन, साधना, संवाद, धर्म, ध्यान, कल्पवास हेतु अगले 12 वर्षों तक जीवन जीने की कला सिखाता रहेगा जो भारत और भारतीयता का बोध को छह बरस में अर्द्धकुंभ, 12 बरस में लगने वाले महाकुंभ से सनातन संस्कृति के स्थापना का उत्स सतत बना रहेगा।

पोस्ट

अमेरिका जैसा शक्तिशाली और साधन संपन्न देश भी तमाम कोशिशों के बावजूद आग पर प्रभावी रूप से काबू नहीं पा सका है। यह आग्रहों के समक्ष मजबूर और सरकारों की सीमाओं को जाहिर करता है। शैलेश सिंह परिहार@PShaileshsingh

फाइल आइज देशों की स्थिति बहुत दिलचस्प दिख रही है। ट्रंप जहां कनाडा को धमका रहे हैं तो मस्क ब्रिटेन को चेतावनी देने में लगे हैं। वहीं, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड खामोशी से यही आस लगाए बैठे होंगे कि ट्रंप एवं मस्क की जोड़ी का अगला निशाना वह न बने।
मिन्हाज मर्चेंट@MinhazMerchant

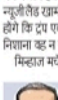

आग कितनी देर काम करती है, उससे महत्वपूर्ण है कि जो काम कर रहे है उसे ठीक से कर पा रहे है या नहीं? काम में आनंद आ रहा हो तो काम करने वाला घड़ी नहीं देखता। काम अगर बोझ है तो हफ्ते में एक दिन काम भी पहाड़ चढ़ने जैसा है।
अखिलेश शर्मा@akhileshsharma1

शीशा और रिश्ता कभी ही नाजुक होते हैं। फर्क बस इतना है-शीशा 'गलती' से टूटता है और रिश्ता 'गलतफहमी' से।
हर्ष गोयनका@hvgoenka

जागरण जनमत

कल का परिणाम

शराब घोटाले पर कैग की रिपोर्ट सामने आने से 'आप' को नुकसान होगा?

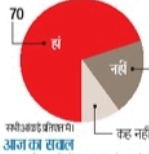

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

क्या दुर्घटनाओं में जान बचाने वाले के लिए पुरस्कार-प्रोत्साहन राशि बढ़ाए जाने से सड़क सुरक्षा की तस्वीर बेहतर होगी?

परिणाम जागरण डाटरपेंट सर्वेक्षण के पाठकों का मत है।

जनपथ

हवा हवाई योजना हवा हवाई काम,
फिर भी दिल्ली है फिदा ते मालिक श्रीराम।
तो मालिक श्रीराम हमेशा रखा लेना-देना,
दे दो जाकर वोट जिसे तुम्याहो देना।
वीमारी इस बार अगरना गई भगाई,
तो दिल्ली का भाग्य समझिए हवा हवाई!
- ओमप्रकाश तिवारी

डा. सुनील गुप्ता
संपादकीय प्रभारी, बिलासपुर

छत्तीसगढ़ डायरी

पूरे होते संकल्प और राजनीतिक चुनौतियां

छत्तीसगढ़ में दो बड़े चुनाव की तैयारी राज्य सरकार और राज्य निर्वाचन आयोग के स्तर पर साथ-साथ चल रही है। विधानसभा चुनाव के बाद स्थानीय निकाय और त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव को लेकर शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में हलचल तेज हो जाती है। या यूं कहें कि विधानसभा चुनाव संपन्न होते और राज्य में क्षत्रपों के सत्ता संभालते ही निकाय और पंचायत चुनाव की उलटी गिनती शुरू हो जाती है। इसी अंदाज में चुनावी संभावनाएं देखने और टटोलने वाले अपनी तैयारियों में जुट जाते हैं।

आमतौर पर विधानसभा चुनाव के बाद पहले नगरीय निकाय और तकरीबन छह महीने बाद त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव होते हैं। इस बार ऐसा नहीं है। स्थानीय निकाय और त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव में छत्तीसगढ़ की भाजपा सरकार 'एक राज्य, एक चुनाव' की अवधारणा को पूरा करती दिखाई दे रही है। मतलब साफ है कि छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के बाद पहली बार निकाय और पंचायतों के चुनाव साथ-साथ होंगे। इससे सरकारी खजाने पर बोझ कम होगा। दोनों चुनाव साथ-साथ होने से धन का अपव्यय बचेगा। समय की बचत के साथ ही शहर से लेकर गांव एक साथ चुनावी मोड में नजर आएंगे। चुनाव का माहौल शहर से लेकर गांव तक रहेगा। राज्य सरकार अपने इस संकल्प को ईमानदारी के साथ पूरा करती दिखाई दे रही है। संकल्प पूरा होने के साथ ही राज्य सरकार के सामने चुनौतियां भी कम नहीं हैं। पांच साल प्रदेश की राजनीतिक परिस्थितियों को पीछे जाकर देखें, तब राज्य में कांग्रेस की सरकार थी। नगरीय निकायों से लेकर जिला पंचायत व पंचायतों में कांग्रेस का कब्जा था। विपक्ष की धारदार भूमिका के चलते भाजपा कुछ कर नहीं पाई या फिर कुछ करने की स्थिति में अपने आपको नहीं ला पाई। इस बार राजनीतिक परिस्थितियां एकदम अलग हैं। राज्य में भाजपा की सरकार है। सत्ता में होने का लाभ है तो कुछ नुकसान भी। राज्य सरकार ने अपना एक साल का कार्यकाल पूरा कर लिया है। विपक्ष भी अब आक्रामक मुद्रा में दिखाई दे रहा है। आरोप-प्रत्यारोप का दौर चल रहा है। ईडी, इंजीनियरिंग और सीबीआइ की कार्रवाई भी तेज हो गई है। सीजी पीएससी फर्जीवाड़े में शनिवार को ही गिरफ्तारियां हुईं। राज्य सरकार जीरो टालरेंस की अपनी नीति पर सधे पर मजबूत कदमों से आगे बढ़ रही है।

नगरीय निकाय चुनाव के संदर्भ में बैठक करते बिलासपुर के कलेक्टर अवनीश शरण। जागरण प्रिंटमीडिया

धान खरीदी का मुद्दा : समर्थन मूल्य पर धान खरीदी का काम चल रहा है। प्रदेशभर से यह सूचना मिल रही है कि खरीदी केंद्रों में समितियों के अधिकारी किसानों के साथ मनमानी कर रहे हैं। तय मात्रा से प्रति बोरा डेढ़ से दो किलोग्राम धान ज्यादा तौल रहे हैं। अगर ऐसा हो रहा है और किसानों की शिकायत भी है तो यह गंभीर बात है। धान के सूख जाने के नाम पर किसानों की जेब पर यह सेंधे तौर पर डाका डालने का काम कर रहे हैं। किसानों के इसी गुस्से को भुनाने की कोशिश में कांग्रेस जुटी हुई है। कांग्रेस ने निगरानी समिति का गठन भी कर दिया है। समिति किसानों के पास जा रही है और उनकी परेशानी सुन रही है। कांग्रेस पंचायत चुनाव में इसे मुद्दा बनाने की रणनीति पर काम करती दिख रही है। भाजपा के रणनीतिकारों के साथ ही सत्ता में भागीदारी निभाने वालों की नजरें भी इस ओर लगी हुई हैं। डैमेज कंट्रोल की कोशिश में सत्ता और संगठन जुटते नजर आ रहे हैं। सवाल यह है कि किसानों के गुस्से को सत्ताधारी दल कितना और किस सीमा तक कम कर पाएगा। किसानों की मनाने में किस हद तक सफलता मिलेगी, यह भी देखने वाली बात होगी। संकल्प पूरा होने के साथ ही सरकार और भाजपा के लिए आने वाला चुनाव किसी चुनौती से कम नहीं है।

सीएम व अडाणी के बीच समझौता : रविवार को मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय और अडाणी समूह के चेयरमैन गौतम अडाणी के बीच महत्वपूर्ण चर्चा हुई। इसमें छत्तीसगढ़ में समूह की ओर से अधिशेष निवेश को लेकर बैठक हुई। बिजली और सीमेंट संयंत्र के विस्तार में समूह के चेयरमैन ने छत्तीसगढ़ में बिजली संयंत्रों के विस्तार के लिए 60 हजार करोड़ रुपये के निवेशित निवेश की घोषणा की। अडाणी ने राज्य में समूह के सीमेंट संयंत्रों के विकास और विस्तार के लिए पांच हजार करोड़ रुपये की प्रतिबद्धता जताई है। वहीं, राज्य सरकार को सौरऊर्जा के तहत शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, कौशल विकास और पर्यटन में पहल का समर्थन करने के लिए अगले चार वर्षों में 10 हजार करोड़ रुपये के निवेश का आश्वासन भी दिया। बैठक में रक्षा संबंधी उपकरणों के निर्माण और छत्तीसगढ़ में डाटा सेंटर तथा ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर की स्थापना में सौभावित सहयोग पर चर्चा की गई। इस महत्वपूर्ण निवेश से आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलने, रोजगार के अवसर पैदा होने और राज्य के समग्र विकास को पर लगने की उम्मीद है।

मंथन

प्रह्लाद सबनानी
आर्थिक मामलों के जानकार

मध्यवर्ग को मिले राहत

अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करने में सर्वाधिक भूमिका मध्यवर्ग की होती है। ऐसे में इस वर्ग के लोगों के लिए कुछ विशेष उपाय किए जाने चाहिए, ताकि आर्थिकी की तीव्र गति कायम रहे

किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को गति देने में मध्यवर्गीय परिवारों की प्रमुख भूमिका रहती है। देश में ही निर्मित होने वाले विभिन्न उत्पादों की मांग इन्हीं परिवारों के माध्यम से निर्मित होती है। गरीबी रेखा के नीचे जीवन-यापन कर रहे परिवार जब मध्यवर्गीय परिवारों की श्रेणी में शामिल होते हैं तो उन्हें नया स्कूटर, नया फ्रिज, नया एयर कंडिशनर, नया टीवी एवं इसी प्रकार के कई नए पदार्थों (उत्पादों) की आवश्यकता महसूस होती है। नए मकानों की मांग भी इनके बीच से ही निर्मित होती है। इसलिए यह कहा जाता है कि जिस देश में मध्यवर्गीय परिवारों की संख्या जितनी तेजी से बढ़ती है, उस देश का आर्थिक विकास भी उतनी ही तेज गति से आगे बढ़ता है।

भारत में भी हाल के वर्षों में मध्यवर्गीय परिवारों की संख्या में भारी वृद्धि दर्ज हुई है। परंतु मुद्रास्फीति, कर का बोझ एवं इन परिवारों की आय में वृद्धि दर में आ रही कमी के चलते इन परिवारों की खर्च करने की क्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ा है, जिससे कई कंपनियों का यह आकलन सामने आया है कि विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में उपभोग की जाने वाली वस्तुओं की मांग में कमी दृष्टिगोचर हुई है। विशेष रूप से उपभोक्ता वस्तुओं (एफएमसीजी) के क्षेत्र में उत्पादन करने वाली कंपनियों का इस संदर्भ में आकलन बेहद चौंकाने वाला है। वित्तीय वर्ष 2023-24 की द्वितीय तिमाही में इन कंपनियों द्वारा उत्पादित उपभोक्ता वस्तुओं की बिक्री एवं लाभप्रदता में भी कमी दिखाई दी है।

गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले परिवारों के लिए केंद्र सरकार एवं विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा चलाई जा रही विभिन्न सहायता योजनाओं का लाभ अब सीधे ही इन परिवारों को पहुंचने लगा है। किसानों के खातों में सहायता राशि सीधे जमा की जा रही है। विभिन्न राज्यों द्वारा महिलाओं के खातों में राशि जमा की जा रही है। इन परिवारों के सदस्यों को रोजगार के नए अवसर भी उपलब्ध होने लगे हैं, जिससे इस श्रेणी के परिवारों में से कई परिवार अब मध्यवर्ग में शामिल हो रहे हैं।

साथ ही, हाल ही के वर्षों में देश में रोजगार के करोड़ों नए अवसर निर्मित हुए हैं, जिससे गरीब वर्ग के परिवार मध्यम वर्ग में शामिल हुए हैं। वर्ष 2004 से वर्ष 2014 के बीच एक दशक में रोजगार में लगभग सात प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई थी अर्थात इस दौरान केवल 2.9 करोड़ अतिरिक्त नौकरियां सृजित हो सकीं थी, जबकि वर्ष 2014 से वर्ष 2024 के बीच 17.19 करोड़ अतिरिक्त नौकरियां सृजित हुईं हैं, यह लगभग छह गुना से अधिक की वृद्धि दर्शाता है। पिछले केवल एक वर्ष अर्थात वित्तीय वर्ष 2023-24 के बीच ही देश में लगभग 4.6 करोड़ नौकरियां सृजित हुईं हैं। वर्ष 2004 से वर्ष 2014 के बीच सेवा के क्षेत्र में रोजगार 25 प्रतिशत की दर से बढ़ा था, जबकि वर्ष 2014 से वर्ष 2023 के बीच इसमें 36 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। इस सबका असर बेरोजगारी की दर में कमी के रूप में देखने में आया है। देश में बेरोजगारी की दर वर्ष 2017-18 के छह प्रतिशत से वर्ष 2023-24 में घटकर 3.2 प्रतिशत रह गई है। इसका सीधा असर कामकाजी आबादी अनुपात पर भी पड़ा है जो वर्ष 2017-18 के 46.8 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2023-24 में 58.2 प्रतिशत पर पहुंच गया है।

यदि किसी देश में मुद्रास्फीति की दर लगातार लंबे समय तक उच्च स्तर पर बनी रहे एवं नागरिकों की आय में वृद्धि दर मुद्रास्फीति में हो रही वृद्धि दर से कम रहे तो इसका सीधा असर मध्यवर्गीय परिवार के बचत एवं खर्च करने की क्षमता पर पड़ता है। यदि मध्यवर्गीय परिवार के खर्च करने की क्षमता कम होगी तो बाजार में विभिन्न उत्पादों की मांग भी कम होगी इससे विभिन्न कंपनियों द्वारा उत्पादित वस्तुओं की बिक्री भी कम होगी। अतः वित्तीय वर्ष 2024-25 के बजट से यह अपेक्षा की जानी चाहिए कि इस प्रकार के प्रयास किए जाएंगे जिससे मुद्रास्फीति की दर देश में कम बनी रहे एवं मध्यवर्गी की आय में वृद्धि हो। साथ ही, मध्यवर्गीय परिवारों की आय पर लगाए जाने वाले आय कर में भी कमी की जानी चाहिए।

बाजार में मांग बनी रहे, इसलिए मध्यवर्ग को आयकर में मिले राहत। फाइल

बैंकों द्वारा प्रदान किए जा रहे ऋणों पर ब्याज दरों में कमी की घोषणा द्वारा भी मध्यवर्गीय परिवारों को कुछ हद तक राहत पहुंचाई जा सकती है। ऋण पर ब्याज दरों में कमी करने से मध्यवर्गीय

दैनिक जागरण
एक सच सौ झूठ बोलने से बचा लेता है

बांग्लादेश की लीपापोती

बांग्लादेश की अंतरिम सरकार का यह कहना सच्चाई पर पर्दा डालने जैसा ही है कि हिंदुओं एवं अन्य अल्पसंख्यकों पर हमले की घटनाएं राजनीति से प्रेरित हो अधिक थीं। ऐसा कहकर बांग्लादेश सरकार केवल भारत ही नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय को भी गुमराह करने की कोशिश कर रही है, लेकिन वह इसमें सफल होने वाली नहीं है। इसलिए नहीं, क्योंकि हिंदू-बौद्ध एकता परिषद की शिकायत के आधार पर बांग्लादेश पुलिस ने जो जांच की, उसकी रपट ही अंतरिम सरकार की पोल खोल रही है। बांग्लादेश पुलिस की जांच रपट के आधार पर अंतरिम सरकार ने यह तो कह दिया कि हिंदुओं एवं अन्य अल्पसंख्यकों पर हमले की अधिकतर घटनाएं सांप्रदायिक नहीं, बल्कि राजनीतिक प्रकृति की थीं, लेकिन वह यह स्पष्ट करने की स्थिति में नहीं कि आखिर जब 350 मामलों की जांच शेष है तो फिर वह किसी निष्कर्ष पर कैसे पहुंच रही है। प्रश्न यह भी है कि यदि हत्या, हिंसा, लूट और आगजनी की घटनाएं राजनीति प्रेरित थीं तो क्या उनकी गंभीरता कम हो जाती है। इसकी भी अनदेखी नहीं की जा सकती कि अल्पसंख्यकों के दमन और उत्पीड़न के आरोप में गिरफ्तार किए गए लोगों की संख्या कहीं अधिक कम है। इस पर हैरत नहीं कि अपनी पुलिस की रपट के आधार पर अंतरिम सरकार ने इस नतीजे पर भी पहुंचना सुविधाजनक समझा कि 150 से अधिक मामलों में कोई प्रमाण नहीं मिल सके।

यह मानने के अच्छे-भले कारण हैं कि बांग्लादेश की अंतरिम सरकार देश-दुनिया को यह बताने के लिए लालायित है कि उसके यहां सब कुछ सही है, लेकिन इससे यह छिपने वाला नहीं है कि वह अपने यहां के हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यकों के उत्पीड़न की घटनाओं पर लीपापोती कर रही है। बांग्लादेश सरकार कुछ भी कहे, सच यही है कि वहां के हिंदू और अन्य अल्पसंख्यक कट्टरपंथियों के निशाने पर हैं। भारत सरकार के लिए यही उचित होगा कि वह अल्पसंख्यकों पर हमले के मामले में बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के निष्कर्ष को खारिज करे और उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने के उपायों की जरूरत पर बल दे। ऐसा करना इसलिए आवश्यक है, क्योंकि अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार मोहम्मद यूनुस कट्टरपंथी तत्वों और जिहादियों के हाथों में खेल रहे हैं। यह किसी से छिपा नहीं कि अंतरिम सरकार ने अनेक जिहादियों और आतंकियों को जेल से रिहा किया है और अल्पसंख्यकों के खिलाफ जहर उगलने वाले चरमपंथी संगठनों को पाबंदी से मुक्त भी किया है। भारत इसकी भी अनदेखी नहीं कर सकता कि अंतरिम सरकार ने किस तरह भारत को चिढ़ाने के लिए पाकिस्तान से मेलजोल बढ़ाया है। चिंताजनक केवल यह नहीं है कि यूनुस और उनके सलाहकार भारत विरोधी भावनाओं को भड़काने का काम कर रहे हैं, बल्कि वे ऐसे कहीं कोई संकेत नहीं दे रहे हैं कि उनकी दिलचस्पी शीघ्र चुनाव कराने की है।

चिंताजनक तस्वीर

पंजाब से नशे का दाग मिटाने के लिए सरकार भरसक प्रयास कर रही है, लेकिन नए आंकड़ों ने चिंताजनक तस्वीर पेश की है। मादक पदार्थों की तस्करी एवं राष्ट्रीय सुरक्षा पर आयोजित क्षेत्रीय सम्मेलन में सरकार ने बताया है कि बड़ी संख्या में प्रदेश के युवा चरस, कोकेन, हेरोइन और अन्य मादक पदार्थों की चपेट में हैं। यह चिंता का विषय है, क्योंकि नशा समाज को खोखला कर देता है। नशे के कारण ही आपराधिक घटनाएं बढ़ती हैं। इसका एक प्रमाण गत दिवस बठिंडा में मिल भी चुका है, जहां नशा बेचने का विरोध करने पर तस्करों ने लोगों के घर तक जला दिए। पुलिस भारी मात्रा में नशा बरामद कर तस्करों को सलाखों के पीछे भी भेज रही है, फिर भी नशे का दानव बढ़ता ही जा रहा है। पुलिस को प्रदेश के माथे पर लगा नशे का दाग मिटाने के लिए और भी कड़ी कार्रवाई करनी चाहिए। यह भी सामने आ चुका है कि नशा तस्कर जेलों में बैठकर भी अपना नेटवर्क चलाने में कामयाब हो जाते हैं। सबसे पहले तो वर्दी में छिपी काली भेड़ों को पहचान करना आवश्यक है। प्रदेश में एक विशेष एनडीपीएस अदालत बनाने की भी जरूरत है, ताकि वहां नशा तस्करों के खिलाफ दर्ज मामलों की जल्द सुनवाई हो और अपराधियों को जेल भेजा जा सके। वहीं नशा खत्म करने के लिए लोगों के सहयोग की भी आवश्यकता है। अगर लोग आगे नहीं आएंगे तो नशा समाज से कभी समाप्त नहीं हो पाएगा।

पुलिस भारी मात्रा में नशा बरामद कर तस्करों को सलाखों के पीछे भेज रही है, फिर भी नशे का दानव बढ़ रहा है

सांस्कृतिक समागम का शिखर

हृदयनारायण दीक्षित

भारतीय संस्कृति एवं परंपरा में प्रतीक गढ़ने और उन्हें लोकप्रिय बनाने की अद्भुत क्षमता है। संस्कृति, परंपरा, धर्म-दर्शन का ऐसा ही प्रतीक है महाकुंभ

अवधेश राजपूत

महाकुंभ अंतरराष्ट्रीय चर्चा का विषय है। प्रयागराज में विश्व का सबसे बड़ा मेला सजा है। लाखों श्रद्धालु कड़ाके की ठंड के बावजूद कुंभ का आनंद ले रहे हैं। महाकुंभ देश-विदेश के अनगिनत श्रद्धालुओं की जिज्ञासा है। भारत का चित्त और विवेक सनातन धर्म से प्रेरित है। इसी धर्म से संचालित भारतीय संस्कृति हजारों वर्ष के अनुभवों का परिणाम है। संस्कृति और परंपरा अंधविश्वास नहीं हैं। ये विशेष प्रकार के इतिहास हैं। इतिहास में शुभ और अशुभ साथ-साथ चलते हैं। शुभ को राष्ट्रजीवन से जोड़ना और लगातार संस्कारित करना संस्कृति है। राष्ट्रजीवन में बहुत कुछ करणीय है और बहुत कुछ अकरणीय। यहां धर्म, दर्शन, संस्कृति, परंपरा और आस्था राष्ट्रजीवन के नियामक तत्व हैं। ये पांच तत्व राष्ट्रजीवन को ध्येय और शक्ति देते हैं। कुंभ मेला इन्हीं पांचों तत्वों की अभिव्यक्ति है। लाखों श्रद्धालुओं का बिना किसी निमंत्रण प्रयाग पहुंचना आश्चर्य पैदा करता है। करोड़ों लोग आस्थावश आए हैं। तमाम जिज्ञासावश आए हैं और लाखों आश्चर्यवश।

महाकुंभ समागम संस्कृति प्रेमियों का महाउत्सव है। पंडित जवाहरलाल नेहरू भी कुंभ पर आश्चर्यचकित थे। उन्होंने 'डिस्कवरी आफ इंडिया' में लिखा, 'वास्तव में यह समग्र भारत था। कैसा आश्चर्यजनक विश्वास जो हजारों वर्ष से इनके पूर्वजों को देश के कोने-कोने से खींच लाता है।' कुंभ स्थल प्रयाग संगम की भूमि भी है। संगम का अर्थ है मिलना। प्रयाग तीन नदियों का संगम है। यह यज्ञ, साधना, योग और आत्मदर्शन का पुण्य क्षेत्र रहा है। यहां गंगा, यमुना और सरस्वती नदियां गले मिलती हैं। ऋग्वेद के ऋषि 'इमे गंगे यमुने सरस्वती..' गाकर स्तुति करते हैं। कुछ लिबरल छद्म सेक्युलर सरस्वती को स्वीकार नहीं करते। सरस्वती का अस्तित्व सिद्ध हो चुका है। ऋग्वेद में सरस्वती को नदीतमा कहा गया है। तीनों संगम में मिलती हैं। तब तप, यज्ञ और योग की तपोभूमि प्रयाग हो जाती है और प्रयाग हो जाता है तीर्थराज।

प्रयाग सामान्य नगर क्षेत्र नहीं है। सरकारें खूबसूरत नगर बना सकती हैं, लेकिन प्रयाग जैसा तीर्थ कोई भी सत्ता नहीं बना सकती। प्रयाग जैसे तीर्थ हजारों वर्ष की तप साधना में विकसित होते हैं। गजब की है यह पुण्यभूमि। पाणिनि ने यहीं पर अष्टाध्यायी लिखी थी। इंडोनेशिया के प्रसिद्ध ग्रंथ 'कवविन' में भी प्रयाग कुंभ की महिमा है। तुलसीदास इसे, 'क्षेत्र अगम गढ़, गाढ़ सुहावा' कहकर काल का वर्णन करते हैं। मार्क ट्वेन ने 1895 का कुंभ देखकर लिखा था, 'आश्चर्यजनक श्रद्धा की शक्ति ने बूढ़ों, कमजोरों, युवकों को असुविधाजनक यात्रा में खींचा, इसका कारण क्या है? क्या प्रेम है या कोई भय? मैं नहीं जानता। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। यह अकल्पनीय है। सुंदरतम है।' बायसराय लिनलिथगो ने 1942 का विशाल कुंभ समागम देखते हुए पंडित मदनमोहन मालवीय से पूछा कि इतने लोगों को निमंत्रित करने में बड़ा धन और श्रम लगा होगा। मालवीय जी ने उन्हें बताया कि सिर्फ दो पैसे का पंचांग देखकर ही यहां लाखों लोग आए हैं।

कुंभ आस्था है। सांस्कृतिक प्रतीक है। वेदों, उपनिषदों और पुराणों में भी इसका उल्लेख है। सूर्य को 12 राशियों में एक राशि का नाम कुंभ है। मांगलिक कार्यों एवं तप साधना के दौरान सर्वप्रथम कुंभ कलश की स्थापना होती है। पुराणों के अनुसार कलश के मुख में विष्णु हैं। ग्रीवा में रुद्र और मूल में ब्रह्मा हैं। सप्तसिंधु, सप्तद्वीप ग्रह, नक्षत्र और संपूर्ण ज्ञान भी कुंभ कलश में है। पौराणिक आख्यान के अनुसार एक समय सागर मंथन हुआ था। मंथन से प्राप्त विष महादेव शंकर पी गए, लेकिन मंथन से निकले अमृत कुंभ पर युद्ध हो गया। स्कंद पुराण के अनुसार अमृत घट चार जगह हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक में गोदावरी के तट पर गिरा था। इन्हीं चार स्थानों पर कुंभ के आयोजन होते हैं। अमृत मिले तो अनंतकाल का जीवन। विश्व के किसी भी विद्वान ने अमृत की चर्चा नहीं की थी। केवल भारतीय दृष्टि में ही अमृत की प्यास है। सूर्य अमर हैं। उगते हैं। अस्त होते हैं। मास, वर्ष, युग बीतते हैं। नदियां प्रवाहमान रहती हैं। कुंभ मेले में सहस्रों साधु, योगी और मंत्रवेत्ता आए हैं। उनके चित्त में घर-गृहस्थी की चिंता नहीं है, लेकिन लाखों गृहस्थ भी समागम में हैं। सबका विश्वास है कि कुंभ में स्नान और पुण्यार्जन जीवन को सुंदर और समृद्ध बनाएगा।

संस्कृति ही प्रत्येक देश की साधना, उपासना और कर्म को गति देती है। संस्कृतियों की भिन्नता प्रत्येक राष्ट्र की पहचान होती है। डा. वासुदेव शरण अग्रवाल ने लिखा है, 'भारत में अध्यात्म को, यूनान में सौंदर्य तत्व को, रोम में न्याय और दंड व्यवस्था को, चीन में विराट जीवन के आधारभूत नियमों को, ईरान ने सत् और असत् के द्वंद्व को, मिस्र में भौतिक जीवन की व्यवस्था और संस्कार को और सुमेर जातियों ने दैवीय दंड विधान को अपनी दृष्टि से आदर्श रूप में स्वीकार किया है और उनकी प्रेरणा से संस्कृति का विकास किया है।' भारतीय संस्कृति और परंपरा में प्रतीक गढ़ने और प्रतीकों को लोकप्रिय बनाने की अद्भुत क्षमता है। संस्कृति, परंपरा, धर्म और दर्शन का प्रतीक है कुंभ। ऐसे प्रतीक अल्प समय में नहीं बनते। ओठम् संपूर्णता का प्रतीक है। स्वास्तिक प्रतीक भी लोकप्रिय है। मूर्तियां और मंदिर भी ऐसे ही प्रतीक हैं।

कुछ इतिहासकारों का मत है कि कुंभ मेला सिंधु घाटी सभ्यता से भी पुराना है। चीनी यात्री ह्वेन त्सांग ने सम्राट हर्षवर्धन के शासन में संपन्न कुंभ मेले का वर्णन किया है। कुंभ मेलों में शास्त्रार्थ होते थे। आध्यात्मिक दार्शनिक विषयों पर चर्चा होती थी। शंकराचार्य ने इस परंपरा को आगे बढ़ाया था। कुंभ सारी दुनिया को विश्वबंधुत्व, लोककल्याण एवं विश्वशांति का संदेश दे रहा है। मेले का संदेश सुस्पष्ट है। धर्म, परंपरा, संस्कृति, दर्शन और आस्था के संरक्षण संवर्धन के लिए हम भारत के लोगों को अतिरिक्त श्रम करना चाहिए।

(लेखक उत्तर प्रदेश विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष हैं)
response@jagran.com

पुरानी गलतियों को सुधारने का समय

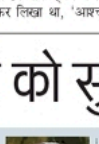

आशुतोष झा

देश जब आर्थिक तरक्की के बड़े सपने बुन रहा है तो जरूरी है कि मंदिर-मस्जिद के मुद्दों से एकजुट होकर निपटें

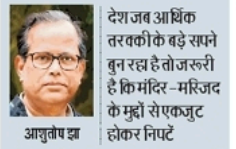

प्रगति के लिए आवश्यक है सामाजिक सौहार्द। फाइल

सुप्रीम कोर्ट में 1991 के पूजा स्थल कानून को लेकर लगभग एक दर्जन याचिकाएं लंबित हैं, जिसमें 15 अगस्त, 1947 के बाद सभी धार्मिक स्थलों को यथास्थिति में बरकरार रखने की बात कही गई है। कुछ याचिकाओं में मांग है कि इस कानून को रद किया जाए, क्योंकि जहां मंदिर के साक्ष्य मिल रहे हैं, उसे कैसे अनदेखा किया जा सकता है। ऐतिहासिक गलतियों को सुधरना जीवंत संस्कृति का नियम है। वहीं कई मुस्लिम पक्षों की मांग है कि 1991 के कानून का सख्ती से पालन हो। राजनीतिक दल भी बंटे हुए हैं। इसी बीच राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत की एक टिप्पणी बहुत वायरल हो गई। परोक्ष रूप से संभल की घटना पर ही टिप्पणी करते हुए उन्होंने कहा कि इस तरह हर मस्जिद के नीचे मंदिर ढूंढ़ने की कोशिश नहीं होनी चाहिए। उन्होंने इसे कुछ लोगों के व्यक्तिगत लाभ से जोड़ा। उन्होंने पहले भी कहा था कि अगर हर जगह जमीन की खोदाई होने लगी तो हर जगह शिवाला निकलेगा। भारतीय सांस्कृतिक इतिहास को देखते हुए इससे इन्कार भी नहीं किया जा सकता है, क्योंकि यहां तो हजारों वर्षों से हर घर में पूजा स्थल की परंपरा रही है। उनकी टिप्पणी पर संत समाज ही भड़क गया। कहा गया कि भागवत हिंदुओं के अनुशासक नहीं हैं और जगद्गुरु रामभद्राचार्य ने इसे तुष्टीकरण बताया। कुछ नेता इस प्रकरण में अपनी राजनीतिक जमीन तलाशने में लग गए। अंदाजा लगाया जा सकता है कि मंदिर-मस्जिद का मुद्दा कितना संवेदनशील है।

इसलिए जरूरी है कि इस समस्या का हल निकले। इस मुद्दे से नजर बचाकर निकल जाना किसी के हित में नहीं है। सुप्रीम कोर्ट में यह मामला पिछले तीन चार साल से लंबित है, जो स्पष्ट करता है कि वहां भी यह प्राथमिकता की श्रेणी में तो नहीं है। देश जब आर्थिक तरक्की के बड़े सपने बुन रहा है तो जरूरी है कि ऐसे मुद्दों से एकजुट होकर निपटें। इसमें राजनीतिक दलों की भी एकजुटता चाहिए और धार्मिक गुरुओं की भी। कोर्ट भी तभी सही और प्रभावशाली फैसला सुना पाएगा जब सिर्फ कानूनी औपचारिकताओं से बाहर आए। वक्फ कानून में संशोधन को लेकर राजनीतिक दलों में क्या और क्यों बेचैनी है, यह किसी से छिपा नहीं है। कांग्रेस, सपा, तृणमूल समेत कई विपक्षी दल अड़िग हैं कि इसमें संशोधन न होने पाए, लेकिन वही दल यह नहीं बता पाते कि यदि 1991 के एक्ट में धार्मिक स्थलों के लिए कटआफ डेट है तो वक्फ के लिए क्यों न हो। तमिलनाडु के एक मंदिर की जमीन पर भी वक्फ बोर्ड दावा करता है कि 15वीं सदी में अर्काट के नवाब ने वह गांव वक्फ को दे दिया था। ऐसे दर्जनों उदाहरण हैं। किसी राज्य की वर्तमान विधानसभा की पूरी जमीन पर वक्फ का दावा है तो कहीं स्टेशन, कहीं नगरपालिका पर। कुछ ऐसे भी उदाहरण हैं जहां पूरे गांव पर वक्फ का दावा है और इसलिए ग्रामीण अपनी जमीन बेच नहीं पा रहे। विपक्षी राजनीतिक दल संसद में जमकर जो उनकी लड़ाई लड़ रहे हैं और इसे वाजिब ठहरा रहे हैं। सरकार की ओर से जो नया संशोधन पेश किया गया है कि उसमें साक्ष्य देने की बात कही गई है, लेकिन वह इमामों को स्वीकार्य नहीं। इसका अंत करना ही होगा। देश में सद्भावना के लिए हर किसी को जवाबदेही उठानी ही पड़ेगी। ऐतिहासिक गलतियों को सुधारने का अर्थ गलतियों को न दोहराना है, इतिहास बदलना नहीं।

आज हर किसी को संवेदनशील होना ही पड़ेगा। जगद्गुरु रामभद्राचार्य की ओर से हर उस मंदिर की पुनर्स्थापना की कामना, जो कभी न कभी तोड़ा गया था, वह करुणा के हृदय के नजदीक है। जिस सहअस्तित्व की बात भागवत कह रहे हैं वह भी करोड़ों भारतीयों के लिए वांछनीय है, लेकिन यह किसी कोर्ट या हिंदू समाज भर से नहीं हो सकता है। यह 140 करोड़ भारतीयों की कोशिश का फल होगा। इसके लिए हर पक्ष को उदार होना पड़ेगा और ईमानदार भी। संत समाज को उदार होना पड़ेगा तो इमामों और उनकी पैरवी कर रहे राजनीतिक दल के नेताओं को भी ईमानदारी से यह स्वीकार करना होगा कि इतिहास में धर्म के साथ कुछ ज्यादतियां हुईं और उनके लिए भी बाबर और औरंगजेब उतने ही बड़े आततायी हैं जितने हिंदू समाज के लिए।

भारत एक नई छलांग की तैयारी कर रहा है। अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों की रिपोर्ट में इसकी झलक दिख रही है। यह छलांग किसी एक समुदाय और धर्म के लोगों के लिए नहीं है। अगर विकास की गति धीमी पड़ी तो भी इसमें देर होगी। गति अवरोधक सिर्फ शासकीय-प्रशासकीय शिथिलता ही नहीं होती है। सामाजिक विवादों का भी घातक असर होता है। खासतौर पर तब जबकि कुछ पड़ोसी घात लगाए बैठे हों। पिछले दिनों में कुछ राजनीतिक दलों का व्यवहार बहुत अचंभित करने वाला रहा है। कुछ बड़े नेताओं की ओर से ऐसे बयान दिए गए हैं कि उनकी शर्त न मानी गई तो सड़कों पर आग लग जाएगी। लोकसभा चुनाव के वक्त से यह देखा जा रहा है। माना जा रहा है कि खुफिया एजेंसियों ने कुछ ऐसी रिपोर्ट दी हैं जिसमें सामाजिक तनाव के बहाने अस्थिरता पैदा करने की कोशिश हो सकती है। एक वक्त था जब तथाकथित गोभक्तों को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नसीहत दी थी। अब भागवत ने मंदिर-मस्जिद के विवाद को तूल देने वालों को नसीहत दी है। होना यह चाहिए कि मुस्लिम धर्मगुरुओं की ओर से भी इमामों और मुस्लिम वोट बैंक के सहारे राजनीति करने वाले नेताओं को सख्त नसीहत दी जाए कि तार्किक और सहिष्णु होना आज की जरूरत ही नहीं, बल्कि आवश्यक शर्त है।

(लेखक दैनिक जागरण के राजनीतिक संपादक हैं)
response@jagran.com

ऊर्जा

गृहस्थी

गृहस्थ आश्रम भी धर्म का एक स्वरूप है। ईश्वर वंदना की तरह विवाह का संस्कार भी सदैव से नियोजित रहा है। संसार के कल्याण के लिए पति-पत्नी व्रत अभीष्ट है। गृहस्थी का दायित्व नर-नारी पर समान रूप से निर्दिष्ट है। धर्म का अंश होने के कारण गृहस्थी यज्ञ की वेदी है, जिसमें निष्ठा और कर्तव्य की आहुतियां निरंतर देनी होती हैं। अपने परिवार को संभालने, सिंचित करने, पालन-पोषण आदि करने का दायित्व मानव के कंधों पर डाला गया है। वंशवृद्धि और संतानोत्पत्ति को धर्म हित माना गया है। गृहस्थी की सबसे बड़ी भूमिका लोक कल्याण में है। रंक से लेकर राजा तक, राक्षस से लेकर देव तक और पृथ्वी से लेकर नागलोक तक गृहस्थ जीवन का व्यापक महत्व है। सर्वत्र गृहस्थ सूत्र की धारणा प्रचलित है। इसकी पवित्र भावना तथा मूल चरित्र सदैव से लोगों को धर्माचरण की राह दिखाता रहा है। गृहस्थ जीवन संपूर्ण मानवता का लोकार्पण है। गृहस्थ जीवन तपस्या है, यह विलासिता का समय नहीं है। गृहस्थी को समाज का सर्वोत्तम सुधार समझा जाना चाहिए। सफलता के लिए गृहस्थी को श्रेष्ठ उपाय, प्रयोजन एवं उद्देश्य माना जा सकता है। सद्गृहस्थ सदा ही जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करता है। गृहस्थी को श्रेष्ठ आश्रम मानना चाहिए। इसलिए गृहस्थ जीवन को उत्कृष्ट कालखंड बताया गया है।

ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास-इन चारों आश्रमों में गृहस्थ की भूमिका समाज के विकास में प्रमुख है। परिवार, कुटुंब, समुदाय, समाज या देश के लिए गृहस्थ का योगदान सर्वोपरि है। गृहस्थी में दो प्राणी मिलकर इस संसार को दिव्य स्वरूप प्रदान करते हैं। यह एक अधूरे मानव को पूर्ण मानव बनाने का यज्ञ है। गृहस्थी जन-जन के सुख, संपन्नता और उत्सर्ग का पथ है। विश्व में मानवता और शांति का मर्म है। इस प्रकार गृहस्थ आश्रम धर्म का पूरक है।

डा. राघवेंद्र शुक्ल

उत्पादक कार्य संस्कृति की आवश्यकता

शैलेंद्रराज सुथार

उत्पादकता का सीधा संबंध काम की गुणवत्ता और दक्षता से है, न कि केवल काम के घंटों की संख्या से

सप्ताह में 90 घंटे की कार्य अवधि का मुद्दा भारतीय समाज और कार्य संस्कृति के संदर्भ में बहस का विषय बन गया है। लार्सन एंड टुब्रो के चेयरमैन के हालिया बयान ने इस पर चर्चा को और प्रबल कर दिया है। यह समझना आवश्यक है कि भारत जैसे विविध, जटिल और विकासशील देश में 90 घंटे की कार्य अवधि न केवल व्यावहारिक दृष्टिकोण से चुनौतीपूर्ण है, बल्कि सामाजिक, मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर भी नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है।

सर्वप्रथम इस मुद्दे को कर्मचारियों के स्वास्थ्य और जीवन की गुणवत्ता के संदर्भ में देखना जरूरी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन और अन्य शोध संस्थानों के अनुसार अत्यधिक काम करने वाले व्यक्तियों में दिल की बीमारियों, तनाव, अवसाद और स्ट्रोक का खतरा अधिक होता है। भारत जहां पहले से ही स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच सीमित है, वहां 90 घंटे की कार्य अवधि लागू करना कर्मचारियों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर भारी पड़ सकता है। लंबी कार्य अवधि से थकान और तनाव बढ़ेगा, जिससे उत्पादकता में गिरावट आएगी। इसके अतिरिक्त भारतीय समाज में परिवार और व्यक्तिगत जीवन का बड़ा महत्व है। परिवार के साथ समय बिताना, सामाजिक गतिविधियों में भाग लेना और व्यक्तिगत शौक को बढ़ावा देना भारतीय जीवनशैली का एक अहम हिस्सा है। 90 घंटे की कार्य अवधि न केवल वर्क-लाइफ बैलेंस को बाधित करेगी, बल्कि परिवार के साथ संबंधों को भी प्रभावित कर सकती है। यह कर्मचारियों में सामाजिक अलगाव, मानसिक थकावट और कार्यस्थल पर असंतोष को जन्म दे सकती है।

उत्पादकता का सीधा संबंध काम की गुणवत्ता और दक्षता से है, न कि केवल काम के घंटों की संख्या से। भारत में पहले से ही असंगठित क्षेत्रों में श्रमिकों को अत्यधिक कार्य घंटे करने पड़ते हैं, जिससे उनकी उत्पादकता और जीवन की गुणवत्ता प्रभावित होती है। यदि संगठित क्षेत्रों में भी 90 घंटे की कार्य अवधि लागू की जाती है, तो यह श्रमिकों के अधिकारों का हनन कर सकती है और असमानता को बढ़ावा दे सकती है।

चीन की '996 कार्य संस्कृति' (सुबह 9 बजे से रात 9 बजे तक, सप्ताह में 6 दिन) ने श्रमिकों में थकावट और स्वास्थ्य समस्याओं को बढ़ाया है। जापान में 'करोशी' यानी अत्यधिक काम के कारण मौतें भी एक गंभीर समस्या हैं। इन उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि अत्यधिक कार्य अवधि का तुष्प्रभाव न केवल व्यक्तियों पर, बल्कि समाज और अर्थव्यवस्था पर भी पड़ता है। तकनीकी प्रगति और प्रबंधन कौशल के जरिये उत्पादकता को बढ़ावा देना एक बेहतर समाधान हो सकता है। काम के घंटों को संतुलित करते हुए कुशल प्रशिक्षण और तकनीकी नवाचार के माध्यम से अधिक आउटपुट प्राप्त किया जा सकता है।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

आखिरी सांस लेता आइएनडीआइए

'आपसी झगड़े में डलझा आइएनडीआइए' शीर्षक से प्रकाशित आलेख में संजय गुप्त ने मात्र मोदी विरोध पर आधारित समान विचारधारा के अभाव में अंतर्विरोधों से जूझते भानुमति के कुनबे के जैसे विपक्ष और उसकी मानसिकता को सही उजागर किया है। देश की जनता बेवकूफ नहीं है कि जो लोकसभा के चुनावों में साथ-साथ ताल ठोकने वाले, पर राज्यों के चुनावों में आपस में ही लड़ने वाले विपक्षी मोर्चे आइएनडीआइए के स्थायित्व पर विश्वास करे। वास्तव में कई विपक्षी दलों की नींव का निर्माण कांग्रेस के धुर विरोध पर आधारित है। आज उनका कभी-कभी कांग्रेस के साथ चुनावी ताल ठोकना अपने संस्थापक सदस्यों की मूल भावना के साथ मजाक ही है। अभी कुछ महीने पहले मोदी विरोध में लोकसभा चुनाव में साथ-साथ प्रचार करने वाले आज एक-दूसरे को ही देश विरोधी होने का तमगा दे रहे हैं। वहीं दूसरी ओर आप, तृणमूल, सपा और डीएमके जैसे दलों का अचानक हिंदू और हिंदुत्व के प्रति उमड़ा प्यार सिर्फ गिरगिट के चुनावी मौसम में रंग बदलने जैसा है। अरविंद केजरीवाल को भी संघ, पुजारियों और ग्रंथियों की याद अचानक चुनावी वैतरणी को पार करने के लिए ही आई है। रही बात आइएनडीआइए की, तो उसकी उलटी गिनती प्रारंभ हो ही गई है।

पीयूष शंकर गर्ग, गाजियाबाद

सद्भावना का संदेश

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा अजमेर शरीफ दरगाह के उर्स के अवसर पर पवित्र चादर चढ़ाई गई। केंद्र में अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री किरण रिजिजू ने सूफी संत शेख मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर पवित्र चादर चढ़ाई और बुलंद दरवाजे पर प्रधानमंत्री का संदेश जायरीनों के लिए पढ़ा गया। दिल्ली के उपराज्यपाल एवं कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे द्वारा भी पवित्र चादर चढ़ाई गई। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा एवं दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी की तरफ से भी चादर चढ़ाई गई। देश में अमन चैन की दुआ की गई। देश के प्रधानमंत्री अन्य नेताओं द्वारा अजमेर शरीफ दरगाह पर चादर चढ़ाना सद्भावना बढ़ाने वाला कार्य है। जिसके लिए देश के लिए सभी राष्ट्रीय नेताओं को मुबारकबाद देनी चाहिए। देश में अमन चैन एवं शांतिपूर्ण माहौल कायम रहे, ताकि देश प्रगति करे और विश्व में भारत की साख और मजबूत हो।

वीरेंदर कुमार जाटव, दिल्ली

आपसी झगड़े में फंसा आइएनडीआइए

आइएनडीआइए में शामिल विभिन्न राजनीतिक दलों द्वारा कांग्रेस को अलग किए जाने के समाचारों ने यह तो स्पष्ट और सिद्ध कर दिया कि यह केवल स्वार्थपरक वोट-बैंक की राजनीति करने वाला गठबंधन था जिसकी जड़ें हरियाणा और महाराष्ट्र के विधानसभा और उत्तर प्रदेश के उपचुनाव परिणामों से हिल गई हैं। वास्तविकता यह है कि आइएनडीआइए क्षेत्रीय दलों का गठबंधन है, जिसको कांग्रेस ने राष्ट्रीय गठबंधन का स्वरूप दिया है। इन सभी का तुष्टीकरण और जातीय भेद की राजनीति का एक ही मार्ग है। अलग-अलग राज्यों में इनके अलग-अलग समीकरण हैं। दिल्ली विधानसभा चुनावों में किसी क्षेत्रीय दल की कोई संगठनात्मक व्यवस्था नहीं है और न ही दिल्ली में उनको कोई समर्थन है, इसलिए दिल्ली विधानसभा चुनाव ही उनके लिए एक सुरक्षित अवसर दिखाई दिया। वास्तविकता यह है कि इस बार भी इनका ध्येय आम आदमी पार्टी को समर्थन देकर भाजपा को पराजित करना है। आइएनडीआइए के किसी अन्य दल का दिल्ली में कोई अस्तित्व नहीं है। हर चुनाव के बाद विपक्षी गठबंधन की पुनर्रचना होती है। कांग्रेस के स्थानीय नेतृत्व ने साहसिक निर्णय लेकर आप के विरुद्ध चुनाव लड़ने का साहस किया है। कांग्रेस का राष्ट्रीय नेतृत्व किस प्रकार इस स्थिति का सामना करता है, यही उसकी अग्नि परीक्षा है। अभी तक आप ने चुनाव प्रचार के प्रारंभ में हताशा से भरी आक्रामकता का परिचय दिया है जबकि भाजपा दिल्ली में नए प्रत्याशियों के साथ धरातल पर अरविंद केजरीवाल को चुनौती दे रही है।

विनोद जौहरी, दिल्ली

मेलबाक्स

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल: response@jagran.com

विचार

नवभारत टाइम्स

नवभारत टाइम्स । नई दिल्ली। सोमवार, 13 जनवरी 2025

I.N.D.I.A. में रार

शिवसेना (UBT) के प्रवक्ता संजय राउत के ताजा बयान ने I.N.D.I.A. ब्लॉक में चल रही उथलपुथल की चर्चा को तेज कर दिया है। ऐसे ही बयान अन्य नेताओं और दलों की ओर से भी आए हैं। स्वाभाविक ही सवाल उठ रहे हैं कि क्या विपक्षी गठबंधन किसी बड़े संकट की ओर बढ़ रहा है।

कांग्रेस के खिलाफ आवाज

उमर से अखिलेश तक | इससे पहले जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री और नैशनल कॉन्फ्रेंस नेता उमर अब्दुल्ला भी कह चुके हैं कि अगर विपक्षी गठबंधन लोकसभा चुनावों तक के लिए ही सीमित था तो इसे अब भंग कर देना चाहिए। यही नहीं, तृणमूल कांग्रेस चीफ ममता बनर्जी और समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव भी साफ-साफ कह चुके हैं कि दिल्ली विधानसभा चुनाव में वे कांग्रेस का नहीं आम आदमी पार्टी का समर्थन करते हैं। शिवसेना (UBT) भी ऐसी घोषणा कर चुकी है।

आपसी फूट या अंतर्विरोध | पहली नजर में इसे I.N.D.I.A. ब्लॉक में आपसी फूट का लक्षण माना जा सकता है। लेकिन गौर करें तो यह इस ब्लॉक से जुड़े दलों का राजनीतिक अंतर्विरोध ज्यादा है। यह अंतर्विरोध शुरू से इस ब्लॉक में रहा है। इसी अंतर्विरोध के चलते विभिन्न राज्यों के चुनावों के वक्त सीटों का बंटवारा जटिल सवाल बनता है। इसी अंतर्विरोध के चलते हरियाणा में आम आदमी पार्टी इस आरोप के बावजूद चुनाव लड़ती है कि उसे मिलने वाले वोट BJP की जीत की संभावना को मजबूती देंगे।

दिल्ली की चुनावी लड़ाई | इस बार दिल्ली में कांग्रेस के पूरी मजबूती से चुनाव लड़ने का फैसला भी इसी अंतर्विरोध को दर्शाता है। ऐसे में AAP के साथ मिलकर ये क्षेत्रीय दल अगर कांग्रेस पर इस बात के लिए दबाव बनाना चाहते हैं कि वह BJP की जीत को आसान न बनाए तो यह स्वाभाविक है। लेकिन इसे अभी से I.N.D.I.A. ब्लॉक के विखंडन का अनिवार्य संकेत मान लेना जल्दबाजी हो सकता है।

बेहतर तालमेल जरूरी | आपसी संवाद में कमी, संयोजक की नियुक्ति में देर और बैठक का लगातार टलना- ऐसी शिकायतें हैं जो बताती हैं कि I.N.D.I.A. ब्लॉक में सब कुछ ठीक नहीं है। अगर समय रहते ध्यान नहीं दिया गया तो ये मुद्दे गंभीर मतभेद का रूप ले सकते हैं। निश्चित रूप से बेहतर तालमेल की जरूरत है।

चक्र-व्यू

प्रेम का अट्ठारहवां

राहुल पाण्डेय

प्रेम पहला हो, दूसरा या दसवां हो, पूरा हो गया तो याद नहीं रहता। उसकी याद के लिए जैसी टीस चाहिए, वह पूरेपन में नहीं मिलती। उसमें एक मिठास चाहिए होती है, बदकिस्मती से पूरेपन में वो भी नहीं मिलती। पूरेपन में चींटे लगते हैं, जो रोज-बरोज काटते हैं। शायद इसीलिए अधूरे प्रेम की कहानियां ही बची रह गईं, चाहे वो हीर-रांझे की हो या लैला-मजनूं की। कहानियां इंसान की अधूरी इच्छाएं हैं, इसीलिए बनती चली आ रही हैं। जैसे ही इंसान की इच्छा पूरी हो जाती है, उसका जीवन घटनाहीन हो जाता है। पाश की कविता की तरह वो रोज घर से निकलता है काम पर, और काम से लौटकर सीधे घर आ जाता है। उसके आंगन में उगता चांद शायद तभी सबसे खतरनाक हो जाता है। ऐसा चांद, जिसमें अधूरेपन की कोई टीस नहीं है। ऐसा गोला, जो हर ओर से पूरा है और डर की तरह आंगन में छा रहा है। पूरेपन में बात रुक जाती है। पूरा होने के बाद क्या? पूर्णता खत्म होना होता है। अपनी संपूर्णता में खत्म होना। यह अपूर्णता ही है जो इंसान को जिंदा रखे रहती है।

मशहूर लेखक बाल्जाक ने पूरे 18 साल अपनी एक पाठिका से प्रेम किया। खुद रहते थे फ्रांस में, और प्रेम हुआ था यूक्रेन में। मुसीबत यह कि कई सालों तक उन्हें यह भी नहीं पता चला कि जिससे वो प्रेम करते हैं, वो फ्रांस में नहीं रहती। पाठिका उनको चिट्ठियां लिखती थी और एक चिट्ठी में उनकी कहानी की रगड़कर आलोचना कर दी थी। आजकल तो किसी साहित्यकार की आलोचना कर दीजिए, तुरंत वो आपको विरोधी गुट का घोषित करके ऐसी-ऐसी जगहों पर जाकर दुश्मनी निकालता है, कि सपना तो दूर, कहानी में भी नहीं सोच सकते। उसी आलोचना से बाल्जाक को प्रेम हुआ, फिर पाठिका से। पाठिका अपना पता लिखती नहीं थी, सो फ्रांस के अखबारों में उसकी चिट्ठी का जवाब छपवाया। जाहिर है, जवाब उसे नहीं मिलना था। धीमे-धीमे यूक्रेन का पता चला और 18 सालों में दोनों बस दो बार मिल पाए। अंत में जब मिले, दोनों ने शादी कर ली। शादी के बमुश्किल 5 महीने बाद बाल्जाक चल बसे। कुछ मानते हैं कि उम्र हो गई थी, मैं मानता हूं कि उनकी प्रेम कहानी पूरी हो गई थी...

एकदा

अवगुण चित्त न धरो

राजस्थान में खेतड़ी के राजा अजीत सिंह के पुत्र का जन्मोत्सव था। स्वामी विवेकानंद को भी इस मौके पर आमंत्रित किया गया था। जश्न के बीच वहां नगर की मशहूर नगरवधू अपने दल के साथ आ गई। वह नृत्य-संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाली थी। इस पर स्वामीजी ने किसी से कुछ नहीं कहा और चुपचाप उठकर अपने कमरे में चले गए। यह देखकर नगरवधू हैरान रह गई। उसे लगा कि अपने ज्ञान और तेज के लिए मशहूर स्वामीजी शायद असहज महसूस कर रहे हैं और एक नगरवधू का सामना करने से डर रहे हैं। यह सब सोचकर उसने 'प्रभु जी, मेरे अवगुण चित न धरो' भजन गाना शुरू किया। जब इस भजन की आवाज विवेकानंद के कानों तक पहुंची तो वह स्वयं को रोक नहीं पाए और सोचने के लिए मजबूर हो गए कि बात तो सही है। यदि किसी शख्स में कोई कमी है तो उससे डरने की बात नहीं होनी चाहिए। स्वामी विवेकानंद को महसूस हुआ कि नगरवधू को देखकर उनका वहां से हटना उचित नहीं था। यह उस नर्तकी का अपमान है। इस तरह स्वामी विवेकानंद के मनोभाव बदल गए और वब खुद भी संगीत कार्यक्रम में शामिल होने के लिए आ गए। विवेकानंद का हृदय बड़ा निर्मल था। वह बड़े सहज थे।

Subrato Char

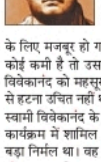

संकलन : सलिल पाण्डेय

रेकॉर्ड समय में दिल्ली की राजनीति पर एकाधिकार कायम कर चुकी AAP की राह इस बार कैसी होगी

दिल्ली चुनाव में कांग्रेस क्यों है इतनी अहम

राज कुमार सिंह

देश की राजधानी दिल्ली में विधानसभा चुनाव करीब हैं। बेशक दिल्ली पूर्ण राज्य नहीं है, पर सत्ता के लिए बिछती बिसात बताती है कि उसकी राजनीतिक अहमियत किसी अन्य राज्य से कम नहीं। चुनाव की घोषणा के वक्त से ही साफ हो गया था कि इस बार मुकाबला वाकई त्रिकोणीय होगा। एक दशक से दिल्ली में सत्तारूढ़ AAP को पहली बार कड़ी चुनौती मिलने के आसार हैं।

AAP का दबदबा | मोदी लहर में भी AAP न सिर्फ दिल्ली का दुर्ग बचाने में सफल रही, बल्कि कांग्रेस से पंजाब भी छीन लिया और राष्ट्रीय दल का दर्जा भी हासिल कर लिया। उसके दबदबे का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि 1998 से 2013 तक दिल्ली में लगातार तीन बार सरकार बनाने वाली कांग्रेस का दो बार से विधानसभा चुनाव में खाता तक नहीं खुला तो लगातार तीसरी बार केंद्र में सरकार बनाने वाली BJP बमुश्किल तीन से आठ सीटों तक पहुंच पाई। फिर भी 2025 के चुनाव में त्रिकोणीय मुकाबले के आसार हैं, तो उसके कारण हैं।

कांग्रेस से मोहभंग | AAP का जन्म जन लोकपाल की मांग को लेकर समाजसेवी अन्ना हजारे के चर्चित आंदोलन के बाद हुआ। AAP और उसके संयोजक अरविंद केजरीवाल की छवि स्वाभाविक ही वैकल्पिक राजनीति के अगुआ और श्रीमान ईमानदार की बन गई। तब भ्रष्टाचार के आरोपों से घिरी कांग्रेस से जनता का तेजी से मोह भंग हो रहा था। ऐसे में कांग्रेस का परंपरागत वोट बैंक रहे गरीब, दलित और अल्पसंख्यक AAP की ओर मुड़ गए।

लोकप्रिय लीडर | केजरीवाल आज भी दिल्ली के सबसे लोकप्रिय नेता हैं, लेकिन हाल के घटनाक्रम ने उनकी साख पर सवालिया निशान लगाए हैं। उनकी सबसे बड़ी ताकत ईमानदार नेता की छवि रही है, जिस पर इधर विरोधियों की तरफ से संगीन आरोप लगे हैं। इनमें शीशमहलनुमा आवास और शराब नीति घोटाले शामिल हैं। शराब नीति घोटाले में केजरीवाल समेत AAP के कुछ प्रमुख नेताओं को जेल जाना पड़ा।

अधूरे वायदे | AAP इसे केंद्रीय एजेंसियों के दुरुपयोग और राजनीतिक उत्पीड़न का मामला बताती है। यमुना सफाई समेत कुछ वायदे अधूरे हैं। शायद इसलिए भी मतदाताओं को लुभाने के लिए संजीवनी और महिला सम्मान योजना की जरूरत पड़ रही है, लेकिन ऐसी रेवड़ियां बांटने में अब पीछे कौन है?

क्या हैं चुनौतियां

- अधूरे रह गए वादों का भी है मसला
- विरोधियों ने केजरीवाल पर लगाए आरोप
- कांग्रेस, BJP दोनों कर रहीं घेराबंदी

पुराने दांव-पेच नाकाफी | इसलिए इस बार पुराने दांव-पेच ज्यादा काम नहीं आएंगे। बेशक मुफ्त पानी, बिजली, मोहल्ला क्लीनिक और बेहतर सरकारी स्कूल जैसे काम हैं गिनाने के लिए, लेकिन इनमें से ज्यादातर तो पहले कार्यकाल में हो गए थे। दूसरे कार्यकाल में क्या हुआ? इस बीच कुछ बड़े नेता भी AAP का दामन छोड़ गए। पिछले तीन लोकसभा चुनावों में दिल्ली की सातों सीटें जीतने वाली BJP लगातार AAP सरकार के विरुद्ध आक्रामक बनी हुई है। AAP के कुछ बड़े नेताओं को तोड़ने में भी वह सफल रही है।

हमलावर कांग्रेस | AAP के लिए इस चुनाव को ज्यादा मुश्किल बना दिया है लोकसभा चुनाव तक दोस्त रही कांग्रेस ने। वह इस बार केजरीवाल के विरुद्ध BJP से भी ज्यादा आक्रामक दिख रही है। जिस शराब नीति घोटाले ने AAP को बड़े संकट में डाला, उसकी शिकायत कांग्रेस ने ही की थी। हाल ही में महिला सम्मान योजना में फर्जीवाड़े की आशंका की शिकायत लेकर भी कांग्रेस के संदीप दीक्षित ही उपराज्यपाल के पास पहुंचे। उन्होंने यह भी कहा है कि पंजाब पुलिस कांग्रेस उम्मीदवारों की जासूसी कर रही है और दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिए पंजाब से कैश लाया जा रहा है। इन शिकायतों पर जांच के आदेश भी हो गए।

दोहरी घेराबंदी | कांग्रेस और BJP, दोनों AAP के प्रमुख नेताओं की चुनावी घेराबंदी करने में जुटी हैं। केजरीवाल के विरुद्ध BJP ने भी अपने पूर्व मुख्यमंत्री साहिब सिंह वर्मा के बेटे और पूर्व सांसद प्रवेश वर्मा को उम्मीदवार बनाया है। केजरीवाल सरकार में उपमुख्यमंत्री रहे मनीष सिसोदिया के विरुद्ध जंगपुरा से कांग्रेस ने पूर्व मेयर फरहाद सूरी को तो BJP ने सिख नेता तरविंदर सिंह मारवाह को उम्मीदवार बनाया है।

27 साल का वनवास | कांग्रेस की कोशिश अपना वोट बैंक वापस हासिल करने की है, जिस पर कब्जा कर AAP दिल्ली की राजनीति में अजेय बन गई है तो पिछले तीनों लोकसभा चुनाव में सभी सातों सीटें जीतने के बावजूद हर विधानसभा चुनाव में अपमानजनक हार का कड़वा घूंट पीने को मजबूर BJP लगभग 27 साल से दिल्ली की सत्ता से वनवास झेल रही है। नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पूर्वोत्तर तक कमल खिल जाने के मद्देनजर तो यह चिराग तले अंधेरा जैसी स्थिति है, पर इस बार भी उजाला हाथ की करामात पर ज्यादा निर्भर करेगा। कांग्रेस अपने वोट बैंक का एक ठीकठाक हिस्सा भी वापस पाने में सफल हो गई तो AAP की मुश्किलें बढ़ेंगी, जिससे BJP अपने मकसद में कामयाब हो सकती है।

(लेखक राजनीतिक विश्लेषक हैं)

आपके संडे पर Patriarchy की घूरती नज़र

नमिता जोशी

लार्सन एंड टुब्रो (L&T) के चेयरमैन एस.एन. सुब्रह्मण्यन का हालिया बयान, जिसमें उन्होंने कर्मचारियों को 90 घंटे हफ्ते का काम करने और रविवार को भी ऑफिस आने की सलाह दी, सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बन गया। हालांकि, असली हंगामा उनकी इस टिप्पणी पर हुआ, 'घर पर क्या करते हो? कितनी देर तक पत्नी को घूरोगे? पत्नी कितनी देर तक पति को घूरेगी? ऑफिस आओ और काम करो।' यह बयान पहली नजर में मजाकिया लग सकता है, लेकिन यह Patriarchal mindset यानी पितृसत्तात्मक मानसिकता, work culture और समाज में पुरुषों और महिलाओं की भूमिकाओं पर सवाल खड़ा करता है।

सुब्रह्मण्यन जी शायद भूल गए कि आज की महिलाएं भी पुरुषों की तरह कामकाजी हैं। वे भी सुबह ऑफिस जाती हैं, करियर बनाती हैं और घर की जिम्मेदारियां निभाती हैं। यह सोचना कि महिलाएं केवल घर पर बैठी रहती हैं और पति के देखने या 'घूरे जाने' भर के लिए हैं, Patriarchy की वह सोच है, जो यह मानती है कि महिलाओं का मुख्य काम घर संभालना है। अब सवाल उठता है कि जब पत्नी भी ऑफिस जाती है, तो पति के 'घूरने' के लिए वह संडे को कैसे उपलब्ध होगी, क्योंकि संडे की छुट्टी के दिन घर के कई काम निपटाने होते हैं।

सुब्रह्मण्यन जी का यह बयान पितृसत्ता के उस ढांचे को उजागर करता है, जिसमें पुरुषों को सिर्फ कमाने की मशीन समझा गया है और महिलाओं को केवल घर संभालने के लिए उपयुक्त माना गया है। यह सोच इस फैक्ट को पूरी तरह नकार देती है कि घर चलाने के लिए वित्तीय योगदान के साथ-साथ भावनात्मक और शारीरिक श्रम भी जरूरी होता है। पुरुषों का घर के लिए योगदान केवल वित्तीय क्यों माना जाता है? क्या वे घर के कामों में हाथ नहीं बटा सकते? खाना बनाना, सफाई करना या बच्चों की देखभाल करना, ये काम केवल महिलाओं के नहीं होते हैं। इमोशनल सपोर्ट देना और परिवार को समय देना, यह भी पुरुषों की जिम्मेदारी होनी चाहिए। लेकिन पितृसत्तात्मक सोच ने पुरुषों को इन कामों से मुक्त रख 'पत्नी को घूरने' को घर पर समय बिताने का मुख्य काम मान लिया।

AI Image

#CancelPatriarchy

महिलाओं के घर के कामों को लेकर समाज का नजरिया भी बदला जाना चाहिए। अगर महिलाएं ऑफिस में काम कर सकती हैं, तो पुरुष घर के काम क्यों नहीं कर सकते? सदियों पुरानी यह धारणा कि 'पुरुष घर के बाहर काम करते हैं और महिलाएं घर के अंदर,' अब पूरी तरह अप्रासंगिक हो चुकी है। केवल घूरने की बातें करना या काम की आड़ में घर की जिम्मेदारियों से बचना, आज के समय में स्वीकार्य नहीं है।

रिश्तों को समानता और जिम्मेदारी की साझेदारी पर आधारित होना चाहिए। अगर महिलाएं ऑफिस जाती हैं, तो पुरुषों को घर के काम में मदद करनी चाहिए। परिवार केवल वित्तीय योगदान से नहीं, बल्कि भावनात्मक और शारीरिक श्रम से चलता है। हैपिनेस इंडेक्स में पहले नंबर पर आने वाले देश फिनलैंड में हफ्ते में 5 दिन और एक दिन में 7.5 घंटे काम करने का चलन है। 90 घंटे काम करके वर्क लाइफ के साथ वर्क वाइफ बैलेंस दोनों का ही बाजा बज जाएगा। तो अगली बार जब कोई पूछे, 'संडे को घर पर क्या करोगे?' तो सही जवाब होगा- घर के काम करूंगा, परिवार को समय दूंगा और जिम्मेदारियां साझा करूंगा। यही आज का असली कर्म है।

THE SPEAKING TREE

और पढ़ने के लिए देखें

hindi.speakingtree.in

मधुमक्खियों से सीखें अच्छाइयों को समेटना

स्वामी अवधेशानंद गिरि

फूलों के रंग देखकर हम आकर्षित जरूर होते हैं, लेकिन उनकी असली पहचान खुशबू है। इसी प्रकार सत्पुरुषों के व्यक्तित्व की श्रेष्ठताएं उनके बाह्य जीवन से नहीं, बल्कि उनके सद्कार्यों, उत्तम चरित्र और पवित्र आचरण से प्रकट होती हैं। जिनका जीवन सहज और स्वाभाविक है, जिन पर शास्त्र और गुरु परंपरा का अंकुश है, उनके जीवन में यश और श्रेष्ठताएं स्वयं चली आती हैं। सद्गुणों को समेटना हमारा स्वभाव हो।

हमें हर व्यक्ति और परिस्थिति से कुछ सीखने को मिलता है। यदि हम उन्हें देखने की क्षमता रखें और जीवन में उतारें, तो गुणवान बन सकते हैं। अपने गुणों और अवगुणों को महसूस कर हम सद्गुणों को अधिक प्रकाशित कर सकते हैं। अपनी गलतियों को दूर कर सकते हैं। जो व्यक्ति गुण ग्राहक होता है, वह हर परिस्थिति में कुछ सीखने की क्षमता रखता है। इसके लिए आवश्यक है कि हर स्थिति से सीखने की भावना रखें। इससे हम अपने जीवन को और भी अधिक सुव्यवस्थित और सुशोभित कर सकते हैं। जिस तरह मधुमक्खी फूलों पर ही भ्रमण करती है और मिठास समेट करके लौटती है, उसी प्रकार हमें अच्छाइयों को ही समेटने का प्रयास करना चाहिए।

जीवन में सद्गुण ही व्यक्ति की पहचान का मूल तत्व है। इससे व्यक्तित्व को आकार मिलता है और उच्च स्थान की प्राप्ति होती है। सद्गुणों से ही मनुष्य समृद्ध होता है। सद्गुण हमें सामाजिक मूल्यों के प्रति आस्थावान बनाकर सच्चे अर्थों में धनी बनाते हैं। दया, संतोष और शील मनुष्य के सबसे महत्वपूर्ण गुण हैं। ये गुण हमें श्रेष्ठ और उत्तम मनुष्य बनने में सहयोग करते हैं। दया हमें दूसरों के प्रति सहानुभूति और करुणा रखने में सहायता करती है। यह हमें दूसरों का सहयोग करने और उनके दुखों को दूर करने के लिए प्रेरित करती है। संतोष जीवन में मौजूद अच्छी चीजों की सराहना करने में सहयोग करता है। इससे तृष्णा, प्रलोभन, ईर्ष्या और अन्य नकारात्मक भावनाओं से बचने में मदद मिलती है। शील हमें नैतिक रूप से उत्कृष्ट कार्य करने में सहयोग करता है। यह हमें दूसरों के साथ सम्मानजनक होने के लिए प्रेरित करता है। सद्गुणों का अध्ययन और उसे व्यवहार में उतारने से व्यक्ति के जीवन में सार्थक विकास होता है। सम्मान, यश और समृद्धि का मूल स्रोत सद्गुण है।

आज के समय में जब चुनौतियां बढ़ रही हैं, सद्गुण हमें सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं। वे रास्ता दिखाते हैं कि सत्य और असत्य में अंतर कैसे करें। सद्गुण जीवन के हर क्षेत्र में हमारे साथी हैं। इसलिए हमें चाहिए कि उन्हें अपने जीवन में उतारें और आसपास के लोगों तक पहुंचाएं।

प्रस्तुति : सुभाष चन्द्र शर्मा

ग्रीनलैंड में कैसे रहते थे वाइकिंग्स

मृत्युंजय राय

एलानोर बैरेक्लो (Eleanor Barraclough) **EMBERS OF THE HANDS: Hidden Histories of the Viking Age** में लिखती हैं कि जिन लोगों को हम वाइकिंग्स कहते हैं, उनमें से ज्यादातर वाइकिंग्स हैं भी नहीं। 700 ईस्वी में समंदर की लहरों की समझ और उनके जरिये यात्रा करने वाले जो लोग स्कैंडिनेविया से निकले और सदियों तक नॉर्थ अटलांटिक और बाल्टिक सागर के इलाकों में लूटपाट करते रहे, वे वाइकिंग्स सभ्यता का सिर्फ एक हिस्सा ही कहे जा सकते हैं, जो एक साझी भाषा से जुड़े हुए थे। एलानोर लिखती हैं कि पुरानी Norse भाषा में vkingr का मतलब होता है धावा बोलने वाला यानी यह शब्द उनके पेशे के बारे में बताता है, न कि इसका उनके नस्ल से लेना-देना है।

AI Image

विचार विंडो

भारत में पॉप कल्चर ने वाइकिंग्स के बारे में लोगों की जानकारी बढ़ाने में बड़ी भूमिका निभाई है। OTT प्लैटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर वाइकिंग्स पर चर्चित वेब सीरीज है। लोगों को वाइकिंग्स के खूनखराबे वाला इतिहास और उनके विजय अभियान पसंद हैं और पॉप कल्चर ने इस पहलू को और मजबूत किया है। इन बातों का जिक्र एलानोर की किताब में भी मिलता है। वह लिखती हैं कि लोगों को ओडिन, थोर जैसे वाइकिंग लोगों के देवताओं की कहानियां बेहद पसंद आती हैं। उनकी यह बात इस तरह से सही लगती है कि मार्वल सीरीज की फिल्मों में इन देवताओं के किरदारों को दुनिया के करोड़ों लोगों ने पसंद किया है। वह लिखती हैं कि एरिक द रेड ने ग्रीनलैंड पर वाइकिंग्स को बसाया। यह इलाका पूरी तरफ से बर्फ से ढंका रहता था, लेकिन एरिक ने इसका नाम ग्रीनलैंड रखा ताकि लोगों को लगे कि यह इलाका पूरी तरह से हरा-भरा है। 900 ईस्वी के आखिर के वर्षों में वाइकिंग्स का यहां आना शुरू हुआ था। एलानोर ने यहां मिले आर्टिफैक्ट्स और दूसरी चीजों के हवाले से बताया है कि तब उन लोगों का जीवन इस दुर्गम क्षेत्र में कैसा था। खैर, आजकल ग्रीनलैंड एक और वजह से चर्चा में है। इस इलाके पर यूं तो डेनमार्क का अधिकार है, लेकिन अमेरिका के नव-निर्वाचित राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने हाल ही में कहा कि वह ग्रीनलैंड को खरीदना चाहते हैं। वैसे ट्रंप को शायद ही इसमें कामयाबी मिले क्योंकि ग्रीनलैंड में डेनमार्क से अलग होकर स्वतंत्र देश बनने के लिए आंदोलन भी चल रहा है।

बहरहाल, एलानोर ने आर्कियोलॉजिकल रेकॉर्ड्स के हवाले से वाइकिंग्स के जीवन के उन पहलुओं के बारे में भी लिखा है, जिनके बारे में बहुत बातचीत या चर्चा नहीं होती। इनमें से एक पहलू है वहां की औरतों की ओर से तैयार कपड़े। आखिर, पानी के जहाज पर उन्हीं का बनाया कपड़ा लगता था, जिससे समंदर में नावों को दिशा दी जाती थी। आर्कियोलॉजिकल रेकॉर्ड्स से वाइकिंग महिला वीरांगनाओं की जानकारी भी मिली है। वे युद्ध में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर दुश्मनों से भिड़ती थीं। अगर आपकी इतिहास में दिलचस्पी है तो यह किताब जरूर पसंद आएगी।

धारा के विरुद्ध

प्रणव प्रियदर्शी

अलग-अलग कई सेक्टरों में अपनी सेवाएं देने के बाद जब रीमा जैन ने ऑटोमोटिव इंडस्ट्री का रुख किया तो कई शुभचिंतकों ने उन्हें अपने फैसले पर दोबारा विचार करने की सलाह दी। वजह थी इस क्षेत्र में महिलाओं की कम भागीदारी। मगर जो उनकी दृष्टि में बाधा थी, रीमा जैन उसे चुनौती ही नहीं, अवसर के रूप में देख रही थीं। उनका मानना था कि इस फील्ड में उनके पास मौका होगा इसे लड़कियों के फलने-फूलने लायक बनाने का। रीमा कहती हैं, धारा के खिलाफ तैरना शुरू में मुश्किल लगता है लेकिन बाद में आप इसके आदी हो जाते हैं और फिर आपको इसमें मजा आने लगता है। झारखंड के छोटे से शहर रामगढ़ में पली-बढ़ी रीमा अपने परिवार में इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने और टेक्नॉलजी में करियर बनाने का सपना देखने वाली पहली लड़की थीं। पिता का भरपूर सपोर्ट मिला और इसीलिए वह इंजीनियरिंग की पढ़ाई शुरू कर सकीं। यहां चुनौतियां हर कदम पर थीं। छोटे शहर से बड़ी यूनिवर्सिटी पहुंचने पर मिलने वाला अलग माहौल था, मुश्किल लगता ऐकेडेमिक वातावरण था और थी भाषा की बाधा। लेकिन धीरे-धीरे वे इन सभी मुश्किलों पर काबू पाती गईं। उनका कहना है कि लड़कियों की बहुत सारी लड़ाइयां मैदान तक पहुंचने से पहले दिमाग में ही समाप्त हो जाती है। बतौर महिला उन्हें खुद की क्षमताओं को कम करके देखना सिखाया जाता है। इसलिए रीमा इस पर जोर देना जरूरी समझती हैं कि अपने एंबीशन को लेकर किसी तरह का संकोच नहीं पालना चाहिए। हीरो मोटोकॉर्प में बतौर चीफ इन्फॉर्मेशन एंड डिजिटल ऑफिसर रीमा अपनी जिम्मेदारियों का पालन करते हुए अपनी जैसी तमाम लड़कियों की राह आसान बनाने के अभियान में पूरी शिद्दत से लगी हैं।

रीमा जैन

आधी दुनिया

रीडर्स मेल

www.edit.nbt.in

■ अंतरिक्ष की नई दिशाएं

11 जनवरी का लेख 'अब शुक्ला जी करेंगे स्पेसवॉक' पढ़ा। 2024 का साल अंतरिक्ष अनुसंधान में महत्वपूर्ण उपलब्धियों और घटनाओं से भरा रहा है। भारत, अमेरिका, जापान और यूरोपीय संघ की साझा पहल ने अंतरिक्ष यात्रा में नए आयाम जोड़े। भारतीय अंतरिक्ष यात्री शुभांशु शुक्ला की अंतरिक्ष यात्रा इसरो के गगनयान मिशन के लिए महत्वपूर्ण साबित होगी। अमेरिका की निजी कंपनियां, जैसे स्पेस एक्स और बोइंग के साथ मिलकर अंतरिक्ष अनुसंधान में नई दिशाएं तलाशने का प्रयास कर रही हैं। चीन और यूरोपीय स्पेस एजेंसियां भी अंतरिक्ष के रहस्यों को उजागर करने के लिए मिशन चला रही हैं।

ऋषिपाल त्यागी, नोएडा

■ सतर्क रहना जरूरी

यह पत्र 'दो दूनी चार' कॉलम में 11 जनवरी को प्रकाशित लेख 'जॉब्स में फ्रॉड' से संबंधित है। देखा गया है कि लोग मोटे ब्याज पाने के चक्कर में जीवन भर की जमा पूंजी गंवा बैठते हैं। आजकल कुछ जालसाजों ने ऐसे लोगों को फंसाने का एक मकड़जाल बना रखा है। पहले ये मोटे रिटर्न का लालच फेंकते हैं और लोग इनके चक्कर में आ जाते हैं और लाखों रुपये निवेश कर देते हैं।

चंद्र प्रकाश शर्मा, रानी बाग

nbtedit@timesofindia.com पर अपनी राय नाम-पते के साथ भेज करें।

अंतिम पत्र

बाइडन ने कहा, मैं ट्रंप को हरा देता, लेकिन... - खबर

- अब क्या सोचना, चिड़िया तो खेत चुग गई है!

सीमा गुप्ता

अध्यक्ष, प्रबंधक, नवभारत टाइम्स (लिमिटेड अनुसार के लिए संपूर्ण स्वामित्व पुनीतकुमार सुनीता, सीनियर) सहायकीकर्मी नीति, सीनियर एवं कार्यकारी निदेशक के लिए संपादक प्रदत्त द्वारा, 7 बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली 110002 से प्रकाशित तथा **अशोक अग्रवाल द्वारा, गणेश टावर, 1, अलिपुर रोड** 110003 से प्रकाशित। **संपादक** : राजकिशोर, **कार्यकारी संपादक** : राजेन्द्र पांडेय, दूरभाष : 23225000 फैक्स : 23225327, मैनेजिंग एडीटर : राजमुखी पांडेय रोड, दूरभाष-23225000 फैक्स नंबर मुख्य : 1 ब. प्रो. कॉलोनी : नेताजी मैं कुमार मुख्य : सुभाष रोड,नोएडा : निदेशक : ब. ब., दूरभाष : निदेशी ब. ब.

मुद्रक : टाइम्स ऑफ इंडिया प्रेस : आनंद पार्क (इस प्रेस में प्रकाशित समाचार सामग्री के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी)

चिंतन

इकोनॉमी व ईकोसिस्टम में सुधार से युवा होंगे सशक्त

युवा देश की ताकत हैं, उनमें देश को बदलने व नई दिशा देने की ऊर्जा व क्षमता है। बिना युवाओं के योगदान के विकसित भारत का लक्ष्य हासिल नहीं किया जा सकता है। करोड़ों युवाओं के प्रेरणास्रोत स्वामी विवेकानंद की जयंती पर देश के युवाओं से पीएम नरेन्द्र मोदी का संवाद करना इन्हीं ताकत को एड़ीस करना व प्रेरित करना है। युवा शक्ति के साथ इस संवाद में पीएम ने लक्ष्य के साथ जीने, काबिल बनने, विकसित भारत पर बात की। युवाओं को प्रेरित करने के लिए विवेकानंद जयंती के अवसर का चयन भी सराहनीय है और उनके समक्ष विकसित भारत के ध्येय व राष्ट्र के भविष्य को संवारने का संकल्प दोहराना भी अच्छा आइडिया है, लेकिन देश के सामने अनेक चुनौतियां हैं, जिन्हें सरकार द्वारा एड़ीस किए बिना विकसित भारत का लक्ष्य वर्ष 2047 तक हासिल नहीं किया जा सकता है। पीएम के विचार में विकसित भारत की संकल्पना में ऐसा भारत है जो आर्थिक, सामरिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से सशक्त होगा, जहां अर्थव्यवस्था (इकोनॉमी) भी बुलंद होगी और राष्ट्र का ईकोसिस्टम (परिस्थितिकी) भी शानदार होगा। भारत विश्व में सर्वाधिक युवाओं वाला देश है, इसी के साथ देश के अधिकांश युवाओं के सामने अनेक बाधाएं हैं और राष्ट्र का ईकोसिस्टम ही खंडित, भ्रमित, भ्रष्ट और विभाजनकारी है। इसके भी कई कारण हैं। चौदह वर्ष तक निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा व्यवस्था और शिक्षा के अधिकार के बावजूद देश में करोड़ों बच्चे नियमित स्कूल से दूर हैं। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के बावजूद अभी भी प्राथमिक शिक्षा के प्रति कोई राष्ट्रीय अवधारणा और मॉडल नहीं है। एक देश एक चुनाव की बात तो होती है, पर एक देश एक शिक्षा बोर्ड और एक पाठ्यक्रम की बात नहीं होती है। स्कूली शिक्षा के अलग-अलग बोर्ड व अलग-अलग पाठ्यक्रम के चलते जीवन, परिवार, समाज व राष्ट्र के बारे में अलग-अलग दृष्टिकोण व बोध के साथ बच्चे युवा अवस्था में पहुंचते हैं। ऐसे में युवाओं में भारतीयता व भारतीय संस्कृति से पूर्ण राष्ट्रीय बोध विकसित नहीं हो पाता है। सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा का ईकोसिस्टम भी देश में विकसित नहीं हो सका है। सभी संवैधानिक अधिकार के बावजूद देश में अनेक स्तर पर भेदभाव का ईकोसिस्टम है। युवाओं के सामने रोजगार व रोजी-रोटी की बड़ी समस्या है। गरीबी, बीमारी की चुनौती देश के सामने है। सभी के लिए अनिवार्य स्वास्थ्य सेवा का अभाव है। देश में एक लाख से भी कम सरकारी व निजी अस्पताल हैं। पेयजल, बिजली, ट्रांसपोर्ट आदि की सुविधाएं भी सभी तक नहीं हैं। डार्क वेब, क्रिप्टो, डिजिटल रीच नई चुनौतियां हैं। आतंकवाद, अलगाववाद, उग्रवाद व नक्सलवाद से देश पहले से जूझ रहा है। प्रॉबिज कल्चर से वोट बैंक साधे जा रहे हैं। जिस देश में करीब 81 करोड़ लोगों को पांच किलोग्राम प्रतिमाह मुफ्त अनाज दिया जा रहा है, उस देश के ऐसे युवा विकसित भारत की यात्रा में कैसे भागीदार होंगे? बेशक देश प्रगतिपथ पर है, पर रेवड़ी कल्चर, जातिवादी व विभाजनकारी राजनीति से देश का ईकोसिस्टम खराब ही हो रहा है। इसको सुधारे बिना हम विकसित भारत की कल्पना कैसे कर सकते हैं? डा. भीमराव आंबेडकर के सोशल व इकोनोमिक डेमोक्रेसी भी लागू करने होंगे। प्रशासनिक, पुलिस, राजनीतिक, न्यायिक सुधार भी करने होंगे। सबके लिए समान आर्थिक अवसर का ईकोसिस्टम भी बनाना होगा और आर्थिक सुधार के अगले चरण भी करने होंगे।

हिंसा
प्रमोद भार्गव

नक्सलवाद का खात्मा बड़ी चुनौती

केंद्र सरकार ने 2026 तक नक्सलवाद का पूर्ण सफाया करने का संकल्प लिया हुआ है। लेकिन नक्सलियों का अस्तित्व अब तक बना है तो इसलिए क्योंकि कुछ देश विरोधी ताकतें उन्हें धन, विस्फोटक और उत्तम गुणवत्ता की संचार प्रणाली उपलब्ध करा रहे हैं। यह वाकई चिंता का विषय है कि नक्सली अपने विरुद्ध चल रहे सुरक्षाबलों के अभियानों को निशाना बनाने में बार-बार क्षति पहुंचाने में सफल हो जाते हैं। अतएव लगता है कि सजातीय वनवासियों और ग्रामीणों पर उनकी पकड़ अभी भी बनी हुई है। वही सुरक्षाबलों की मुखबिरी करके सटीक जानकारी पहुंचाते हैं। नक्सली हिंसा लंबे समय से देश के अनेक प्रांतों में आंतरिक मुसीबत बनी हुई है।

छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिला मुख्यालय से 55 किमी दूर अबेली गांव के पास नक्सलियों द्वारा बिछाए गए अति तीव्र विस्फोटक की चपेट में आकर एक आरक्षित गार्ड समेत आठ जवान शहीद हो गए। विस्फोटक इतना तीव्र था कि जवानों के वाहन स्कार्पियो के परखच्चे उड़ गए। नक्सलियों की यह चुनौती उस समय मिली है, जब नक्सलियों के संगठनों के खत्म होने की उम्मीद की जा रही है, लेकिन इस चुनौती ने साफ कर दिया है कि नक्सलियों का वैसा दमन अब तक नहीं हो सका है, जैसी उम्मीद की जा रही है। हालांकि केंद्र सरकार ने 2026 तक नक्सलवाद का पूर्ण सफाया करने का संकल्प लिया हुआ है। लेकिन नक्सलियों का अस्तित्व अब तक बना है तो इसलिए क्योंकि कुछ देश विरोधी ताकतें उन्हें धन, विस्फोटक और उत्तम गुणवत्ता की संचार प्रणाली उपलब्ध करा रहे हैं।

यह वाकई चिंता का विषय है कि नक्सली अपने विरुद्ध चल रहे सुरक्षाबलों के अभियानों को निशाना बनाने में बार-बार क्षति पहुंचाने में सफल हो जाते हैं। अतएव लगता है कि सजातीय वनवासियों और ग्रामीणों पर उनकी पकड़ अभी भी बनी हुई है। वही सुरक्षाबलों की मुखबिरी करके सटीक जानकारी पहुंचाते हैं। नक्सली हिंसा लंबे समय से देश के अनेक प्रांतों में आंतरिक मुसीबत बनी हुई है। वामपंथी उग्रवाद अभी देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए बड़ा खतरा माना जाता रहा है। लेकिन चाहे जहां रक्तपात की नदियां बहाने वाले इस उग्रवाद पर लगभग नियंत्रण किया जा चुका है। नई रणनीति के अंतर्गत अब सरकार की कोशिश है कि सीआरपीएफ की तैनाती उन सब अज्ञात क्षेत्रों में कर दी जाए, जहां नक्सली अभी भी ठिकाना बनाए हुए हैं। इस नाते केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले में सबसे अधिक नक्सल हिंसा प्रभावित क्षेत्रों में 4000 से अधिक सैन्यबल तैनात करने जा रहा है। केंद्र सरकार की कोशिश है कि 31 मार्च 2026 तक इस क्षेत्र को पूरी तरह नक्सलवाद से मुक्त कर दिया जाए। इतनी बड़ी संख्या में सैन्यबलों की अज्ञात क्षेत्र में पहुंच का मतलब है कि अब इस उग्रवाद से अंतिम लड़ाई होने वाली है। मजबूत और कठोर कार्य योजना को अमल में लाने का ही नतीजा है कि इस साल सुरक्षाबलों के साथ मुठभेड़ में 153 नक्सली मारे जा चुके हैं। शाह का कहना है कि 2004-14 की तुलना में 2014-24 के दौरान देश में नक्सली हिंसा की घटनाओं में 53 प्रतिशत की कमी आई है। 2004-14 में नक्सली हिंसा की 16,274 वारदातें दर्ज की गई थीं, जबकि नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद 10 सालों में इन घटनाओं की संख्या घटकर 7,696 रह गई। इसी अनुपात में मोओवादी हिंसा के कारण होने वाली मौतों की संख्या 2004-14 में 6,568 थीं, जो पिछले दस साल में घटकर 1990 रह गई है और अब सरकार ने जो नया संकल्प लिया है, उससे तय है कि जल्द ही इस समस्या को निर्मूल कर दिया जाएगा। जिस तरह से नरेंद्र मोदी सरकार ने जम्मू-कश्मीर से आतंक और अलगाववाद खत्म करने की निर्णायक लड़ाई लड़ी थी, वैसी ही स्थिति अब छत्तीसगढ़ में अनुभव होने लगी है। इसमें कोई दो राय नहीं कि छत्तीसगढ़ में नक्सली तंत्र

कमजोर हुआ है, लेकिन उसकी शक्ति अभी शेष है। अब तक पुलिस व गुप्तचर एजेंसियां इनका सुराग लगाने में नाकाम होती रही थीं, लेकिन नक्सलियों पर शिकंजा कसने के बाद से इनको भी सूचनाएं मिलने लगी हैं। इसी का नतीजा है कि सैन्यबल इन्हें निशाना बनाने में लगातार कामयाब हो रहे हैं। छत्तीसगढ़ के ज्यादातर नक्सली आदिवासी हैं और इनका कार्यक्षेत्र वह आदिवासी बहुल इलाका है, जिससे ये खुद आकर नक्सली बने हैं। इसलिए इनका सुराग सुरक्षाबलों को लगा पाना मुश्किल होता है। लेकिन ये इसी आदिवासी तंत्र से बने मुखबिरों से सूचनाएं आसानी से हासिल कर लेते हैं। दुर्गम जंगली क्षेत्रों के मार्गों, छिपने के स्थलों और जल स्त्रोतों से भी ये खूब परिचित हैं। इसलिए ये और इनकी शक्ति लंबे समय से यहीं के खाद-पानी से पोषित होती रही है।

हालांकि अब इनके हमलों में कमी आई है। दरअसल इन वनवासियों में अर्बन माओवादी नक्सलियों ने यह भ्रम फैला दिया था कि सरकार उनके जंगल, जमीन और जल-स्त्रोत उद्योगपतियों को सौंपकर उन्हें बेदखल करने में लगी है, इसलिए यह सिलसिला जब तक थमता नहीं है, विरोध की मुहिम जारी रहनी चाहिए। सरकारें इस समस्या के निदान के लिए बातचीत के लिए भी आगे आईं, लेकिन कामयाबी नहीं मिली। इन्हें बंदूक के जरिए भी काबू में लेने की कोशिशें हुई हैं। लेकिन नतीजे अनुकूल नहीं रहे। एक उपाय यह भी हुआ है कि जो नक्सली आदिवासी समर्पण कर मुख्यधारा में आ गए उन्हें बंदूकें देकर नक्सलियों के विरुद्ध खड़ा करने की रणनीति भी अपनाई गई। इस उपाय में खून-खराबा तो बहुत हुआ, लेकिन समस्या बनी रही। गोया, आदिवासियों को मुख्यधारा में लाने से लेकर विकास योजनाएं भी इस क्षेत्र को नक्सल मुक्त करने में अब तक सफल नहीं हो पाई हैं। बस्तर के इस जंगली क्षेत्र में नक्सली नेता हिड़मा का बोलबाला रहा है।

वह सरकार और सुरक्षाबलों को लगातार चुनौती दे रहा है, जबकि राज्य एवं केंद्र सरकार के पास मोदी सरकार से पहले रणनीति और दृढ़ इच्छा शक्ति की हमेशा कमी रही थी। तथाकथित शहरी माओवादी बौद्धिकों के दबाव में भी मनमोहन सिंह सरकार रही। इस कारण भी इस समस्या का हल दूर की कौड़ी बना रहा। यही वजह थी कि नक्सली क्षेत्र में जब भी कोई विकास कार्य या चुनाव प्रक्रिया संपन्न होती थी तो नक्सली उसमें रोड़ा अटका देते थे। नक्सली समस्या से निपटने के लिए राज्य व केंद्र सरकार दावा कर रही हैं कि विकास इस समस्या का निदान है। यदि छत्तीसगढ़ सरकार के विकास संबंधी विज्ञापनों में दिए जा रहे आंकड़ों पर भरोसा करें तो छत्तीसगढ़ की तस्वीर विकास के मानदण्डों को छूती दिख रही हैं, लेकिन इस अनुपात में यह दावा बेमानी है कि समस्या पर अंकुश विकास की धारा से लग रहा है ? क्योंकि इसी दौरान बड़ी संख्या में महिलाओं को नक्सली बनाए जाने के प्रमाण भी मिले हैं। जब किसी भी किस्म का चरमपंथ राष्ट्र-राज्य की परिकल्पना को चुनौती बन जाए तो जरूरी हो जाता है कि उसे नेस्तनाबूद करने के लिए जो भी कारगर उपाय उचित हों, उनका उपयोग किया जाए ? हालांकि देश में तथाकथित शहरी बुद्धिजीवियों का एक तबका ऐसा भी रहा है, जो माओवादी हिंसा को सही ठहराकर संवैधानिक लोकतंत्र को मुखर चुनौती देकर नक्सलियों का हिमायती बना हुआ था। इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि जब ये राष्ट्रघाती बुद्धिजीवी पुख्ता सबूतों के आधार पर गिरफ्तार किए गए तो बौद्धिकों और वकीलों के एक गुट ने देश के सर्वोच्च न्यायालय को भी प्रभाव में लेने की कोशिश की और गिरफ्तारियों को गलत ठहराया था। लेकिन अब इस चरमपंथ पर अंकुश लगाना जरूरी है।

(लेखक राजनीतिक समीक्षक हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया edit@haribhoomi.com पर दे सकते हैं।

आस्था

प्रत्यूष शर्मा

पोषण की देवी का उत्सव है शाकंभरी पूर्णिमा

शाकंभरी पूर्णिमा एक महत्वपूर्ण हिंदू त्योहार है। यह सौभाग्यशाली दिन पौष महीने की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है, जो आमतौर पर जनवरी महीने में आता है। इस दिन, भक्त पोषण प्रदान करने के लिए देवी को अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। पौष पूर्णिमा के दिन ही शाकंभरी जयन्ती मनायी जाती है। पौष पूर्णिमा 13 जनवरी 2025 को सुबह 05 बजकर 03 मिनट पर शुरू होगी और अगले दिन 14 जनवरी 2025 को सुबह 3 बजकर 56 मिनट पर इसका समापन होगा। भागवत पुराण में वर्णित शाकंभरी देवी के बारे में कहा जाता है कि वे असुर दुर्गम द्वारा फैलाए गए भयंकर सूखे को रोकने के उद्देश्य से पृथ्वी पर अवतरित हुई थीं। ब्राह्मणों और पीड़ित प्राणियों की प्रार्थना के परिणामस्वरूप, शाकंभरी देवी संतुलन और समृद्धि को बहाल करने के इरादे से प्रकट हुईं। देवी मां ने वनस्पति उत्पादों की एक किस्म का निर्माण करके यह सुनिश्चित किया कि पृथ्वी पर सभी जीवित प्राणियों को पोषण मिले। इसी कारण देवी शाकंभरी को 'पोषण की देवी' कहा गया। देवी महात्म्य में उल्लेख है कि सौ साल के सूखे के बाद देवी दुर्गा शाकंभरी माता के रूप में प्रकट हुईं। सभी पौधे सूख गए थे और खाने के लिए कुछ भी नहीं था। शाकंभरी माता ने लोगों की भूख मिटाने के लिए अपने शरीर

से फल, फूल, सब्जियां और जड़ी-बूटियां उत्पन्न कीं। शाकंभरी पूर्णिमा आठ दिवसीय शाकंभरी नवरात्रि उत्सव का समापन है। शाकंभरी नवरात्रि अष्टमी को शुरू होती है और पूर्णिमा को समाप्त होती है, जबकि अन्य नवरात्रि उत्सव शुक्ल प्रतिपदा को शुरू होते हैं। शाकंभरी देवी के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करने के लिए भक्त शाकंभरी नवरात्रि के दौरान कई धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेते हैं। वे सुबह जल्दी उठते हैं, स्नान करते हैं और देवी की पूजा करते हैं। आरती की जाती है, देवी को फूल और मिठाई अर्पित की जाती है और दीये जलाए जाते हैं। शाकंभरी देवी का आशीर्वाद लेने के साथ, भक्त दुर्गा चालीसा का भी पाठ करते हैं। शाकंभरी देवी का सबसे प्रसिद्ध मंदिर उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले में स्थित है। शाकंभरी पूर्णिमा के दौरान बड़ी संख्या में भक्त देवी की कृपा पाने के लिए इस मंदिर में आते हैं। शाकंभरी माता की जयंती के उपलक्ष्य में एक भव्य मेला आयोजित किया जाता है, जिसमें पूरे देश से लाखों श्रद्धालु आते हैं। शाकंभरी नवरात्रि सहारनपुर के अलावा भारत के कई क्षेत्रों में मनाई जाती है। राजस्थान, कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के कुछ क्षेत्रों में भक्त बनशंकरी देवी सहित विभिन्न नामों से देवी की पूजा करते हैं। कर्नाटक के बादामी में बनशंकरी मंदिर में भक्त देवी की पूजा करने के लिए इकट्ठा होते हैं। शाकंभरी नवरात्रि के दौरान बड़ी संख्या में भक्त शाकंभरी देवी का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए उपवास रखते हैं। यह व्रत शरीर और मन को शुद्ध करके भक्तों को देवी की सकारात्मक और दिव्य ऊर्जा का अनुभव करने में सक्षम बनाता है। उपवास की प्रक्रिया सुबह जल्दी उठने के साथ शुरू होती है, जिसके बाद स्नान किया जाता है। भक्ति क्षेत्र को शुद्ध करने के बाद, देवता को गंगाजल चढ़ाया जाता है। प्रसाद, ताजे फल, सब्जियां और फूल पूजा स्थल में रखे जाते हैं। शाकंभरी देवी के आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए भक्त बनशंकरी मंत्र, प्रार्थनाएं और मंत्र पढ़ते हैं। सनातन धर्म में पूजा के संदर्भ में मंत्रों का बहुत महत्व है। ऐसा माना जाता है कि शाकंभरी देवी से जुड़े मंत्रों का जाप करने से आध्यात्मिक उन्नति और जातक का कल्याण होता है। शाकंभरी देवी की पूजा 'ॐ शाकंभरी-देव्यै नमः' के जाप के माध्यम से की जाती है, जो मुख्य मंत्र है, जिसका उपयोग देवी की कृपा प्राप्त करने के लिए किया जाता है। देवी शाकंभरी का नाम बाग्वनाी, फलों और हरी-भरी पत्तियों के प्रति उनके लगाव को दर्शाता है। पोषण की देवी के रूप में, वो सभी जीवों के लिए पर्याप्त मात्रा में पोषण देती हैं। कमल उनके ऊपरी दाहिने हाथ में है, जबकि रक्षा और सुरक्षा का प्रतिनिधित्व करने वाला धनुष और बाण उनके ऊपरी बाएं हाथ में है। फलों, सब्जियों, जड़ी-बूटियों और फूलों से देवी का श्रृंगार किया जाता है जो पोषण प्रदाता और वनस्पतियों के संरक्षक के रूप में उनकी दिव्य अनुभूति का प्रतीक है। शाकंभरी पूर्णिमा एक शुभ और आनंदमय अवसर है। इस दिन माता शाकंभरी की पूजा अर्चना के साथ, गंगा स्नान और दान पुण्य का विशेष महत्व है।

(लेखक इंडियन ओवरसीज बैंक में उपमहाप्रबंधक हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

नए दिन को देखने की कोशिश

संकलित
दर्शन

ओसो कहते हैं, हम वर्ष में कभी-कभी नए दिन को देखने की कोशिश करते हैं। जिसके पास ताजा मन हो, वह हर चीज को ताजी और नई कर लेता है। लेकिन ताजा मन हमारे पास नहीं है, तो हम चीजों को नया करते हैं। नए की खोज जरूर है मन में, होनी भी चाहिए। दो तरह की नए की खोज होती है। एक तो स्वयं को नया करने की खोज होती है। जो आदमी स्वयं को नया कर लेता है, उसके लिए कभी कोई चीज पुरानी होती ही नहीं। जो अपने मन को रोज नया कर लेता है, उसके लिए हर चीज रोज नई हो जाती है, क्योंकि वह आदमी रोज नया हो जाता है। जो अपने को नया नहीं कर पाता उसके लिए सब चीजें पुरानी ही होती हैं। दूसरे, लोग स्वयं को नया नहीं करते, बल्कि चीजों को नया करते हैं, इसलिए उनके लिए रोज नया नहीं होता, कभी-कभी नया होता है। दुनिया में दो तरह के लोग हैं- एक वे, जो अपने को नया करने का राज खोज लेते हैं। दूसरे वे, जो अपने को पुराना बनाए रखते हैं और चीजों को नया करने में लगे रहते हैं। इन्हें भौतिकतावादी कहना चाहिए, जो चीजों को नया करने की तलाश में है। भौतिकतावादी और अध्यात्मवादी में एक ही फर्क है। अध्यात्मवादी रोज अपने को नया करने की चिंता में संलग्न है। उसका कहना यह है कि अगर मैं नया हो गया तो इस जगत में मेरे लिए कुछ भी पुराना न रह जाएगा। क्योंकि, जब मैं ही नया हो गया तो पुराने का स्मरण करनेवाला भी नहीं बचा, पुराने को देखनेवाला भी नहीं बचा, हर चीज नई हो जाएगी।

विवेकानंद जब काली मां के पास गए

संकलित
प्रेरणा

विवेकानंद के जीवन में एक बहुत अद्भुत घटना घटी। एक बार उनकी मां बहुत बीमार थीं और मृत्युशैय्या पर थीं। विवेकानंद के पास पैसे नहीं थे कि वह अपनी मां के लिए दवा और खाना ला सकें। यह सोचकर उन्हें अपने पर बहुत गुस्सा आया कि वह अपनी बीमार मां का ध्यान भी नहीं रख सकते। वह रामकृष्ण के पास गए। उन्होंने रामकृष्ण से कहा, इन सारी फालतू चीजों, इस आध्यात्मिकता से मुझे क्या लाभ है। अगर मेरे पास कोई नौकरी होती तो मैं काम करता और अपनी मां का खयाल रख पाता। मैं उसे भोजन दे पाता। उसके लिए दवाई ला पाता। रामकृष्ण काली के उपासक थे। उनके घर में काली का मंदिर था। वह बोले, क्या तुम्हारी मां को दवा और भोजन की जरूरत है? जो भी तुम्हें चाहिए, वह तुम मां से क्यों नहीं मांगते? विवेकानंद को यह सुझाव पसंद आया और वह मंदिर में गए। एक घंटे बाद जब वह बाहर आए तो रामकृष्ण ने पूछा, क्या तुमने मां से अपनी मां के लिए भोजन, पैसा और बाकी चीजें मांगीं? विवेकानंद ने जवाब दिया, नहीं, मैं भूल गया।' रामकृष्ण बोले, 'फिर से अंदर जाओ और मांगो।' विवेकानंद फिर से मंदिर गए और चार घंटे बाद वापस लौटे। रामकृष्ण ने उनसे पूछा, 'क्या तुमने मां से मांगा?' विवेकानंद बोले, 'नहीं, मैं भूल गया।' रामकृष्ण फिर से बोले, 'फिर अंदर जाओ।' विवेकानंद लगभग आठ घंटे बाद बाहर आए। रामकृष्ण ने पूछा, 'क्या तुमने मां से वे चीजें मांगीं?' विवेकानंद बोले, 'नहीं, अब मैं नहीं मांगूंगा। मुझे मांगने की जरूरत नहीं है।' रामकृष्ण ने जवाब दिया, 'यह अच्छी बात है।

अंतर्मन

आज की पाती

शादियों में दिखावा गरीबों के लिए मुसीबत

हमारे देश में लोगों में दिखावे की भावना बहुत बढ़ गई है। लगभग हर त्योहार, सामाजिक और धार्मिक समारोहों में भी दिखावा किया जा रहा है। यह दिखावा हमारा आर्थिक नुकसान ही नहीं करवाता है, बल्कि हमारी मानसिक शांति भी भंग करता है, खास तौर पर उनके लिए यह दिखावा मुसीबत बनता है जो अपनी हैसियत से ज्यादा खर्चा करते हैं। त्योहारों के साथ-साथ अब शादियों का मौसम भी शुरू हो गया है। हमारे देश में शादी समारोह में भी फिजूलखर्ची लोक दिखावे के लिए होने लगी है। लोक दिखावे के लिए लोग अपने पैर चादर से बाहर भी पसार देते हैं। इसके कारण अनेक समस्याएं, गरीबी के सामने पैदा होती हैं। दिखावे की बढ़ती परंपरा पर रोक लगानी चाहिए। -मनहरण साहू, दुर्ग

ट्रेंड

विश्व के मार्गदर्शक स्वामी

सनातन संस्कृति को वैश्विक पटल पर पुनर्स्थापित करने वाले महान युवा तपस्वी, स्वामी विवेकानंद ने विश्व को यह दिखाया कि हिंदू धर्म मानवता का सच्चा मार्गदर्शक है। आइए, उनके विचारों को आत्मसात कर राष्ट्र निर्माण हेतु संकल्पित हों। -योगी आदित्यनाथ,सीएम, उप्र

हादसे की जिम्मेदार भाजपा

कन्नौज के तेलवे विभाग का हादसा भाजपा के नहा कारकार के नहा लापरवा के कारण हुआ है। जब सारे ठेके कमीशन लेकर दिए जाएंगे और ठेकेदार भी दिल्ली और वो ठेके पर ठेकर, आगा लाभ काम किए बिना कमाकर निकल जाएगा तो ठेके ही वर्ड क्वाल जाजनेवा निर्माण कार्य होंगे। -अखिलेश यादव, सपा सांसद

ग्लोबल कल्चरल डेस्टिनेशन

लदन स्थित अनिल अग्रवाल रिफ्लाइड स्टूडियोज आने वाले समय में न सिर्फ ग्लोबल कल्चरल डेस्टिनेशन सिद्ध होगा, बल्कि यह 'इंडिया-यूके' के रिश्तों का एक नया प्रतीक बन कर उभरेगा! -अनिल अग्रवाल, उद्योगपति

फिल्म खुद को खोजे

बर्लिन में 'मातृभूमि' की स्क्रीनिंग के दौरान दर्शकों से, जो अभी भी अपने आंसू पोंछ रहे थे, जैसे कहा 'एक डिरेक्टर के तौर पर मैं फिल्म नहीं बनाता। मैं एक फिल्म को खुद को खोजने की इजाजत देता हूं। -सेतन कपूर, फिल्मकार

करंट अफेयर

किसानों को मौसम संबंधी सलाह देने स्थायी ढांचा की योजना

केंद्र सरकार उन जिला कृषि मौसम विज्ञान इकाइयों (डीएएमयू) के कामकाज को जारी रखने के लिए एक स्थायी ढांचा स्थापित करना चाहती है जो पिछले साल बंद होने तक तदर्थ तरीके से काम कर रही थीं। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के सचिव एम. रविचंदन ने यह जानकारी दी। पिछले साल अगस्त में खबर दी थी कि सरकार का इरादा डीएएमयू को पुनर्जीवित करने का है, जो नीति आयोग की सिफारिशों के परिणामस्वरूप पिछले साल बंद होने से पहले लाखों किसानों को प्रखंड-स्तरीय मौसम संबंधी जानकारी प्रदान करती थीं। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय और कृषि मंत्रालय ने 'पायलट प्रोजेक्ट' के हिस्से के रूप में किसानों को मौसम की जानकारी प्रदान की। डीएएमयू में कृषि मौसम विज्ञानी विश्लेषण करते हैं कि मौसम की स्थिति फसलों को कैसे प्रभावित करेगी। उनकी प्राथमिक भूमिका किसानों को सलाह देना है। प्रणाली अच्छी तरह से काम करती है, लेकिन इसे तदर्थ नहीं रहना चाहिए, इसे स्थायी बनाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि सरकार इस अहम कार्य को पूरा करने के लिए एक ठोस ढांचा स्थापित करना चाहती है। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय ने डीएएमयू को पुनर्जीवित करने के महत्व के बारे में प्रधानमंत्री कार्यालय को भी लिखा है और इनके बंद होने से संबंधित चिंताओं को भी व्यक्त किया है।

ऑफ बीट

बाहर खाना खाने पर फूड पॉयजनिंग का डर ज्यादा

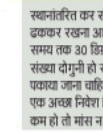

बाहर खाना खाते समय मैं शायद ही कभी खुले में खाना खाता हूँ - चाहे पिकनिक हो या बारबेक्यू - क्योंकि बाहर खाना खाने पर फूड पॉइजनिंग का खतरा बढ़ जाता है। भोजन खाते समय अपने हाथ साफ रखना बीमार न होने की कुंजी है, लेकिन पार्क या समुद्र तट पर आपको कितनी बार गर्म बहता पानी और साबुन मिलता है? आप अल्कोहल हैंड जैल का उपयोग कर सकते हैं (ये कुछ नहीं से बेहतर हैं), लेकिन ये सभी कीटाणुओं को नहीं मारते हैं। इसके अलावा, भोजन मक्खियों, ततैया और चींटियों जैसे उड़ने वाले और रेंगने वाले जीवों को आकर्षित करता है, जो आपके भोजन में ई कोली, साल्मोनेला और लिस्टेरिया सहित रोगाणुओं को स्थानांतरित कर सकते हैं। खराब हो सकने वाले भोजन को ठंडा और ढककर रखना आवश्यक है क्योंकि अगर भोजन को कुछ घंटों से अधिक समय तक 30 डिग्री सेल्सियस तक गर्म रहने दिया जाए तो कीटाणुओं की संख्या दोगुनी हो सकती है। बारबेक्यू के लिए, मांस को अच्छी तरह से पकाया जाना चाहिए, और खाद्य विषाक्तता से बचने के लिए मांस थर्मामीटर एक अच्छा निवेश है। यदि मांस का आंतरिक तापमान 70 डिग्री सेल्सियस से कम हो तो मांस न खाएं।

अपने विचार

हरिभूमि कार्यालय

टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-4242222, 23 पर या सीधे मेल से hbcgpati@gmail.com पर भेज सकते हैं।

सम्पादकीय

आपसी झगड़े में उलझा आईएनडीआईए गठबंधन की एकजुटता पर उठे सवाल

दिल्ली में विधानसभा चुनावों को लेकर जब आम आदमी पार्टी ने यह स्पष्ट किया कि वह अपने बलबूते चुनाव लड़ेगी तो आईएनडीआईए की खींचतान फिर से उभरती दिखने लगी थी। आप के जवाब में जब कांग्रेस के नेताओं ने अरविंद केजरीवाल पर गंभीर आरोप लगाने शुरू किए तो यह खींचतान चरम पर आती दिखी। अब तो दोनों एक-दूसरे के सामने हैं, लेकिन यह साफ दिख रहा है कि जहां केजरीवाल कांग्रेस पर जोर-शोर से हमलावर हैं, वहीं राहुल गांधी से लेकर मल्लिकार्जुन खरगे तक कांग्रेस के बड़े नेता उन्हें सीधा जवाब देने से परहेज कर रहे हैं। क्या इसका कारण गठबंधन को बिखरने से बचाना है? कारण जो भी हो, इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि आईएनडीआईए में शामिल आप राष्ट्रीय दल है। उसकी दिल्ली के साथ पंजाब में भी सरकार है। यह भी एक तथ्य है कि आप प्रमुख केजरीवाल प्रधानमंत्री बनने की महत्वाकांक्षा रखते हैं। वह अपने विरोधियों को जवाब देने और उन पर पलटवार करने में माहिर हैं। वह विरोधियों को कठघरे में खड़ा करने के लिए नए-नए मुद्दे लेकर सामने आते हैं और जरूरत के हिसाब से अपनी रणनीति भी बदल लेते हैं। इसके चलते उन्होंने अपनी छवि एक चतुर राजनेता की बना ली है। वह इस कोशिश में भी दिखते हैं कि वही भाजपा को बेहतर तरीके से चुनौती देने में सक्षम हैं। इसके विपरीत आईएनडीआईए की ओर से पीएम पद के प्रबल दावेदार माने जाने वाले राहुल गांधी घिसी-पिटी राजनीति करते दिखते हैं। शायद इसी कारण गठबंधन में शामिल अन्य दलों के नेता उनके नेतृत्व को चुनौती देते रहते हैं। यह ध्यान रहे कि तृणमूल कांग्रेस प्रमुख ममता बनर्जी गठबंधन का नेतृत्व करने के लिए अपनी दावेदारी पेश कर चुकी हैं। उनकी इस दावेदारी का समर्थन लालू यादव ने कर दिया था। आईएनडीआईए के घटकों के अन्य नेताओं ने भी ममता को गठबंधन का उपयुक्त नेता बताकर कांग्रेस की समस्या बढ़ा दी थी। इसी सिलसिले में समाजवादी पार्टी के नेता रामगोपाल यादव ने यह कहा था कि गठबंधन के नेता राहुल गांधी नहीं हैं। जब दिल्ली में आप और कांग्रेस के बीच तकरार को लेकर तेजस्वी यादव और कांग्रेस के कुछ नेताओं ने यह कहा कि आइएनडीआइए केवल लोकसभा चुनावों के लिए था तो उमर अब्दुल्ला ने कहा कि यदि ऐसा है तो गठबंधन को भंग कर देना चाहिए। उन्होंने यह भी शिकायत की कि गठबंधन में न तो नेतृत्व को लेकर स्पष्टता है और न ही नीति को लेकर। उन्होंने गठबंधन का कोई न्यूनतम साझा कार्यक्रम न होने की भी बात कही। उनकी बातों से असहमत नहीं हुआ जा सकता। जब आइएनडीआइए का गठन हुआ था तो उसका लक्ष्य लोकसभा चुनावों में भाजपा को हराना था। इस एक मात्र लक्ष्य के अलावा उसके पास कोई स्पष्ट दृष्टिकोण और यहां तक कि वैकल्पिक एजेंडा भी नहीं था। यह भी एक तथ्य है कि आईएनडीआईए पंजाब, केरल और बंगाल में मिलकर चुनाव नहीं लड़ सका था। लोकसभा चुनाव के बाद झारखंड और महाराष्ट्र में तो गठबंधन के घटकों ने मिलकर चुनाव लड़ा, लेकिन हरियाणा में वे ऐसा नहीं कर सके। जम्मू-कश्मीर में भी केवल कांग्रेस और नेशनल कांफ्रेंस ने ही मिलकर चुनाव लड़ा था। खास बात यह है कि गठबंधन के कुछ घटक और खासकर सपा एवं तृणमूल कांग्रेस दिल्ली में आप का साथ देने की बात कर रहे हैं। चूंकि कांग्रेस दिल्ली में लंबे समय तक सत्ता में रह चुकी है, इसलिए यह स्वाभाविक है कि वह यहां पूरी ताकत से चुनाव लड़ना चाह रही है। आप भी दिल्ली को अपना गढ़ मानकर अपनी राजनीतिक जमीन छोड़ने को तैयार नहीं।

आज का इतिहास

बढ़ता राजस्थान

13 जनवरी की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

- स्पेन में राष्ट्रीय दिवालिएपन की घोषणा के बाद 1607 में 'बैंक ऑफ जेनेवा' का पतन हुआ।
- इतालवी खगोलविद, भौतिकविद एवं गणितज्ञ गैलीली गैलिलियो ने 1610 में बृहस्पति के चौथे उपग्रह कैलिस्टो की खोज की।
- मुगल बादशाह बहादुर शाह जफ़र ने 1709 में अपने तीसरे भाई काम बख्श को हैदाराबाद में हराया।
- उदयपुर के राणा ने 1818 में मेवाड़ प्रांत की रक्षा के लिये ब्रिटिश सेना के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए।
- ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी की सेना के अधिकारी डॉ. विलियम ब्राइडन 1842 में 'आंग्ल अफ़गान युद्ध' में जिंदा बचे रहने वाले इकलौते ब्रिटिश सदस्य रहे।
- अंग्रजों और सिखों के बीच 1849 में चिलियनवाला में दूसरा युद्ध हुआ।
- असम में युवाओं ने 1889 में अपनी साहित्यिक पत्रिका 'जोनाकी का प्रकाशन शुरु किया।
- न्यूयॉर्क शहर में दुनिया का पहला सार्वजनिक रेडियो प्रसारण 1910 से प्रारम्भ हुआ।
- इटली के एक्वेजानो शहर में 1915 में आये विनाशकारी भूकंप में 30 हजार से अधिक लोग मारे गए।
- 1930 में पहली बार मिकी माउस कॉमिक स्ट्रिप का प्रकाशन हुआ।
- राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने हिन्दू-मुस्लिम एकता बनाये रखने के लिये 1948 में आमरण अनशन शुरू किया।
- टोगों के राष्ट्रपति सिलवेनस ओलिम्पियो की 1963 में एक सैनिक विद्रोह में हत्या कर दी गयी।
- भारत के पूर्वी राज्य पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता में 1964 में हिंदू और मुसलमानों के बीच भयानक सांप्रदायिक दंगे हुए। जिनमें करीब 200 लोग मारे गए और 300 से ज्यादा लोग घायल हुए।
- 1966 में अमेरिका ने नवादा में परमाणु परीक्षण किया।
- नासा ने 1978 में पहली अमेरिकन महिला अंतरिक्षयात्री का चयन किया।
- 1988 में चीन के राष्ट्रपति चिंग चियांग कुमो का निधन।
- 1995 में बेलारूस नाटो का 24वाँ सदस्य देश बना।
- परमाणु कार्यक्रम को लेकर 2006 में ईरान पर सैन्य आक्रमण से ब्रिटेन ने इन्कार किया।
- महिलाओं के प्रति भेदभाव दूर करने के लिए संयुक्त राष्ट्र का 37वाँ अधिवेशन 2007 में न्यूयार्क में शुरू।
- जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री फारुख़ अब्दुल्ला 2009 में नेशनल कांफ्रेंस के अध्यक्ष बनाए गए।

13 जनवरी को जन्मे व्यक्ति

- 1450 में जिस के जलमार्ग का प्रयोग करके ही वास्को डी गामा ने भारत के जलमार्ग की खोज की थी उस पुर्तगाल के नाविक बारथोलोमियु डेयाज़ का जन्म हुआ।
- 1896 में भारत के प्रसिद्ध कन्नड़ कवि और साहित्यकार दत्तात्रेय रामचन्द्र बेंद्रे का जन्म हुआ।

विशेष आलेख

रिटायर्ड अफ़सरों के बोझ तले दबा आरटीआई का ढाँचा

डॉ सत्यवान सौरभ

सेवानिवृत्त अधिकारी उन विभागों के खिलाफ निर्णय लेने में संकोच कर सकता है, जिनके लिए उन्होंने कभी काम किया था, जिससे समझौतापूर्ण फैसले होते हैं। पारदर्शिता में विशेषज्ञता की कमी एक बड़ा मुद्दा है। सेवानिवृत्त सिविल सेवकों में पारदर्शिता और जवाबदेही की कमी हो सकती है, जो आरटीआई अधिनियम का मूलभूत हिस्सा है। सेवानिवृत्त नौकरशाह वर्तमान सामाजिक मुद्दों से कटे हुए हो सकते हैं, जिससे सार्वजनिक शिकायतों को प्रभावी ढंग से सम्बोधित करने की उनकी क्षमता कम हो सकती है। प्रशासनिक पृष्ठभूमि से आने वाले सूचना आयुक्त समकालीन दृष्टिकोण से सूचना तक पहुँचने के बारे में जनता की चिंताओं को पूरी तरह से नहीं समझ सकते हैं। लंबे समय तक सरकारी सम्बद्धता वाले नौकरशाहों की नियुक्ति से जवाबदेही कम हो सकती है, क्योंकि उनके निर्णय सरकारी हितों के साथ संरेखित हो सकते हैं। विशिष्ट राजनीतिक दलों से सम्बंध रखने वाले नौकरशाह सरकारी निर्णयों को चुनौती देने में अनिच्छा दिखा सकते हैं, जिससे आरटीआई ढांचे की स्वतंत्रता कम हो सकती है।

भारत में सूचना आयुक्त के रूप में सेवानिवृत्त सिविल सेवकों के प्रभुत्व ने सूचना के अधिकार (आरटीआई) ढांचे की स्वतंत्रता और विविधता के बारे में चिंताएँ बढ़ा दी हैं। जबकि उनका अनुभव मूल्यवान हो सकता है, इस ने संभावित पूर्वाग्रहों और सीमित प्रतिनिधित्व पर बहस छेड़ दी है। इस तरह के प्रभुत्व के निहितार्थ और उम्मीदवारों के लिए पात्रता मानदंड को व्यापक बनाने के लिए सुधारों की आवश्यकता का पता लगाता है। आरटीआई ढांचे में स्वतंत्रता और विविधता के बारे में कई चिंताएँ हैं। सेवानिवृत्त सिविल सेवकों का प्रभुत्व एक संकीर्ण, एकरूप दृष्टिकोण बनाता है, जो निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में विविधता को कम करता है। सेवानिवृत्त नौकरशाहों को अक्सर प्रतिष्ठान का हिस्सा माना जाता है, जिससे सरकार की कार्रवाइयों को निष्पक्ष रूप से चुनौती देने की उनकी क्षमता सीमित हो जाती है। पूर्व सरकारी कर्मचारी अपने पूर्व सहयोगियों के प्रति पूर्वाग्रह प्रदर्शित कर सकते हैं, जिससे अपीलों को संभालने में निष्पक्षता कम हो सकती है। एक सेवानिवृत्त अधिकारी उन विभागों के खिलाफ निर्णय लेने में संकोच कर सकता है, जिनके लिए उन्होंने कभी काम किया था, जिससे समझौतापूर्ण फैसले होते हैं। पारदर्शिता में विशेषज्ञता की कमी एक बड़ा मुद्दा है। सेवानिवृत्त सिविल सेवकों में पारदर्शिता को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक विशेष ज्ञान की कमी हो सकती है, जो आरटीआई अधिनियम का मुख्य हिस्सा है। सेवानिवृत्त नौकरशाह वर्तमान सामाजिक मुद्दों से कटे हुए हो सकते हैं, जिससे सार्वजनिक शिकायतों को प्रभावी ढंग से सम्बोधित करने की उनकी क्षमता कम हो सकती है। प्रशासनिक पृष्ठभूमि से आने वाले सूचना आयुक्त समकालीन दृष्टिकोण से सूचना तक पहुँचने के बारे में जनता की चिंताओं को पूरी तरह से नहीं समझ सकते हैं। लंबे समय तक सरकारी सम्बद्धता वाले नौकरशाहों की नियुक्ति से जवाबदेही कम हो सकती है, क्योंकि उनके निर्णय सरकारी हितों के साथ संरेखित हो सकते हैं। विशिष्ट राजनीतिक दलों से सम्बंध रखने वाले नौकरशाह सरकारी निर्णयों को चुनौती देने में अनिच्छा दिखा सकते हैं, जिससे आरटीआई ढांचे की स्वतंत्रता कम हो सकती है। सेवानिवृत्त सिविल सेवकों के प्रभुत्व का प्रभाव पड़ता है। जब चयन पूल में विविधता का अभाव होता है, तो जनता आरटीआई ढांचे की तटस्थता में विश्वास खो सकती है। सीमित नए दृष्टिकोण वाले नौकरशाहों का प्रभुत्व अक्षमता में योगदान देता है, जिससे आरटीआई अपीलों के प्रसंस्करण में देरी बढ़ जाती है। सीआईसी के 23, 000 अपीलों का बैकलॉग बताता है कि नए दृष्टिकोण के बिना नौकरशाही नियुक्तियाँ नागरिक शिकायतों के समय पर समाधान में बाधा बन सकती हैं। नियुक्तियों में विविधता की कमी के परिणामस्वरूप समान पृष्ठभूमि वाले कुछ व्यक्तियों के हाथों में शक्ति केंद्रित हो जाती है। यह प्रभा नवीन विचारों या दृष्टिकोण में परिवर्तन को रोकती है जो आरटीआई अधिनियम की प्रभावकारिता में सुधार कर सकते हैं। विविध इनपुट के बिना, आरटीआई ढांचा आधुनिक आवश्यकताओं के अनुकूल होने में विफल हो सकता है, जिससे सुधार रुक सकते हैं जो इसे और अधिक प्रभावी बना सकते हैं। अगर लोगों को लगता है कि निर्णय पक्षपातपूर्ण हैं या पूर्व सरकारी अधिकारियों द्वारा प्रभावित हैं, तो वे आरटीआई प्रक्रिया से जुड़ने के लिए कम इच्छुक महसूस कर सकते हैं। योग्य उम्मीदवारों के पूल को व्यापक बनाने के लिए सुधारों की तत्काल आवश्यकता है। विभिन्न विशेषज्ञता वाले पेशेवरों को शामिल करने से निर्णय लेने में व्यापक दृष्टिकोण आएगा। यह आरटीआई ढांचे में विविध दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है। यूके जैसे देशों में, सूचना आयुक्त कानून, पत्रकारिता और शिक्षा जैसे पृष्ठभूमि से आते हैं, जो स्वतंत्रता और निष्पक्षता को बढ़ावा देते हैं। एक सार्वजनिक, पारदर्शी चयन प्रक्रिया निष्पक्षता को बढ़ावा देगी और सभी को सूचना आयुक्त की भूमिकाओं के लिए आवेदन करने का समान अवसर देगी। अमेरिका कई सरकारी निगरानी भूमिकाओं के लिए एक सार्वजनिक नामांकन प्रक्रिया का उपयोग करता है, जो उम्मीदवारों के चयन में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करता है। कार्यकाल सीमित करने और आयु प्रतिबंध लागू करने से नए दृष्टिकोण को बढ़ावा मिल सकता है और सूचना आयोगों के भीतर गतिशील नेतृत्व की अनुमति मिल सकती है। ऑस्ट्रेलिया जैसे कई राष्ट्र वरिष्ठ अधिकारियों के कार्यकाल को सीमित करते हैं ताकि दीर्घकालिक रूप से जड़ता से बचा जा सके और नए विचारों को प्रोत्साहित किया जा सके। नागरिक समाज के प्रतिनिधियों के साथ एक अधिक समावेशी दृष्टिकोण यह सुनिश्चित करने में मदद कर सकता है कि आरटीआई प्रणाली जनता की ज़रूरतों के प्रति उत्तरदायी है। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग में गैर-सरकारी संगठनों के सदस्य शामिल हैं, जो विविध दृष्टिकोणों के माध्यम से मानवाधिकारों के प्रति अपने दृष्टिकोण को मज़बूत करते हैं। आवेदनों के लिए आउटरीच और जागरूकता का विस्तार करना रिक्तियों को सक्रिय रूप से प्रचारित करना और आउटरीच कार्यक्रमों को बढ़ाना विभिन्न पेशेवर पृष्ठभूमि से उम्मीदवारों को आकर्षित करने में मदद करेगा।

यूजीसी का नया ड्राफ्ट-एक विवेचन

सुबेल कुमार मल्ला

यूजीसी ने उक्त को लेकर भी नियमों में बदलाव किया है। इन नियमों के तहत अब कुलपति को एक संस्थान में अधिकतम दो कार्यकाल ही मिलेंगे, जो पांच-पांच साल के होंगे। तलाशि, यह भी उल्लेखनीय है कि इस पद पर उन्हें सिर्फ चार साल की उम्र तक ही नियुक्त किया जाएगा। इस दौरान जो पहले समाप्त हो जाएगा, वह जुड़ेगा। यूजीसी ने अपने ड्राफ्ट में यह प्रस्ताव किया है यदि नए नियमों के तहत किसी भी संस्थान में कुलपति की तैनाती नहीं की जाएगी, तो उसे शून्य घोषित माना जाएगा। इसके अतिरिक्त, विश्वविद्यालयों सहित उच्च शिक्षण संस्थानों में बैठे प्रोफेसरों व नेट के सिर्फ मास्टर डिग्री करने वालों को भी असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर नियुक्ति देने की सिफारिश यूजीसी ने की है। जानकारी के अनुसार इसमें एआई, एमटेक जैसे डिग्री शामिल करने वाले शामिल होंगे।

5 वीं और 8 वीं कक्षाओं में 'नो डिटेंशन पालिसी' के खात्मे के साथ अब सरकार ने उच्च शिक्षा क्षेत्र में भी हाल ही में नये शैक्षणिक बदलाव करते हुए एक ड्राफ्ट जारी किया है। उल्लेखनीय है कि अब विश्वविद्यालयों में बिना नेट(नेशनल एलिजिबिलिटी टेस्ट) और पीएचडी के भी कुलपति बना जा सकेगा। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने विनिमय 2025 का ड्राफ्ट जारी किया है, जिसके अनुसार अब ऐसे कैंडिडेट्स भी कुलपति बन सकेंगे जिन्होंने नेट-पीएचडी नहीं किया है। दूसरे शब्दों में कहें तो अब कोई भी इंडस्ट्री, पब्लिक पॉलिसी, पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन या पब्लिक सेक्टर अंडरटेकिंग का शख्स वीसी बन सकता है(कुलपति ही नहीं, विश्वविद्यालयों सहित देशभर के उच्च शिक्षण संस्थानों में पढ़ाने वाले असिस्टेंट प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर व प्रोफेसर जैसे पदों पर भर्ती से जुड़े नियमों में भी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा बदलाव किया गया है। यह उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक नयाव और बड़ी पहल है। नायाब और बड़ी पहल इसलिए क्यों कि इससे जहां एक ओर विभिन्न विश्वविद्यालयों को बड़ी संख्या में दूरदर्शी, प्रशासनिक क्षमता रखने वाले विद्वान या यूं कहें कि लीडरशिप वाले कुलपति मिल सकेंगे, वहीं दूसरी ओर सरकार के इस निर्णय से उच्च शिक्षण संस्थाओं को भी असिस्टेंट प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर और प्रोफेसर मिल सकेंगे। पाठकों को बताता चलूं कि नए नियमों के अनुसार कुलपति के लिए अब दस साल का शिक्षण अनुभव अनिवार्य नहीं होगा। वर्तमान में सरकार द्वारा इसे समाप्त कर दिया गया है और कुलपति नियुक्ति नियमों को पहले से कहीं अधिक लचीला बनाया गया है। वर्तमान नियमों के अनुसार अब शिक्षण कार्य के साथ शोध, शैक्षणिक संस्थान, उद्योग व लोक प्रशासक आदि क्षेत्रों में भी दस साल का अनुभव रखने वाले कुलपति बनने के पात्र होंगे। यह भी गौरतलब है कि आयोग ने इसके साथ ही कुलपति के चयन से जुड़ी सर्च कमेटी में बदलाव की सिफारिश की है। इसमें यूजीसी के प्रतिनिधि भी अब अनिवार्य रूप से शामिल होंगे। गौरतलब है कि यूजीसी ने छह जनवरी को जारी भर्ती नियमों से जुड़े इस मसौदे को लेकर लोगों से पांच फरवरी तक सुझाव देने को कहा है। बहरहाल, कहना गलत नहीं होगा कि आज हमारे देश में विभिन्न क्षेत्रों में अनेक ऐसे विद्वान व विशेषज्ञ हैं जिन्होंने भले ही कभी किन्हीं महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में अध्यापन कार्य नहीं किया हो, लेकिन ऐसे लोगों ने विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञता और अनुभव लिए होते हैं। ऐसे में इन सभी लोगों को शिक्षा के क्षेत्र में शामिल होने का सुअवसर प्राप्त हो सकेगा और वे अनुभवों और विशेषज्ञता से शिक्षा के क्षेत्र में नवाचारों को जन्म देकर भारतीय शिक्षण क्षेत्र की नई ऊंचाइयों की ओर ले जा सकेंगे। अब तक कुलपतियों को दस साल का अनुभव न होने के कारण, अनेक विश्वविद्यालयों में कुलपति नियुक्ति में अनेक विश्वविद्यालयों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था। यह अत्यंत काबिले-तारीफ है कि यूजीसी ने नए नियमों में नेतृत्व क्षमता और प्रशासनिक कौशल को प्राथमिकता देने का निर्णय लिया है।

शख्सियत

बढ़ता राजस्थान

नमस्कार साथियों हमारी आज की शख्सियत कॉलम के स्टार हैं भारतीय पुलिस सेवा के वरिष्ठ अधिकारी रेंज आईजी बीकानेर श्री ओमप्रकाश सर। 24 दिसम्बर सन्1972 को बिहार के वैशाली में जन्में ओमप्रकाश एक बहुत ही शानदार घराने में परवरिश पाए हैं। बी.ए (ऑनर्स)संस्कृत की शिक्षा प्राप्त करने के बाद पत्रकार बने और जनता और प्रशासन के मध्य सेतु का काम किया इसके बाद पत्रकारिता छोड़कर पुलिस के अधिकारी बने। महानिरीक्षक पुलिस,बीकानेर रेन्ज बीकानेर पद को सुशोभित कर रहे हैं। इससे पूर्व महाप्रबन्धक,हरियाणा क्षेत्र, उपभोक्ता मामलात मंत्रालय, भारतीय खाद्य निगम पंचकुला। कमाण्डेन्ट 4जी बटालियन, आरएसी जयपुर। उप निदेशक,राजस्थालन पुलिस अकादमी जयपुर। पुलिस अधीक्षक, अलवर। पुलिस अधीक्षक, चूरू। पुलिस अधीक्षक, करौली। पुलिस अधीक्षक,बारां। पुलिस अधीक्षक, बूंदी। सहायक अधीक्षक पुलिस, वृत्त कोटा शहर (पूर्व)? एसवीपीएनपी हैदराबाद में प्रशिक्षण के तहत रहे। युवाओं को सही दिशाए दिखाकर समाज को नए रूप में प्रस्तुत करना इनके बेस्ट जॉब का एक हिस्सा है इनका मानना है कि युवाओं एनर्जी को सही दिशा में ले जाना एक बड़ी चुनौति के रूप में नजर आ रहा है। ऐसे में आईपीएस रेंज आईजी बीकानेर ओमप्रकाश सर कांचिंग या कॉलेजों में जाकर युवाओं को मोटिवेट करते हैं। शानदार अधिकारी के रूप में पूरा पुलिस महकमा इन्हें जानता है। दैनिक बढ़ता राजस्थान की टीम इनके उज्जवल भविष्य की कामना करती है।

श्री ओम प्रकाश
रेंज आईजी, बीकानेर
(आईपीएस)

रूपक शर्मा

2025_014

बढ़ता राजस्थान

Suduko

	9			5	2	3		
6			3		9	5		
5		3			4	2		
	7			9	8	1		
3					7	6	2	9
9				3				4
		6			3	8		5
8		5					3	
	3				6	4		2

Ans_2025_013

4	6	9	2	3	8	7	1	5
1	2	5	9	7	4	3	6	8
3	8	7	5	1	6	9	2	4
7	3	2	1	9	5	4	8	6
5	9	4	8	6	7	2	3	1
6	1	8	4	2	3	5	7	9
9	4	1	7	8	2	6	5	3
2	5	6	3	4	1	8	9	7
8	7	3	6	5	9	1	4	2

कैसे खेलें

वर्ग को 1 से 9 तक अंकों से ऐसे भरें कि आड़ी व खड़ी पंक्ति के साथ ही 3 गुणा 3 के बॉक्स में 1 से 9 तक अंक आएं। कोई अंक दुबारा नहीं आए।

आज का राशिफल

हमारे अनुभवी ज्योतिषियों की टीम के अनुसार आज कई विशिष्ट संयोगों की युति बनेगी। कहा जाता रहा है कि आपके सौभाग्य के ऐसे सौभाग्ये योग है, जब आपके जिंदगी बुलंद होगी और बुलंदी लाएगा, आपकी किस्मत बनी से आपकाम लगना शुरू। हम ने किसी हमारे ग्रहण में और भविष्य सूत्रों को सुलझाने वाला स्वाभावकाल उनमें को शामकुल बताते, बल्कि पहलाधिक संकेतों में भी, जहां एक लाभकारकता कहीं संतोष और बाधाओं में सफल प्रयास करेगा

मेष
स्वजनों एवं परिजनों के साथ विवाद हो सकता है। आय की अपेक्षा खर्च अधिक होगा और ज्यादा परिश्रम के बाद ही सफलता मिलेगी। दुर्घटना हो सकती है, सावधान रहें। आज आपका दिन बहुत लाभदायी है।

वृष
आपका शारीरिक एवं मानसिक आरोग्य अच्छा रहेगा। जरूरी कामों पर धन खर्च होगा। बीमार व्यक्तियों के स्वास्थ्य में सुधार होगा। शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। दफ्तर में सहकर्मियों का अच्छा साथ मिलेगा।

मिथुन
संतान पक्ष से अच्छे समाचार मिलेंगे। नौकरीपेशा लोगों से आपको लाभ होगा। आय में वृद्धि होगी। वैवाहिक सुख की अनुभूति होगी। आज का दिन आपके लिए अनुकूल है। आप आज हर काम सरलता से पूरे कर पाएंगे।

कर्क
आज आपके धार्मिक एवं मांगलिक कामों में व्यस्त रहने की संभावना ज्यादा रहेगी। आप में आज क्रोध की मात्रा अधिक रहेगी, इसलिए आप सावधान ही रहें। संतान एवं व्यापार की परेशानियों के कारण आपका मन अशांत रहेगा।

सिंह
हेल्थ का ध्यान रखने और खासकर बाहर के खाने-पीने से परहेज करने की सलाह आपको दी जाती है। आज आपमें क्रोध की मात्रा अधिक रहेगी, इसलिए वाणी में गुस्सा ना रखें। परिजनों से उग्र चर्चा के कारण मनमुटाव न हो।

कन्या
मित्र एवं प्रियजन आपके प्रवास को आनंद से भर देंगे। नए वस्त्रों की खरीदी के योग हैं। तन-मन की तंदुरस्ती अच्छी रहेगी। अच्छे भोजन एवं वैवाहिक सुख की अनुभूति होगी। आज आप के घर में सुख शांति और आनंद का माहौल रहेगा। आपका व्यवहार न्यायपूर्ण रहेगा।

तुला
नौकरी में आपके अधिकारी खुश रहेंगे। आपकी पदोन्नति के योग हैं। अधिकारियों के साथ किसी महत्वपूर्ण बात पर चर्चा होगा। परिजनों के साथ खुले मन से बातचीत होगी। घर के डेकोरेशन पर कुछ खर्च हो सकता है।

वृश्चिक
आप तन-मन से स्वस्थ होकर कई तरह के काम आसानी से पूरे कर पाएंगे। सफलता मिलने से आपके उत्साह में वृद्धि होगी। आज भाग्य आपका साथ देगा। इनकम बढ़ेगी। परिजनों के साथ आनंद एवं उल्लास से समय गुजरेगा।

धनु
पानी वाली जगहों से दूर रहें। आज धन का व्यय अधिक होगा। आज आपका दिन आनंद-प्रमोद में गुजरेगा। रोमांस के लिए आज का दिन अच्छा है और किसी खास व्यक्ति का साथ आपको आनंद देगा। आज कोई नया काम शुरू ना करें।

मकर
माता से लाभ होने के संकेत आपको मिल रहे हैं। मित्र और संबंधियों से घर का वातावरण अच्छा रहेगा। आज अचानक होने वाली घटनाओं से आप चिंतित रहेंगे। स्वास्थ्य खराब होने और आंखों में दर्द होने की आशंका बनी रहेगी।

कुंभ
अविवाहितों को योग्य जीवनसाथी मिलने के योग हैं। धन प्राप्ति के अवसर मिलेंगे। मित्रों से अचानक हुई मुलाकात आनंददायी रहेगी। मित्रों से लाभ होगा। आज आपको अच्छा खाना नसीब होगा। मित्रों से लाभ होगा।

मीन
बाहर जाना हो सकता है। माता के साथ संबंध अच्छे रहेंगे। सरकारी लाभ होगा एवं स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आज आप का दिन मध्यम फलदायी रहेगा। पहले से निर्धारित काम के लिए आपका प्रयास ज्यादा रहेगा। आज नियम विरुद्ध कामों से दूर रहें।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक श्रीमती कमलेश विजयवर्गीय द्वारा बढ़ता राजस्थान प्रिंटिंग प्रेस,हथीपाला रोड खण्डवा,निवाई रोड (राज.) से मुद्रित एवं 185/ 116 "प्रतीक्षा" सेक्टर-18, प्रताप नगर सांगानेर, जयपुर से प्रकाशित, संपादक-मनुजा पाठक" । प्रधान संपादक-तय विलास विजयवर्गीय मो. 9414242258, 9214048888,जयपुर फोन न.0141-2796794,795 टोंक कार्यालय-बाईपास निवाई, टोंक फोन न.01432-244881 निवाई 01438-222201,202,203 अलवर कार्यालय-मेहताब सिंह का नोहरा,अलवर मो. 7733000123,कोटा कार्यालय-छापनी मेन रोड,कोटा मो.9414823448 । ई मेल-badhatarajasthan@yahoo.com "पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार

कल्पमेधा

मनुष्य द्वारा किया गया अच्छा व्यवहार उसे ताकत देता है और दूसरों को उसी तरह से अच्छा व्यवहार करने के लिए प्रेरित करता है।

- प्लेटो

सर्दी का सितम

मौसम का अपना चक्र होता है और उसी के मुताबिक उसमें उतार-चढ़ाव होता रहता है। मुश्किल तब आती है जब उसकी मार से आम जनजीवन अस्त-व्यस्त होने लगता है और कई बार उसे संभालना एक समस्या बन जाती है। इस बार ठंड के मौसम की वजह से कई स्तर पर बाधाएं खड़ी हो रही हैं तो इसमें कुछ नया नहीं है। विडंबना यह है कि अमूमन हर वर्ष इस तरह की समस्याएं और चुनौतियां सामने आने के बावजूद उससे बचाव के उपायों पर गौर करने या उनका पूर्व इंतजाम करने को लेकर कोई ठोस पहलकदमी नहीं दिखती। नतीजतन, हर वर्ष ठंड के मौसम में लोगों का आम जीवन कई स्तर पर बाधित होता है। खासकर एक से दूसरी जगह आवाजाही व्यापक स्तर पर प्रभावित होती है। जबकि वक्त के साथ मौसम की मार का सामना करने और उसके घातक या नुकसानदेह असर को कम करने के उपायों को लेकर एक सुचिंतित योजना के साथ काम किया जा सकता है।

गौरतलब है कि इस वर्ष ठंड की शुरुआत के बावजूद ऐसी खबरें आती रहीं और अध्यवनों के मुताबिक यह भी बताया गया कि पिछला वर्ष अब तक का सबसे अधिक गर्म वर्ष रहा। मगर इसके समांतर इस वर्ष की ठंड अपने पूरे असर के साथ कई स्तर पर मुश्किलें पैदा करती दिख रही है। पिछले दो दिन दिल्ली और आसपास के इलाकों में जिस तरह घना कोहरा छाया रहा, हल्की बारिश हुई, उससे तापमान में और गिरावट आई और ठंड की वजह से बहुत सारे लोगों का सामान्य जीवन मुश्किल हुआ। दिल्ली हवाईअड्डे पर शुक्रवार को एक समय दृश्यता शून्य हो जाने के बाद सौ से ज्यादा विमानों की उड़ान में काफी विलंब हुआ। इसी तरह दो दर्जन से ज्यादा रेलगाड़ियां अपने निर्धारित समय से ज्यादा देर से चलीं। सड़कों पर भी आवाजाही बुरी तरह प्रभावित हुई और लोगों को काफी परेशानी झेलनी पड़ी। यों समूचा उत्तर भारत फिलहाल कड़ाके की ठंड की चपेट में है, लेकिन इस बार दिल्ली के अलावा पंजाब, हरियाणा और हिमाचल में स्थिति ज्यादा विकट देखी गई। पंजाब के फाजिल्का में सबसे ज्यादा ठंड दर्ज की गई, जहां का तापमान 2.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। इसके अलावा, मौसम विभाग ने हिमाचल प्रदेश के कई इलाकों में बारिश और बर्फबारी की आशंका जताई, जिसका असर निश्चित रूप से दिल्ली और आसपास के राज्यों पर पड़ेगा।

ऐसा नहीं कि ऐसे हालात पहली दफा पैदा हुए हैं, लेकिन हैरानी की बात है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के चरम विकास के दौर में भी हवाई, सड़क और रेल यात्रा में कोहरे की चुनौती से पार पाने के तरीकों तक आम लोगों की पहुंच नहीं है। मसलन, ठंड के मौसम में रेलगाड़ियों को कोहरा रोधी यंत्र से लैस करने को लेकर लंबे समय से कोशिश चल रही है, लेकिन आज भी हर साल इन दिनों कोहरे की वजह से सैकड़ों रेलगाड़ियां देरी से चलती हैं या फिर कई बार रद्द कर दी जाती हैं। सड़कों के किनारे या फुटपाथों पर खुले आसमान के नीचे जिंदगी गुजारने वालों के लिए सरकारी इंतजाम हर वर्ष कठघरे में होता है। कई बार मौसम में उतार-चढ़ाव के संबंध में पूर्वानुमानों को लेकर भी सटीकता में कमी होती है। सवाल है कि अगर तकनीकी प्रगति ने मौसम की मार से निपटने के उपाय निकाले हैं, तो विशेष स्थितियों में उनका सहारा लेकर जनजीवन को सामान्य बनाने या राहत देने में सरकारें टालमटोल का रवैया अख्तियार क्यों किए रहती हैं।

छीजता खजाना

विदेशी मुद्रा भंडार में गिरावट अर्थव्यवस्था के लिए अच्छा संकेत नहीं माना जाता। पिछले दो महीने से एक भी सप्ताह ऐसा नहीं गुजरा, जब भारतीय विदेशी मुद्रा भंडार में कमी दर्ज न की गई हो। इसके समांतर डालर के मुकाबले भारतीय रुपए की कीमत भी लगातार गिर रही है। रुपया छियासी के पार पहुंच गया है। इसकी मुख्य वजह अमेरिकी फेडरल की नीतियों में बदलाव, डालर की मजबूती और भारतीय बाजार से विदेशी निवेशकों की भारी निकासी बताई जा रही है। विशेषज्ञ बताते हैं कि सरकार ने रुपए की गिरती कीमत को रोकने के लिए विदेशी मुद्रा भंडार से निकासी शुरू की थी। मगर वह कारगर उपाय साबित नहीं हो सका। अब दोनों में समांतर गिरावट दर्ज होने लगी है। यह विदेशी निवेश आकर्षित करने, कर्ज पर ब्याज के भुगतान, जरूरी आयात आदि के मद्देनजर गंभीर चिंता का विषय है। रुपए की कीमत गिरने से आयात महंगा हो जाता है, पर्यटन, विदेशी शिक्षा आदि पर खर्च बढ़ जाता है। विदेशी मुद्रा भंडार में छीजन बढ़ने से विदेशी कर्ज के ब्याज में भुगतान को लेकर चिंता गहराने लगती है।

विदेशी मुद्रा भंडार में लगातार कमी इस बात का भी संकेत है कि अपेक्षित विदेशी निवेश नहीं आ पा रहा है। निवेशकों का भरोसा कमजोर हो रहा है, इसलिए वे सुरक्षित जगहों का रुख कर रहे हैं। ऐसा इसलिए भी हो रहा है कि भारतीय अर्थव्यवस्था में तेजी से बढ़ोतरी की जो तस्वीर पेश की जा रही थी, वह अब धुंधली पड़ने लगी है। प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रों की विकास दर नीचे बनी हुई है। विनिर्माण और सेवा क्षेत्र संघर्ष करते नजर आ रहे हैं। निर्माण क्षेत्र भी कमजोर होता जा रहा है। पिछले बारह-तेरह वर्षों से प्रति व्यक्ति आय में बढ़ोतरी नहीं हुई है। निर्यात लगातार हिचकोले खा रहा है और घरेलू बाजार में रौनक लौट नहीं पा रही। महंगाई पर काबू पाना कठिन बना हुआ है। इसके बावजूद, विचित्र है कि सरकारें मुफ्त की योजनाओं की घोषणा करने की होड़ में शामिल हैं। ये विदेशी कर्ज लेकर इन्हें चलाने का प्रयास कर रही हैं। यह असंतुलन खत्म हुए बिना विदेशी मुद्रा भंडार के भरने की उम्मीद नहीं की जा सकती।

विकास के सपने और हकीकत

हमारा सपना तो दुनिया की पांचवीं आर्थिक महाशक्ति से आगे बढ़ कर तीसरी आर्थिक महाशक्ति बनना है। मगर नवंबर 2024 कहता बीत गया कि कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस के उत्पादन में कमी आई है।

सुरेश सेठ

भारतवासियों ने बड़ी उम्मीद के साथ इस नए वर्ष का स्वागत किया है। सत्ता ने उन्हें बताया है कि दुनिया में आज भारत का सानी नहीं। अंतरिक्ष से लेकर अर्थव्यवस्था तक इसका डंका बज रहा है। कहा जा रहा है कि भारत अपने अतीत को भविष्य में बदल देगा। यानी वह विश्वगुरु था और अब फिर बन जाएगा। वैसे भी अब 'जय जवान जय किसान' से 'जय अनुसंधान' हो गया है। देश तेजी से आत्मनिर्भर हो रहा है। अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत का महत्त्व इतना बढ़ गया है कि उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। मगर अपना प्रशस्ति गान करने के इस दंभ में कुछ चुनौतियां भी देश की अर्थव्यवस्था के सामने खड़ी हो गई हैं। वे पहले से शुरू हो गई थीं और सिंहासन मंत्रीय भाषणों और दावों के, इन समस्याओं को हल करने का कभी गंभीर प्रयास नहीं किया गया। भूख मिटाने की गारंटी तो दे दी, लेकिन देश के बेकार हाथों को काम देने की गारंटी नहीं दी। देश को आत्मनिर्भर बनाने की बात कही गई, लेकिन उसके लिए कच्चे माल और ऊर्जा स्रोतों का सृजन भारत में नहीं हुआ।

देश में आजादी का अमृत महोत्सव मनाया गया। महोत्सव के बाद घोषणा हुई कि अब त्वरित गति से पूंजी निर्माण होगा। इसके साथ ही देश में बुनियादी उद्योगों की ऐसी नींव डाली जाएगी कि फुटकर उद्योगों को अपना रास्ता पकड़ने में कठिनाई नहीं होगी। दुनिया में भारत की आबादी सभी देशों से अधिक हो गई है। इस आबादी को काम देने के लिए सहकारी आंदोलन को नया जीवन देने की घोषणा संसद में बार-बार होती रही। मगर अभी तक यह सहकारी आंदोलन अपने पुराने भ्रष्टाचारों के आतंक से बाहर नहीं आ सका है। बार-बार एक लाख नौजवानों को राजनीति में लाने की बात हुई, लेकिन नजर आया कि देश की रगों में नए रुधिर के नाम पर परिवारवाद ही प्रोत्साहित हो रहा है।

आज नए वर्ष की एक सार्थक शुरुआत करने की बात कहनी हो, तो हमें देश के बुनियादी उद्योगों का सबल विकास, नींव के रूप में बनाने पर चर्चा करनी चाहिए, लेकिन पहला सवाल यही है कि बीते नवंबर में देश के आठ बुनियादी उद्योगों में उत्पादन धीमा कैसे हो गया! आधिकारिक आंकड़े कहते हैं कि यह 4.3 फीसद रहा। एक साल पहले यह 7.9 फीसद था। ऐसा क्यों हुआ? क्योंकि हमारा सपना तो दुनिया की पांचवीं आर्थिक महाशक्ति से आगे बढ़ कर तीसरी आर्थिक महाशक्ति बनना है। मगर नवंबर 2024 कहता बीत गया कि कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस के उत्पादन में कमी आई है। कोयला, रिफाइनरी उत्पाद, उर्वरक, इस्पात और बिजली के उत्पादन में वृद्धि के बजाय कमी नजर आने लगी है। सबसे अधिक कमी कोयला उत्पादन में आई है, कोई 7.5 फीसद। जबकि वैकल्पिक ऊर्जा स्रोत के रूप में सौर ऊर्जा की बहुत बातें होती हैं। इसके उपयोग के लिए तैयार होने वालों के लिए कुछ प्रोत्साहन भी घोषित किए गए हैं, लेकिन इस देश में लोग आज भी कोयले को ही ताप और ऊर्जा का बड़ा साधन मानते हैं।

जब इन मूल उद्योगों के उत्पादन की ओर पिछले वर्ष के आंकड़ों को जांचते हैं, तो पाते हैं कि तुलनात्मक ढंग से आज की तुलना में तब इन सभी बुनियादी उद्योगों में विकास की गति अधिक थी। सबसे अधिक चिंता की बात यह है कि इस वर्ष अप्रैल-नवंबर के दौरान बुनियादी ढांचे की वृद्धि दर 4.2 फीसद रही। जबकि पिछले वित्तवर्ष में यह 8.7 फीसद थी। बुनियादी ढांचे के विकास को इतनी बड़ी ठोकर क्यों लगी? इसका कारण है कि निवेशक और उद्योगपति अपने हर निवेश से त्वरित लाभ की आशा करते हैं, लेकिन देश का बुनियादी ढांचा तो केवल भावी उत्पादन का आधार बनता है। देश के विकास का ठोस धरातल बनता है। इसलिए तत्काल लाभ न मिलने की वास्तविकता के कारण निजी निवेशक इस ओर पैसा नहीं लगाना चाहते। वादे के बावजूद सरकार पूंजी निर्माण और बुनियादी उद्योगों के विकास के लिए अतिरिक्त राशि नहीं निकाल पाती। जहां तक अनुसंधान का संबंध है, हमने 'जय अनुसंधान' तो कह दिया, लेकिन दूसरी महाशक्तियों के मुकाबले हमारा अनुसंधान के लिए व्यय उनसे तीन-चार गुना कम है। इसके लिए गंभीर प्रयास भी नजर नहीं आते। अंततः इसका प्रभाव अंतरराष्ट्रीय व्यापार में देश की साख पर पड़ता है।

> **भारत कार्य व्यापार के दावों को सहज करने के बावजूद नौकरशाही और लालफीताशाही की नाक में नकेल नहीं डाल सका। अंतरराष्ट्रीय सर्वेक्षक बताते हैं कि सुधार के दावे तो बहुत किए गए, लेकिन उत्पादन के हर चरण पर इजाजत का ऐसा चक्रव्यूह व्यापारियों को झेलना पड़ता था कि उन्होंने भी उन देशों का रुख करना शुरू कर दिया, जहां नियम कायदों का यह तंत्र जाल नहीं था। तंत्र के हर मोड़ पर भ्रष्ट अधिकारी अपना मुंह खोले बैठे थे। नया युग लाना है, लेकिन उसकी सबसे बड़ी दुविधा यही है कि हमारी मुद्रा डालर के मुकाबले लगातार गिरती जा रही है और हमारे स्वर्ण भंडार का क्षरण हो रहा है।**

हम अपने दवा उत्पादन क्षेत्र पर बहुत गर्वित होते रहे हैं। जब कई दावों के बाद दुनिया में दवाओं और अन्य संबंधित वस्तुओं का निर्यात बढ़ा, तो पता चला कि यहां स्तरहीन दवाओं का निर्माण हो रहा है। नकली दवाएं भी खूब बन रहीं। बाद में देश को मिले निर्यात के आदेश निरस्त होने लगे। दवाएं वापस आकर देश के निर्यात आधारित अर्थव्यवस्था बनने के सपनों को झुठलाने लगीं। केवल दवाएं ही क्यों, हमने जो माल इस देश से निर्यात किया, वह अधिक लागत वाला माना गया। इसके लिए विदेशों से निर्यात के वो आदेश हमें नहीं मिले, जिसकी हमें उम्मीद थी। अधिकतर पैसा तेजी से विकसित होते कुछ देशों की ओर चला गया। आप देखिए कि दुबई में भारतीयों ने कितना पैसा लगाया है, क्योंकि वहां व्यापार की सहजता और सुलभता है। ऐसा तीसरी दुनिया के अन्य कई देशों में भी है।

भारत कार्य व्यापार के दावों को सहज करने के बावजूद नौकरशाही और लालफीताशाही की नाक में नकेल नहीं डाल सका। अंतरराष्ट्रीय सर्वेक्षक बताते हैं कि सुधार के दावे तो बहुत किए गए, लेकिन उत्पादन के हर चरण पर इजाजत का ऐसा चक्रव्यूह व्यापारियों को झेलना पड़ता था कि उन्होंने भी उन देशों का रुख करना शुरू कर दिया, जहां नियम कायदों का यह तंत्र जाल नहीं था। तंत्र के हर मोड़ पर भ्रष्ट अधिकारी अपना मुंह खोले बैठे थे। नया युग लाना है, लेकिन उसकी सबसे बड़ी दुविधा यही है कि हमारी मुद्रा डालर के मुकाबले लगातार गिरती जा रही है और हमारे स्वर्ण भंडार का क्षरण हो रहा है। इस समय डालर के मुकाबले रुपया 86 रुपए प्रति डालर से ऊपर चला गया है। इस गिरावट को थामने के लिए हम वैकल्पिक मुद्रा भी प्रयोग नहीं कर सकते, जैसा ब्रिक्स सम्मेलन के दौरान सोचा गया था।

दूसरी ओर, बचत के पारंपरिक तरीके सोने की तेजी को छू नहीं पा रहे। चांदी भी लगातार तेज हो रही है। देश में आर्थिक सुरक्षा के लिए सोने का संग्रह करना पुरानी रिवायत है। सोने के पीछे बौराई जनता उसे इस नए आर्थिक वर्ष में 90 हजार रुपए प्रति तोला तक ले जा सकती है। अभी यह अस्सी हजार पार करने को बेताब है। यह न भूलें कि सोने का अपने देश में उत्पादन बहुत कम है। मुख्यतः सोना भी आयात किया जाता है। अब अगर आर्थिक सुरक्षा की तलाश में देशवासी सोने-चांदी जमा करने के लिए भागते हैं, तो अंदाजा लगाइए कि इन मूल्यवान धातुओं के आयात से हमारी आयात व्यवस्था कैसे गड़बड़ा जाएगी और जिस देश को हम निर्यात आधारित अर्थव्यवस्था बनाने की बार-बार घोषणा करते हैं, क्या यह घोषणा मात्र एक सपना ही रहेगी?

आहार की ऊर्जा

अनिल त्रिवेदी

जीव-जगत और जीवन इनके आसपास ही तमाम विचार, मत और मतांतर जन्म लेते हैं, विस्तारित होते रहते हैं और विविध रूप-स्वरूपों में दुनिया के लोक मानस में दर्ज हो जाते हैं। ये विविध विचार और मत-मतांतर निरंतर कालक्रम के अनुसार लोक मानस की स्मृतियों में उदित या अस्त होते ही रहते हैं। जगत में व्याप्त अनेक मत-मतांतर में गहराई से झांकने से यह बात एकदम समझ आने लगती है कि अलग-अलग मनुष्य अपने आसपास को कैसे देखते, सोचते और समझते हैं। इसका ज्ञान स्वयं को और दूसरों को या समूची दुनिया जहान को भी होता ही रहता है। यों मत या राय भी एक विचार ही है और मतांतर भी विचार से अलहदा एक और विचार ही है। किसी भी जीव को जीवन को ऊर्जावान बनाए रखने के लिए नियमित आहार की जरूरत अनुसार निरंतर मिलते रहना जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है।

मनुष्य और मनुष्येतर जीव की आहार प्रक्रिया में भोजन की प्राकृतिक शृंखला एक समान है। जलचर, नभचर और थलचर- तीनों श्रेणी के जीव अपनी प्राकृतिक आहार शृंखला पर ही मूलतः निर्भर हैं। इसके बावजूद मनुष्य समाज ने आहार शृंखला में इतने अधिक मत मतांतरों की रचना की है, वह मनुष्यों के आहार क्रम के इतिहास का एक अलग और अनोखा आयाम है। मनुष्येतर जीव, जो स्वतंत्र हैं, उनका जीवन प्रकृति में जो भी उनकी आहार शृंखला के रूप में उस जगह उपलब्ध है, कमोबेश उसी पर उनके समूचे जीवनकाल में आहार की प्राकृतिक निर्भरता चलती रहती है। अगर कोई जीव मनुष्य का पालतु साथी सहयोगी है तो पालनकर्ता मनुष्य, जो आहार उन्हें खिलाता है, उसी पर उन्हें निर्भर होना होता है। पर दुनिया भर के मनुष्य अपने आहार को लेकर कभी संतुष्ट नहीं होते हैं। साथ ही दूसरे मनुष्य के खान-पान, रहन-सहन पर अनेक प्रकार के सवाल मनुष्यों में हर समय बिना रुके और सोचे-समझे अंतहीन विध्वंसक या अनर्गल टीका-टिप्पणियां जाने अनजाने चलती रहती हैं। इसके उलट या अलावा कुछ न कुछ नया करने और खोजते रहने की एक अंतहीन और अनोखी शृंखला भी मानवीय चिंतन प्रक्रिया में साफ दिखाई पड़ती है।

> **दुनिया मेरे आगे**
>
> **मनुष्य की आहार प्रक्रिया में ऐसा भी कुछ नहीं है कि हमेशा वह भूख लगने पर ही खाएगा। वह कभी भी और कहीं भी खा सकता है। यही बात सोचने-समझने और दूसरों की जिंदगी में हस्तक्षेप करने को लेकर भी है। इसी तरह मनुष्य अपने भोजन को लेकर कभी भी स्थिरचित्त नहीं रह पाता है।**

मनुष्य एक तरह से अपनी अनियंत्रित मनमर्जी का मालिक है। मनुष्य अकेला ऐसा प्राणी है जो अकेले अपने पोषण के लिए ही महज आहार नहीं करता, अपनी रुचि, स्वाद और हैसियत के आधार पर भी स्वयं का आहार तय करता है और मन को संतुष्ट करने के लिए भी आहार ग्रहण करता है। मनुष्य की आहार प्रक्रिया में ऐसा भी कुछ नहीं है कि हमेशा वह भूख लगने पर ही खाएगा। वह कभी भी और कहीं भी खा सकता है। यही बात सोचने-समझने और दूसरों की जिंदगी में हस्तक्षेप करने को लेकर भी है। इसी तरह मनुष्य अपने भोजन को लेकर कभी भी स्थिरचित्त नहीं रह पाता है। जब जो इच्छा हो, तब वह खा सकता है। इच्छा न हो तो भी कोई खाने की वस्तु दिखाई दी कि खाने का मन हो गया और उसे खाने लगा। इसी से मनुष्य से भिन्न जीवों के जीवन और आहार प्रभाव में एक तरह की जैसी एकरूपता दिखाई देती है, वैसी मनुष्यों के रहन-सहन और जीवन में नहीं मिलती है। शायद यही वजह है कि मनुष्य समाज ने अपने जीवन क्रम में आहार को लेकर इतने गहरे और व्यापक रूप-स्वरूप में चिंतन-मनन और मत-मतांतरों सहित सैद्धांतिक मतभेदों के विभिन्न शास्त्रों का सृजन किया है, जिसके फलस्वरूप आहार शास्त्रियों और आहार शास्त्र का एक अंतहीन सिलसिला खड़ा हो गया है, जो अपने-अपने सैद्धांतिक मतभेदों को लेकर आपस में अकारण सैद्धांतिक मोहवश शाब्दिक युद्ध करता रहता है।

आहार मनुष्य समाज का एक अनोखा और रोचक जीवन दर्शन बन गया है। मूल रूप से जीव जगत शाकाहारी और मांसाहारी- दो रूप-स्वरूप में बंटा हुआ है। पर मनुष्य ने शाकाहार और मांसाहार में इतनी अधिक विविधताओं और व्यापक स्तर पर आहारजन्य विविधताओं को सृजनात्मक और विध्वंसात्मक रूप से विकसित किया है, जिसे देखकर लगता है कि आहार मनुष्य की प्राकृतिक क्षुधा की संतुष्टि के लिए है या सृजनात्मक शक्ति की भूख को शांत करने के लिए है। शाकाहार और मांसाहार, दोनों में जैव विविधता अंतहीन है। मनुष्य के पेट की क्षमता तो सीमित है, पर उसके मन की क्षमता अनंत है। इसी से मनुष्य ने अपने आहार को लेकर एक से एक बढ़कर विविधता वाले अनोखे आहारों के खाने, पकाने और खिलाने को लेकर शास्त्र को रच दिया। मनुष्य सरलता को सहजता से आत्मसात नहीं कर पाता, इसी से मनुष्य की आहार प्रक्रिया दिनोंदिन जटिलताओं को अपनाने की दिशा में आसार होती दिखाई देती है।

आहार जीवन की अनिवार्य ऊर्जा का मूल स्रोत है। आहार के बिना जीवन की गति धीमी हो जाती है और आहार की अति या कमी से भी जीवन का प्राकृतिक स्वरूप बदलने लगता है। आहार जो जीवन की अनिवार्य ऊर्जा है, वह उस रूप में तो है, पर मनुष्य के मन की अंतहीन हलचलों के कारण केवल जीवन का प्रवाह ही नहीं, दुनिया भर में आहार सबसे बड़ा व्यापार-व्यवसाय की हलचल और रोजगार बनकर एक अंतहीन गतिविधियों का ऐसा क्रम बन गया है जो जीवन भर चलता रहता है और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को नए-नए प्रयोग करने के लिए आधारभूमि उपलब्ध करा देता है। आहार के लिए उपलब्ध प्राकृतिक शृंखला और मनुष्य निर्मित आहार का व्यापार व्यवसाय प्रकृति और मनुष्य के कृतित्व की अनोखी जुगलबंदी बनकर तारक-मारक और उद्धारक क्षमताओं का त्रिवेणी संगम बन गया है। सवाल यह उठता है कि आहार जीवन की महज मूल ऊर्जा का स्रोत है या जीवन का प्राकृतिक प्रवाह है, जो जीव-जगत, वनस्पति और जीवन में अनवरत प्रवाहित होता रहता है।

अर्थव्यवस्था में नवाचार

नवाचार भारतीय अर्थव्यवस्था का यह नया चेहरा है, जो न केवल विकास की गति को तेज कर रहा है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भारत की प्रतिष्ठा को भी नए आयाम दे रहा है। हालांकि नवाचार की वर्तमान प्रवृत्ति शहरी केंद्रों तक सीमित है। ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में इसका प्रभाव सीमित है, जो आर्थिक असमानता को और गहरा करता है। स्थानीय स्तर पर उद्योगों को सशक्त करने के लिए तकनीकी और वित्तीय संसाधनों को वहां तक पहुंचाने की आवश्यकता है। इसके लिए सरकार और निजी क्षेत्र को मिल कर इन क्षेत्रों में नवाचार केंद्र और तकनीकी प्रशिक्षण संस्थान स्थापित करने होंगे। दूसरा बड़ा मुद्दा शिक्षा प्रणाली का है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली रटने और डिग्री पर केंद्रित है, जो व्यावसायिक और तकनीकी कौशल विकास पर जोर नहीं देती। तीसरा और सबसे अहम पहलू वित्तीय पारदर्शिता है। आज अधिकांश छोटे व्यवसाय और नवउद्यम जटिल वित्तीय प्रक्रियाओं के कारण संघर्ष कर रहे हैं। इसलिए बैंकों और सरकारी योजनाओं को सरल और सुलभ बनाने की जरूरत है।

- अवनीश कुमार गुप्ता, आजमगढ़

संवेदनहीनता की अति

'उदासीनता का रुख' (संपादकीय, 10 जनवरी) में शंभू और खनौरी की सीमाओं पर संघर्ष कर रहे किसानों के प्रति सरकार की उपेक्षा की बात बहुत सही है। अब इसमें कोई संदेह नहीं कि सरकार कुछ जरूरी मुद्दों को अनदेखा करने की हठधर्मिता किसी हालत में छोड़ने को तैयार नहीं। गण्पिपुर को लेकर केंद्र सरकार का ऐसा ही रुख दिखता रहा। पिछली बार तीन कृषि कानून वापस लेते समय प्रधानमंत्री ने अपनी सरकार की तपस्या वाली बात कही थी। एक साल से ज्यादा दिल्ली की सीमाओं पर किसानों ने जो सहा, उनके लिए उसका कोई अर्थ ही नहीं था। आज किसान नेता डल्लेवाल का अनशन भी कोई महत्त्व नहीं रखता। कृषि मंडी का रवैया समझ से बाहर है। हर संकट में जो छोटा-सा राज्य पूरे देश का पेट भरता रहा, वहां के किसानों के प्रति सत्ता के इस नजरिए को संवेदनहीनता की पराकाष्ठा ही कहा जा सकता है। टालमटोल का यह खेल न जाने हमारे कितने अन्नदाताओं की बलि लेता रहेगा?

- शोभना विज, पटियाला, पंजाब

भगोड़ों पर नजर

केंद्रीय गृहमंत्री ने कहा है कि समय आ गया है कि देश फरार भगोड़ों को पकड़ने और उन्हें न्याय के कठघरे में लाने के लिए आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल करे। केंद्रीय जांच ब्यूरो द्वारा विकसित 'भारतपोल पोर्टल' जारी करते हुए उन्होंने कहा कि इससे देश की हर जांच एजंसी और पुलिस बल सरलता से इंटरपोल के साथ जुड़ कर जांच को रफ्तार दे सकेंगे। हथियारों, मादक पदार्थों एवं मानव तस्करी और सीमापार से तथा आतंकवाद के खिलाफ भारतपोल पोर्टल व्यवस्था को सहायक बताया जा रहा है। भारतपोल के पांच प्रमुख प्राकृप कानून प्रवर्तन एजंसियों के लिए तकनीकी रूप से मददगार साबित होंगे। यही नहीं 195 देशों के इंटरपोल से ब्राडकास्ट के जरिए सीधे जुड़ने से दस्तावेज और जरूरी जानकारियों का लेन-देन आसान हो जाएगा। मगर कड़े कानूनों का लाभ तभी है, जब विदेश में छिपे अपराधियों की धर-पकड़ हो।

- अंकित रजक, दतिया

हिंदी की राह

हिंदी दुनिया की तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। प्रत्येक वर्ष हिंदी दिवस और हिंदी पखवाड़ा मनाया जाता है। इसे बढ़ावा देने के लिए इंजीनियरिंग और मेडिकल की शिक्षा भी हिंदी में शुरू हुई है, भले ही इसमें कई परेशानियां सामने आ रही हैं। आज हिंदी विश्व में अपनी पहचान बना चुकी है। मगर हिंदी में कोई कितना भी होशियार हो, अंग्रेजी उसकी काबिलियत पर प्रश्नचिह्न लगा ही देती है। दरअसल, जिस तरह से हिंदी का विस्तार होना चाहिए था, वह नहीं हुआ। हिंदी के साहित्यकार इसके लिए संघर्ष करते रहे हैं। संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में लंबे समय तक हिंदी भाषा की उपेक्षा होती रही है। इसके लिए विश्व का सबसे बड़ा धरना आयोग के बाहर दिया गया था। जिसे अटल बिहारी वाजपेयी ने संबोधित किया था। तब हिंदी के लिए सड़क से संसद तक गूंज सुनाई दी थी। ऐसी ही गूंज फिर उठनी चाहिए।

- मीना धानिया, सिरसपुर